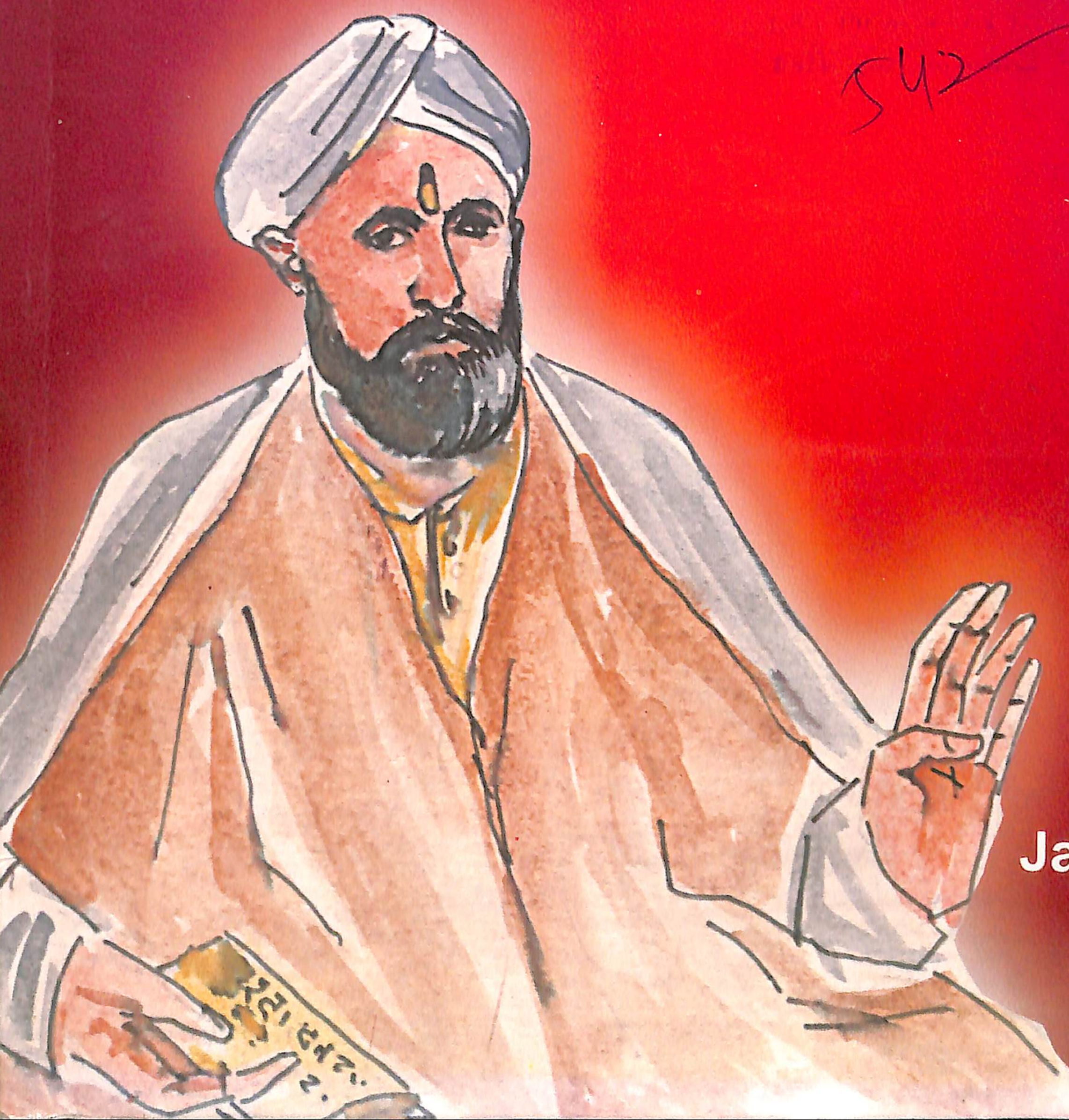
# Krishnajoo Razdan स्मारिका

150th
Birth Anniversary Celebrations

SOUVENIR



Jammu - Kashmir
Vichar Manch
New Delhi

# Where everyone lives happily ever after.



Discover happiness at DLF City. Asia's largest private sector township spread over 3000 acres. That's already home to a large number of families. Where you'll find modern amenities like shopping malls, schools, hospitals, food courts and entertainment arcades... all within walking distance. No wonder then, you see so many smiling faces in DLF City.



For further information contact: DLF Universal Limited, DLF Centre, Sansad Marg, New Delhi 110 001
Tel: 3719300, 3719320 Fax: 3719212, 3719344 Website: www.dlf-group.com

DLF city
It's where the world is moving to!

WITH BEST COMPLIMENTS
FROM

TRIBHOVANDAS
BHIMJI ZAVERI
( D E L H I )
PVT. LTD.

2, SCINDIA HOUSE, JANPATH, NEW DELHI-110001
TEL. : 23313435, 23313436 Grams : BARGOLD

WITH BEST



R·O·M·A·N·O

CERAMIC TILES
FOR FLOORS & WALLS

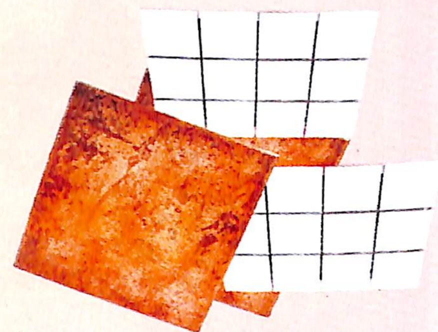
ANANT RAJ INDUSTRIES LIMITED

"ARA Centre", E-2, Jhandewalan Extension, New Delhi-110055

Tel. : 23670330, 23670876, 23541940, 23610273
Fax : 23633326, E-mail : anantraj@del2.vsnl.net.in

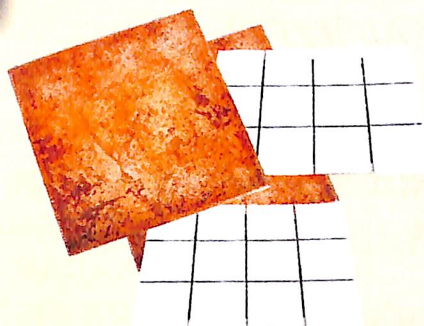
Regd Office & Factory : Village Bhudla, Po.- Sangwari,
Distt.-Rewari, Haryana.Tel. : 255180, Fax : (01274) 254086

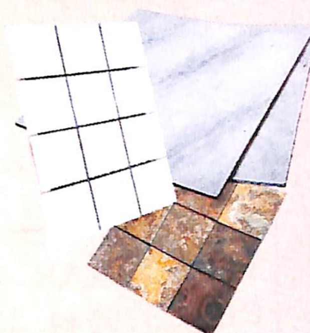
# COMPLIMENTS FROM

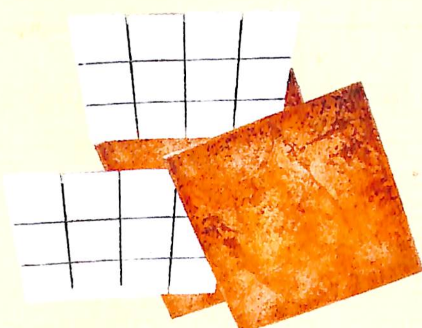


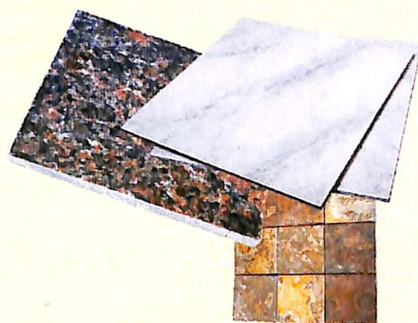














## Authorised Distributors/Dealers :

Delhi : Gupta Bros : 5718320; Chandigarh : 5901734; Jammu : Mahajan & Co. : 430920; Gurgaon : Bath Selection : 6355390; Indore : Vishel India Distributors; Mumbai : K.K. Ceramics: 8803458; Pune : Rangoli Ceramics : 7439792; Kothapur : 4373299; Ahmedabad : Sri Patel Sanitary : 6734833; Surat : Dhanush Ceramics : 7439792; Kothapur : S.B. Hardware : 527824; Hyderabad : Patal Marketing : 7567301; Chennai : Bharat Ceramics : 5203965; Cochin : Classic Marketing : 351455.



With Best Compliments From

# THE CITIZENS' COOPERATIVE BANK LTD., JAMMU (J&K)

**THE FIRST URBAN COOPERTIVE BANK IN J&K STATE**
**PROUD OF ITS OUTSTANDING PERFORMANCE AND PROGRESS**

## BRANCHES AT :

MOTI BAZAR
PH : 2579544, 2545359
NEW PLOT
PH. : 2548796

KANAK MANDI
Ph. : 2544712,
AKHNOOR
Ph. : 910-252000

VINAYAK BAZAR
Ph. : 2548433, 2560019
SHASTRI NAGAR
Ph. : 2452107, 2457749

WARE HOUSE
Ph. : 2430076
GANGYAL
Ph. : 2480491

TRASNPORT NAGAR
Ph. : 2476864

VIJAYPUR
Ph. : 914-280036

R. SPURA
Ph. : 914-250488

## EXTENSION COUNTERS :

JANIPUR
Ph. : 2572812

CHANNIHIMMAT
Ph. : 2462108

SHEIKH NAGAR
Ph. : 2452318

TALAB TILLO
Ph. : 2555361

Committed to Provide Excellent Customer Service

(KULDEEP KR. GUPTA)
CHAIRMAN

(A.K. GOSWAMY
MANAGING DIRECTOR

# *Krishanjoo Razdan*
## *150th Birth Anniversary Celebrations*

स्मारिका

SOUVENIR

Editor

Dr. S.S. Toshkhani

Editorial Board

M.K. Safaya

Ajay Bharti

Jammu-Kashmir Vichar Manch

New Delhi

| | | |
|---|---|---|
| प्रकाशक | : | **जम्मू–कश्मीर विचार मंच**<br>18, श्याम एन्कलेव, विकास मार्ग,<br>दिल्ली–110092 |
| दूरभाष | : | 22373413 |
| मुद्रक | : | ग्राफिक वर्ल्ड<br>1659, दखनी राय स्ट्रीट,<br>दरियागंज, नई दिल्ली |
| आवरण तथा अन्य चित्र | : | श्री वीर मुंशी |

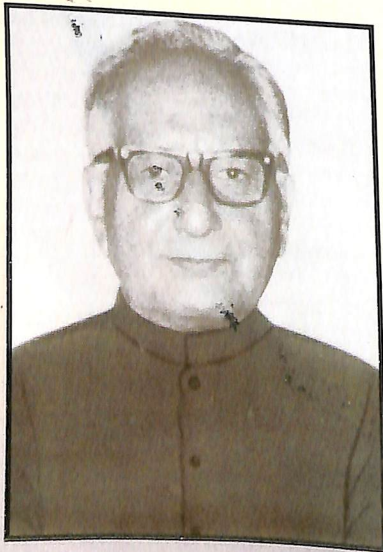


कृष्ण जू राज़दान

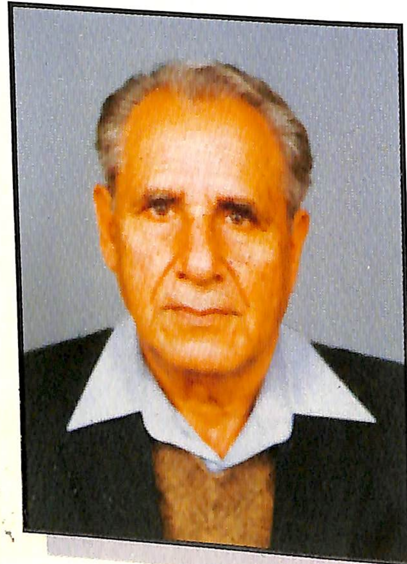
( 1850-1926 ई. )



श्री कृष्ण जू राज़दान के सुपुत्र
पं॰ शंकर राजदान



श्री कृष्ण जू राज़दान के सुपौत्र
स्व॰ प॰ जिया लाल राज़दान



श्री कृष्ण जू राज़दान के सुपौत्र
प॰ श्याम लाल राज़दान

।।श्री।।

# राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

(प्रधान कार्यालय – नागपुर)

डा. हेडगेवार भवन, महाल, नागपुर 440 002. दूरभाष : 723003/720150 , फैक्स, 721589

*सरसंघचालक : कुप्. सी. सुदर्शन* *सरकार्यवाह : मोहन भागवत*

केशवकुंज, झंडेवाला, देशबन्धु गुप्ता मार्ग, नई दिल्ली – 110 055.

दूरभाष : 3670365/3615854; फैक्स : 3517722



हैदराबाद

पत्र क्र. ................. दिनांक ११.५.२००२ई तिथि वैशाख कृ. १४ कलियुग ५१०४

प्रिय श्री त्रिलोकीनाथ जी,

सादर सप्रेम नमस्कार।

प्रभुकृपा से आप सानन्द एवं स्वस्थ होंगे ऐसा विश्वास है। आपका दि. १२ अप्रैल का पत्र प्राप्त हुआ और यह जानकर प्रसन्नता हुई कि जम्मू कश्मीर विचार मंच 'पं. कृष्ण जू राजदान वर्ष' के उपलक्ष में एक स्मारिका प्रकाशित कर रहा है जिसमें उनके द्वारा रचित भक्तिगीतों, सूक्तियों एवं उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को प्रगट करनेवाले लेखों आदि के साथ-साथ कश्मीर घाटी के विख्यात साहित्यकारों की रचनाओं का भी समावेश रहनेवाला है। काल के थपेड़े में आज विस्थापित जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य कश्मीर घाटी के हिंदुओं के लिए यह स्मारिका जहाँ एक सम्बल का कार्य करेगी वहाँ शेष देश के निवासियों के लिए भी कश्मीर घाटी की अमूल्य साहित्यिक धरोहर से परिचित होने का अवसर प्रदान करेगी।

मैं स्मारिका की सर्वांगीण सफलता के लिए सर्वशक्तिमान परमेश्वर से विनम्र प्रार्थना करता हूँ।

आपका ही

कु. सी. सुदर्शन



केदार नाथ साहनी
KIDAR NATH SAHANI




राज्यपाल, सिक्किम
**GOVERNOR OF SIKKIM**

राज भवन,
गान्तोक-७३७१०३
( सिक्किम )
RAJ BHAVAN,
GANGTOK-737103
(SIKKIM)

दिनांक: ८.५.२००२

प्रिय श्री राज़दान जी,

नमस्कार।

अभी-अभी सिक्किम से लौटा हूँ और पं० कृष्ण जू राज़दान जी के जीवन-कार्यों सम्बन्धी स्मारिका के बारे में आप का 13.4.20002 का लिखा पत्र मेज़ पर पड़ा मिला है। मुझे प्रसन्नता है कि आप के इस प्रयास से कश्मीर की उस विभूति के बारे में न केवल कश्मीरी समाज की भावी पीढ़ी अथवा हमारे सभी देशवासी वह सब जान सकेंगे, जिस से अब तक वह अनभिज्ञ हैं। इस सद्प्रयास के लिए मेरा साधुवाद भी स्वीकार करें और हार्दिक शुभकामनाएं भी।

सस्नेह,

भवदीय,

( केदान नाथ साहनी )

श्री त्रिलोकी नाथ राज़दान जी,
18, श्याम एन्कलेव,
नई दिल्ली-110092



इन्द्रेश कुमार
अ० भा० सह संपर्क प्रमुख

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ
भारतीय भवन
बी-15-सुकलौनी
जयपुर
21375496

प्रिय श्री राज़दान जी

कृष्ण जू राज़दान की 150वीं जयन्ती पर जम्मू-कश्मीर विचार मंच द्वारा प्रकाशित स्मारिका, आज की विस्थापन की त्रासदी में एक सराहनीय कदम है।

संस्कृति का संरक्षण अनिवार्य है क्योंकि यह एक ऐसी धरोहर है जो हमें संसार में विशेष स्थान प्रदान करती है। सन्त-कवि कृष्ण जू राज़दान की अनेकानेक रचनाएं जो शिव भक्ति और कृष्ण लीला के संर्दभों से रची बसी हैं उनका व्याख्यान, प्रचार अपने आप में पूजा का ही स्वरूप है। जम्मू-कश्मीर विचार मंच अपने इस कार्य में सफल हो ऐसी इच्छा एवं शुभकामना है।

कश्मीरी हिन्दुओं का सनातन धर्म में विश्वास तथा इसकी दृढ़ नींव का परिचय देते सन्त कवि के काव्य अद्वितीय एवं संरक्षणीय हैं। शिव-शक्ति तथा कृष्ण लीला दोनों का अद्भुत वर्णन इन कविताओं, रचनाओं की महत्ता है। इन रचनाओं में परमब्रह्म परमेश्वर के निराकार एवं साकार दोनों ही रूपों की समानता को सरलता से प्रस्तुत किया गया है।

अपनी संस्कृति की झलक देती रचनाओं एवं उनके रचयिता के विषय में जानकारी देते लेख समाज के पुर्नजागरण का कार्य करें ऐसी मेरी शुभकामना है।

जम्मू-कश्मीर विचार मंच समाज कल्याण हेतु सद्भाव, निस्वार्थ रूप से प्रेरित, कार्यरत अपने लक्ष्य मे सफल हो ऐसी मेरी प्रभु से प्रार्थना है।

शुभकामनाओं सहित

**इन्द्रेश कुमार**

अ० भा० सह संपर्क प्रमुख
राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ

# Prof. Rehman Rahi's Kashmiri Letter


وېژارناگ،
نوشہر، سرینگر ‑ 190011
فون: 402353


تاریخ: 16 مے 2001ء

مکرم و محترم رازدان صاحب

نمسکار۔

تُہنٛز رجسٹرڈ چِٹھ واتٕز۔ سورگہٕ واسی کرشنہٕ جو رازدان سٕندِس خاندانس سٟتؠ تُہنٛد تعلق چھُ تُہنٛد سیٹھاہ رُت تعارُف۔ خُدایس آسہٕ منظوٗر تہٕ وارٕکارٕ سپدِ مُلاقات تہٕ۔ میانہٕ بابتھ چھےٚ فِلحال تُہےٚ شیچھ بُزِتھ زِ تُہی چھِو کاشرِس منز لیکھان۔ یہٕ سپدِ تیٚزی شاد اگر تُہی ییٚنہٕ لیوٗکھمت کانہہ چیز سۭزِتھ تہٕ پرنہٕ بابتھ عنایت کرِتھ ہیٚکو۔

کرشنہٕ جو رازدان چھُ اکھ اہم کاشُر شاعر، تیوٗت اہم زِ تُہنٛز ذکر وراسہ روزِ کاشرِ شاعری ہٕنٛد کانٛہہ تہٕ تواریخ اَدٕ لیوٗکھ۔ کرشنہٕ جوٗس نِسبتھ تُہنٛد تذکرٕ پران پران بُ آسیوو مے تُہنٛد لہجہٕ لوٚتےٚ کم حوصلہٕ (Diffident) تہٕ عُذر آمیز (Apologetic) بوٗزٕ۔ غالباً اوٚ سببہٕ زِ سورگہٕ واسی چھِ اکھ مذہبی شاعر اوسمت، اکھ کاشُر بھکتہٕ شاعر، ییٚمہٕ کیٚنہہ تہٕ تٕشند کلامہٕ شاید مےٚ بوٗز کانٛہہ مسلمان پرتھ یا پٕٹھ موٗلوٗتھ ہیٚکیہ۔ اگر تُہنٛدِس لہجس متعلق میوٗن تأثر صحیح چھُ تیٚلہٕ پزِ ہہ بہٕ سیٹھاہ ادبہٕ سان شاعری متعلق توہہٕ پیٚن یہ خیال بٲوتھ باوُن زِ شاعری چھنہٕ موضوعہٕ حسابہٕ اہم یا موضوعی گُنہٕ زیٚنہٕ لوان۔ شاعری ہٕنٛد حول مرتبہٕ چھُ تمہٕ ٹرِیٹمنٹہٕ تلہٕ نیران ییٚمہٕ کانٛسہٕ شاعرن کُنہٕ تہٕ موضوعس متعلق ورتاوِس اونمت آسہٕ۔ انگریزی شاعر مِلٹن آسِن یا فارسی شاعر روٗمی، کاشِر لل دید آسِن یا نورالدین ولی، عبدالاحد آزادس ہیوٗ سوشلسٹ آسِن یا دینا ناتھ نادمس ہیوٗ ترقی پسند، پرمانندس ہیو لیلا سٕنکھ معل آسِن یا حقانی ہیوٗ نعت گو، ماسٹر زندٕ کول آسِن یا غلام رسول نازکی۔ یِمن سارنٕے ہٕنٛدی موضوع چھِ مختلف، مگر اَمی پرٛرٕ حالی چھِ تِمن مختلف موضوعن نسبتھ متعلق شاعرن ہٕنٛد اختیار (Approach) تہٕ رُوِیہ (Attitude) زِینان، زِنانہٕ تہٕ حولوم کران زِ کانٛسہٕ شاعرن ہُنٛد اختیار تہٕ رُوِیہ ییٚنہ کُنہٕ موضوعس نِسبتھ پانہٕ لوٗمت چھُ تمہٕ اختیارچ تہٕ تمہٕ رُوِیُچ صداقت چھا ورتاوہٕ آمتیو لفظو تلہٕ نیران، تمن لفظن ہِیٛزان۔ اصل کتھ چھےٚ سوے اختیارچ تہٕ رُوِیُچ لِسانی صداقت (Linguistic Truth)۔ یِتےٚ اگر کرشنہٕ جو رازدان سٕنٛدےٚ "شیولگن" کوان چھُ، تمہٕ نِسبتھ کیٚتھ ہیوٗ اختیار تہٕ رُوِیہ چھُ تِمی پانہٕ لوٗمت، کیاہ منظوٗمس منز ورتاونہٕ آمٕژ زبان چھا متعلق اختیار تہٕ رُوِیہ انسانی (Human) اختیار تہٕ رُوِیہ باسنہٕ وان؟ اگر باسنہ وان چھےٚ تیٚلہٕ کرِ مےٚ ہیوٗ کانٛہہ مسلمان تہٕ (ترکہٕ اکھ انسان آسنہٕ سببہٕ) تمہٕ سٟتؠ بےشُبہ تہٕ ہم آہنگی محسوس۔ یہ مولہٕ کتھ وُنیتھ پزِ ہہ بہٕ تُہنٛدِ پیٚن یہ احساس باوُن زِ بہٕ ییٚلہٕ ریڈیو کشمیرٕ پٕٹھ "ہیل تہٕ ماول وینہٕ گولاب ہمیشہ کٕرِتھ، پوژایہٕ لاگی پرمہ شیوس، شوبا عقل پٕژ" بوزان چھُس مےٚ چھُ وجد لوان تہٕ آنند عطا سپدان، تکیازِ مےٚ چھُ ییٚنہٕ یانی منز کُنیتھ کاسٕتام "زون" کوان زِ ہےٚ اکھ پاکی منز بِچھ چھےٚ میانی بشری پزِ پزِ، میوٗن بشری شوق تہٕ ارمان ورنسن آمت، یتھ اسرار سمسارس منز میوٗن اسرار موجود معلوم سپدان ابدی یا پائداری ہٕنٛد ناوس پران۔ پرچھ ہیمٔنی چھُ مےٚ کرشنہٕ جوٗن "شیولگن" ہیوی منظوٗمات پران موضوع سپدان، تہٕ تُہی شاد سپدِتھ اعلان کرِو [illegible] رازدان صاحب قدسون

اکھ تھدِ پایہِ شاعرِ کین امہِ سارِ نے کاشرِ ن پرزنہ پاوُن پیزِ تہ کرُن فرض چھُ ۔ مےٚ چھےٚ "مذہبی شاعری" عنوانہٕ اکھ مبسوط کتاب قلم بند کرمژ، تہٕ پانسہٕ ٹونک پیرِ گاسہ بیٹھِتھ یہ چھاپ تہٕ کرُن ۔ کتابہ ہُند اکھ باب چھُ کشمیر یونیورسٹی ہندِ کاشرِ ڈیپارٹمنٹہٕ طرفہٕ شایع سپدن واجِنہ "انہار" ناوِ رسالہ کِس اکِس شمارس منز چھاپ سپدمت ۔ عنوان چھُس "مذہبی شاعری ۔ اکھ بحث" ۔ امہِ علاوہ چھُ حال حالے "آلو" ناوِ کاشرِس رسالس منز ماسٹرزندکولس متعلق اکھ طویل مضمون شایع سپدمت یتھ منز تخلیقی ادب تہٕ عقیدک مسلہ زیرِ بحث آمت چھُ ۔ "آلو" چھُ حکومتِ جموں و کشمیرک انفارمیشن ڈپارٹمنٹ، پیرزاب پارک، سرینگر ۔ 190001 شایع کران ۔ اگر ضرورت پیہ باسیہ تہی ہیکیوٚ تھ مذکورِ دوشوے رسالہ مفت حاصل کرِتھ تہٕ منز وِزِ پرِتھ ۔

گرستہٕ جوان زوانی متعلق چھُ مذکورِ کتابہِ منز کم کایہ لیوٚکھمت ۔ مزید لیکھنک چھُم شوق تہٕ ضرورتھ تہٕ تہٕ فرض تہٕ ۔ امانہ مےٚ دوت رپتھ کھنڈ صحتہ کِنہ اوری تہٕ پوری ہیوٚ ۔ اکی منز ڈاکٹرن واتناویو گمچھ تہٕ تیز Antibiotics پھیر بیدس اثر چھُس پیوٚمت ۔ گمدرِ تہٕ ہیوٚلہِ روزون بدل اکی لوکچی ڈاکٹر صابن ۔ اوٚن گوو تمہِ دادِ دوا یوش یتہ بدل بلاے ٹلہ رہیم ۔ کمپرس گیم زیٚرتھ ۔ حال چھُنس دراز پووتمت ۔ مےٚ گوٚژھ نسن یہ مطلوبہ مضمون لیکھنس ما آرام فرصتھ ہیکہِ تہی مےٚ دِتھ ۔ تیلہِ ہیکہ یہ مضمون تیار کرِتھ تہٕ توہہٕ سوزِتھ ۔ تمہِ سبروانہِ اندیم تہٕ ۔ یہ میہ تہٕ کرہ زِ لوم اطلاع ۔

برج ناتھ بیتاب چھُ مےٚ پزی عزیز ۔ شاعر تہٕ چھُ نفیس ۔ روزٕ تسند یہ شرف معتبر ۔ تس گژھہ میانی سلام تہٕ آہی وَنِتھ ۔

خوداے بخشن مےٚ شمسن کنہ دوہہ دِلہِ دُبار واتنک ساتھ، تہٕ توہہ سہتی دیدار کرنک میلہِ ہم ژُت توفیق !

دعاگو

[signature]

جناب بی ۔ ایل ماژان، آئی ۔ آر ۔ ایس

ایڈیشنل کمشنر آف انکم ٹیکس دہلی

CRD – II/3

Pandara Park

NEW DELHI – 110 003

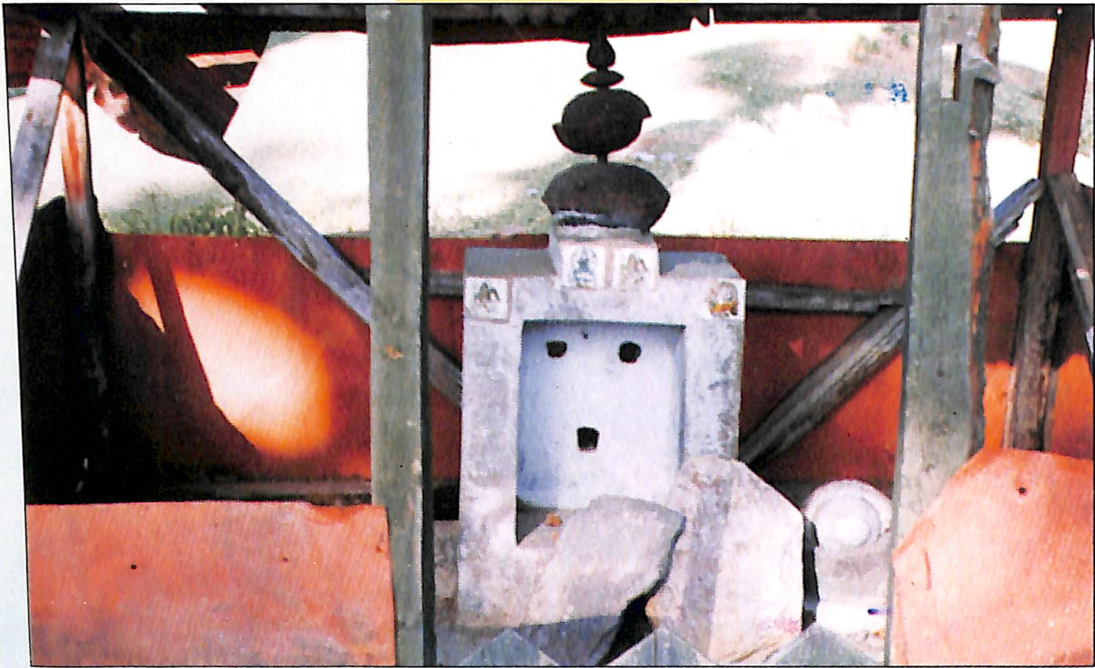
## English translation of some excerpts from the letter of Prof. Rehman Rahi, eminent Kashmiri poet and intellectual, addressed to Shri B.L. Razdan (Great-grandson of Krishnajoo Razdan)

" Krishnajoo Razdan is an important Kashmiri poet—so important that without mentioning his name no history of Kashmiri literature can be regarded as complete. While going through your letter, I felt that you have referred to Krishnajoo Razdan in a rather diffident and apologetic tone, perhaps because he was a religious poet — a Kashmiri Pandit poet so to say — and as such his poetry cannot be appreciated by a Muslim like me. If my impression about your tone is right, then I would humbly like to tell you that in my view it is not on account of the subject matter that poetry can be regarded as important or ordinary. The value or the place of a poetic work can be assessed on the basis of the treatment that the poet has given to that subject matter... The real thing is the linguistic truth of the approach and attitude adopted by the poet towards his subject. That is to say, if Krishnajoo Razdan has, composed 'Shiva Lagna', for instance, then what kind of an approach and attitude has he adopted towards its theme? Does the language used in the work reflect an truly humanistic approach and attitude? If it does, then any Muslim like me (being basically a human being) too can feel inclined to identify and harmonize with it. "

" Having made this fundamental point, may I tell you that whenever I hear the song *'byal tay madal vyana gulab pamposha dastay'* on Radio Kashmir, I am transported to a state of ecstacy, of great delight, because I hear someone within me saying that this song expresses my own individual faith and devotion, my own individual yearning and desire.... I get a similar feeling when I read Krishnajoo Razdan's works like 'Shiva Lagna', and I say it with absolute confidence that Razdan Sahib is a poet of such eminence that all Kashmiris must truly respect him.... "



श्री वीर मुंशी द्वारा कृष्ण जू राज़दान का चित्र



पं॰ कृष्ण जू राज़दान की ईष्ट देवी 'शिवा भगवती', अकिंनगोम, कश्मीर
(इस मंदिर को आतंकियों ने ध्वस्त किया है)



'शिवा भगवती' मंदिर का बाहरी दृश्य

## Contents

Editorial Note

# A Word About the Souvenir

This Souvenir can be taken as a bouquet of flowers offered in homage to one of Kashmir's greatest saint-poets, Krishnajoo Razdan, by a community in exile. At a time when the Kashmiri Hindus are fighting a grim battle for their bare survival and are trying to come to terms with the trauma of their uprootment from their native soil, the fear of being obliterated as a distinct socio-cultural entity is tormenting their minds the most. It is but natural for them in their present state of distress and dispersal to look to icons of their culture and their gods and saints for succour and solace. And if there is anyone after Laueshwari who has touched the innermost depths of their being, it is Krishnajoo Razdan, the singer of most mellifluous songs about Radha and Krishna's Rasa and Shiva and Shakti's mystical union. The litting cadences of these songs continues to sway the minds of thousands of this exiled admirers and sustain them in this darkest hour of their history. For them he is no ordinary poet or saint but a medium of their connectivity with their past, a symbol of their civilizational ethos.

I must admit I was overwhelmed when the President of the Jammu and Kashmir Vichar Manch, Shri T.N. Razdan asked me to edit a Souvenir as a finale to Krishnajoo Razdan's 150th birth anniversary celebrations. Earlier, I had participated in some of the programmes organized by the Manch as part of these celebrations, including a poetic symposium. The Manch had declared 2002 as the Krishnajoo Razdan Year. The idea of paying homage to the great saint-poet in the form of a Souvenir evoked nostalgic feelings in my mind, taking me back to the days when in Kashmir I would go into raptures while listening to some of the most beautiful of his songs from some of the best Kashmiri singers. I had become an ardent admirer of Krishnajoo Razdan as a poet ever since I had read some of his select lyrics published by my late father Prof. S.K. Toshkhani in the form of a series of booklets titled 'Shrikrishna Vani'. Later I wrote in detail about Krishnajoo Razdan in my book 'Kashmiri Sahitya Ka Itihas.' And now Shri T.N. Razdan was giving me an opportunity to express my reverence for the poet again through the Souvenir on behalf of thousands of my displaced brothers and sisters who feel transported to a state of spiritual ecstacy on hearing his haunting melodies. I must thank Shri T.N. Razdan for that.

I have called the articles included in this Souvenir a bouquet, for that is indeed what they are, having been obtained from different writers living in different quarters and admiring Krishnajoo Razdan for different reasons — some for his spiritual attainments, some for his philosophical ideas and some for the sheer musical delight that his poetic compositions offer. I appreciate the efforts put in by Shri Ajay Bharati in collecting these articles. My own article, with which the Souvenir begins, is focussed on the concept of Bhakti in Krishnajoo Razdan. The great saint-poet, I have pointed out, regards Bhakti as an instrument to grasp the Ultimate Reality. He does not believe in intellectualizing Bhakti but understands it as cultivation of an emotional relationship with God. But even as he lays emphasis on *bhava* or feeling, he views *jnana*

in conjunction with it. Steering clear of sectarian affiliations, he interprets things in terms of the Shaiva philosophy of Kashmir which postulates that there is complete identity of the individual soul with the Absolute.

Shri S.L. Razdan, on the other hand has chosen to related some miraculous anecdotes from Krishnajoo Razdan's life. Being a grandson of the poet, he knows this biographical aspect better than anyone else.

Another scholar, Prof. K.L. Moza has in poetic style described Krishnajoo Razdan's 'Shiva Parinay' as an exquisite verbal painting. According to him, "Krishnajoo Razdan as a verbal painter is a topic of vast critical scope.

Dr. Advaitavadini Koul, well-known scholar has analysed Krishnajoo Razdan's poety from a Shaiva perspective. She is of the view that as a saint he has followed the Kashmiri tradition of Shaiva *sadhana.* She has traced elements of the Shaiva philosophy of Kashmir in his poetry, illustrating her point with references to 'Shiva Lagna' in particular.

Shri Somnath Veer, well-known Kashmiri poet and writer who has edited the complete works of Krishnajoo Razdan for the Jammu and Kashmir Academy of Art, Culture and Languages, relates his experiences about preparing a critical edition of the text in his article.

Dr. Bhushan Lal Koul, a Hindi scholar and an erstwhile professor of Hindi at the Kashmir University too has taken 'Shiva Parinay' as his subject. His article brings out the literary beauty of the work.

Shri Utpal Kaul, publisher and cultural activist has paid his tributes to the greatness of Krishanjoo Razdan both as a saint and a poet in his article 'The Great Saint-poet Krishnajoo Razdan.' He has highlighted his spiritual attainments as a *"grihasthi sadhu."*

Shri Br N. Betab, a well-known Kashmiri poet, has in his article titled 'The relevance of Krishnajoo Razdan in Modern times' linked Krishnajoo Razdan with the wisdom and insight of the Vedic seers and poets. Shri Betab seeks his connectivity with his cultural past through Krishnajoo Razdan.

Dr. Sangeeta Goyal, a young and promising writer and researcher has in her Hindi article compared Krishnajoo Razdan with the Rajasthani devotional poet Sant Charan Das, finding many a point of similarity between the two.

Prof. Chaman Lal Sapru's article 'Kashmiri Sant Kavi Krishnajoo Razdan' refers to the socio-political factors which he thinks account for the saint-poet's greatness. Prof. Sapru, a veteran Hindi activist and writer, edits the Hindi section of the monthly 'Koshur Samachar' brought out by the Kashmiri.

While all these writers, researchers and scholars deserve my unreserved thanks for their contributions. I can not forget how readily and enthusiastically did Shri Veer Mushi, an artist of national and international repute, accede to my request and prepare the painting of the poet that appears on the front cover of this Souvenir, three more paintings of his, including two, depicting incidents from Krishnajoo Razdan's life adorn the inner pages of the publication. I cannot but express my heart-felt gratitude to him.

There has been some delay in bringing out this Souvenir due to some hiccups here and there for which we think it necessary to express regrets. But we feel really happy that finally we have been able to keep our commitments to the admirers of the great saint-poet. We will feel happiner still if this Souvenir prove helpful in perpetuating the memory of Krishnajoo Razdan and in passing on his legacy to the generations to come.

**—Dr. S.S. Toshkhani**
Editor

# Homage to Krishnajoo Razdan

One of the greatest devotional poets of modern times, Krishnajoo Razdan has enjoyed unparralleled popularity in Kashmir for his melliflous songs suffused with intense spirituality. Generations of Kashmiris have been inspired by his soul-elevating poetry and have felt charmed by the sheer magic of its verbal music and the profoundness of its meaning. The fact is that Krishnajoo Razadan is not just a saint-poet but an important symbol of Kashmir's cultural ethos. That is why the Jammu and Kashmir Vichar Manch chose to celebrate his 150th birth anniversary on a large scale, and organised a number of programmes to focus on his attainments both as a saint and a poet. The Manch dedicated the entire year of 2002 to his hallowed memory and it is at the culimination of these celebrations that this Souvenir is being brought out as a token of homage to him.

As we all know, Jammu and Kashmir is passing through one of the most critical periods in its history, with Jehadi terrorism destroying the entire fabric of its social and cultural life as well as its age-old traditions. In the past several years blood of innocents has flowed on the streets and lanes of Kashmir and unprecedented savagery has filled the minds of its people with terror. Perhaps one of the most tragic consequence of the violence unleashed by the fundamentalists, who are intent upon shatching Kashmir from the lap of India, has been the exodus of the almost entire Kashmiri Pandit community. Subjected to unprecedented barbarity and genocidal attacks, the community had no option but to leave their millennia old homeland.

Today the hapless Kashmiri Pandits are fighting for their very survival and are struggling hard to protect their cultural identity. Having lost almost everything overnight, these dispossessed people from Kashmir have nothing but their memories to sustain them — memories of their five thousand year old culture and traditions. And it is during this period of the gravest crisis they have ever faced that the *vaaks* of Lalleshwari and songs of Krishnajoo Razdan have sustained them and provided spiritual solace to them. Realizing this aspect of the situation in which Kashmir Hindus have been placed, the Jammu and Kashmir Vichar Manch thought of paying tributes to the memory of Kashmiri poets and savants like Krishanjoo Razdan and creating an awareness about Kashmir's glorious cultural heritage in the people of the country.

Every since its inception in April 1994, the Vichar Manch has been in the forefont of the fight against terrorism in Kashimir and is directing its efforts towards alleviating the distress of its victims. Acting at various levels, political, social as well as cultural, the Manch is coordinating its efforts with other Kashmiri Hindu organizations to evolve strategies and chalk out agendas to present the problems

faced by the displaced Pandits of Kashmir and raise the questions of their human rights at various fora. The Manch considers Kashmiri Pandits as an essential party in any effort to settle the vexed Kashmir issue and is intent upon safeguarding their vital interests in every way. It is working as a think-tank on the issue and is fully committed to espousing their cause wherever possible. But more than anything else it is devoting itself to protecting and projecting the culture and heritage of the Kashmiri Pandits.

The 150th birth anniversary celebrations and publication of Souvenir related to it are but its humble efforts in that direction. Kashmir has been a world-renowned seat of learning for thousands of years with poets and soges like Krishnajoo Razdan contributing to the enrichment of its cultural and intellectal atmosphere.

Fortunately, the grandson of the object of our reverence, Pandit S. L. Razdan is living amongst us today. We greatly admire and appreciate his valuable guidance and help in Krishnajoo Razdan's 150th birth anniversary celebrations and in bringing out this Souvenir. In fact the entire community should be thankful to him for having painstakingly edited and brought out the complete works of Krishnajoo Razdan in three volumes in the Devanagari script.

With this I pay my humble homage to the great saint-poet and offer my sincere thanks to all those who made this project a success.

— **T.N. Razdan**
President,
All-India Jammu-Kashmir Vichar Manch

# 'पं० कृष्ण जू राज़दान वर्ष 2002' : एक रपट

अजय भारती

पं० कृष्ण जू राज़दान मीरा, कबीर, तुकाराम, नरसिंह महता तथा तुलसीदास के समान जनमानस को गहराई से प्रभावित करने वाले एक सन्त कवि थे। उनका जन्म कश्मीर के छोटे से गाँव वनपोह, अनन्तनाग में 19 अगस्त, 1850 में हुआ था।

क्रूर, बर्बर अफ़गान आतताइयों के शासनकाल के अत्याचारों की ताज़ा स्मृति वाले आशंका, भय और निराशा के वातावरण में पल-बढ़ कर पं० कृष्ण जू राज़दान ने भक्ति, श्रद्धा, आस्था, आशा और विश्वास का संचार करने वाले लीला-गीत और कविताओं की रचना करके पूरे समाज को एक नई दिशा दिखाई ।

स्थानीय परिवेश (भाषा, वेशभूषा, खान-पान, रहन-सहन तथा रीति-रिवाज) के साथ सीधा सम्बन्ध रखते हुए ईश्वर पर असीम श्रद्धा और विश्वास दर्शाने वाली संगीत और लय से भरपूर राज़दान साहब की रचनाओं ने समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रभावित किया । अपने गीतों, कविताओं की सीधी और सरल भाषा के कलात्मक प्रयोग द्वारा पं० कृष्ण जू राज़दान, संचार-सुविधा न होने के बाद भी कश्मीर के सामाजिक, साहित्यक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा राजनैतिक क्षेत्र को प्रभावित करने में सफल हुए ।

राज़दान साहब आयु, जाति-पाँति, पन्थ तथा भूगोलिक सीमा को लाँघ कर पूरे कश्मीर में प्रसिद्ध हुए। उनके द्वारा रचित भजन हर आयु के लोगों के होठों पर चढ़ गए। विस्थापन की परिस्थितियों में इन भजनों ने कश्मीरी पण्डित समुदाय को पवन के शीतल झोंके के समान राहत पहुंचाई ।

जम्मू-कश्मीर विचार मंच सांस्कृतिक नवचेतना तथा सामाजिक पुनर्रचना को समर्पित एवं जनप्रिय संगठन होने के कारण ऐसे महापुरुषों के जीवन तथा उनके योगदान को समाज के हर वर्ग तक पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध है। इसी कारण विचार मंच ने वर्ष 2002 जो कि कश्मीर के इस महान् सन्त कवि के जन्म की 150वीं वर्षगाँठ तथा 75 वीं पुण्य तिथि का वर्ष है, को पं० कृष्ण जू राज़दान वर्ष के रूप में मनाने का निश्चय किया। इसके अन्तर्गत वर्ष भर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम स्थान-स्थान पर आयोजित करने का निर्णय हुआ। राज़दान साहब के व्यक्तित्व के बारे में तथा उनके विचार और कार्य की जानकारी अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचे, इसके लिए पं० कृष्ण जू राज़दान जी के पौत्र पं० श्याम लाल राज़दान की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया। कश्मीर और कश्मीरी संस्कृति के प्रमुख जानकार विद्वान इस समिति में सम्मिलित हुए।

23 दिसम्बर 2001 को पम्पोश कॉलोनी, नई दिल्ली में एक यज्ञ का आयोजन किया गया । दिल्ली और आसपास के क्षेत्र से हज़ारों की संख्या में लोगों ने इसमें भाग लिया। केन्द्रीय गृह राज्य मन्त्री श्री आई०डी० स्वामी ने इस दिन पं० कृष्ण जू राज़दान वर्ष 2002 के शुभारम्भ की घोषणा की।

17 मार्च, 2002 को मावलंकर हॉल, दिल्ली के प्रांगण में महाशिवरात्रि के वार्षिक सामूहिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में इस वर्ष का सांस्कृतिक कार्यक्रम पूर्ण रूप से राज़दान साहब को समर्पित किया गया । उनके जीवन और वृतान्त को संगीत और नृत्य के माध्यम से दर्शकों के समक्ष प्रस्तुत किया गया ।

कश्मीरी समाज से सम्बन्धित सभी संस्थाओं से आग्रह-पूर्वक अनुरोध किया गया कि वे अपने सभी प्रकार के पत्राचार में इस वर्ष सर्वप्रथम 'पं० कृष्ण जू राज़दान वर्ष 2002' का अवश्य उल्लेख करें । इसके साथ ही राज़दान साहब के कुछ प्रमुख भजनों को एक छोटी पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर

निःशुल्क वितरित किया गया।

2 जून 2002 को इण्डिया इन्टरनेशनल सेन्टर के सभागार में पं॰ कृष्ण जू राज़दान साहब की स्मृति में एक हिन्दी-उर्दू-कश्मीरी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया ।

पं॰ महाराज कृष्ण काव, पूर्व शिक्षा सचिव, मानव संसाधन मन्त्रालय, केन्द्र सरकार की अध्यक्षता में हुए इस सम्मेलन में पं॰ शम्भूनाथ भट्ट 'हलीम' तथा डॉ॰ शशिशेखर तोषखानी जैसे ख्याति प्राप्त कवि सम्मलित हुए । इसी कार्यक्रम में प्रसिद्ध सन्तूर वादक पं॰ भजन सोपोरी जी ने पं॰ कृष्ण जू राज़दान पर मंच द्वारा बहन सुषमा मट्टू व सहयोगियों की सहायता से बनाये गये आडियो कैसेट **'सोन कृष्ण जू राज़दान'** का लोकार्पण किया।

24 जुलाई 2002 को शालीमार गार्डन, गाज़ियाबाद में 'पं॰ कृष्ण जू राज़दान' पर डॉ॰ भूषण लाल कौल का व्याखान हुआ। राज़दान साहब पर शोध कार्य कर चुके डा॰ भूषण लाल कौल जी ने अपनी मनमोहिनी वाक् शैली से श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया ।

जम्मू-कश्मीर विचार मंच कश्मीर के सामाजिक एवं सांस्कृतिक जगत की महान विभूतियों की रचनाओं तथा जीवन-दर्शन को वर्तमान पीढ़ी को प्रेरणा देने एवं अनुसरण करने के उद्देश्य से प्रस्तुत करने हेतु सदैव प्रयत्नशील एवं तत्पर रहेगा।

देवभूमि कश्मीर ने हज़ारों वर्ष की संस्कृति यात्रा तय की है। इस यात्रा के मध्य अनगिन्त विभूतियों ने उत्कृष्ट योगदान देकर हिन्दू संस्कृति को नई उच्चाईयों तक पहुँचाया। बीच में अनेक काल खण्ड ऐसे भी आए जब इस श्रेष्ठ संस्कृति को कठिन परिस्थिति का सामना करना पढ़ा।

आज कश्मीर का हिन्दू समाज फिर एक बार अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिए संघर्षरत है। ऐसे समय में सांस्कृतिक प्रतीकों एवं महापुरुषों के बारे में जनसाधारण को अवगत कराने की आवश्यकता है। इनके स्मरण मात्र से हर पीढ़ी के लोग अपने भीतर एक शांति का संचार होता हुआ अनुभव करते हैं। गौरव से सीने फूलते हैं, माथे तनते हैं।

जम्मू-कश्मीर विचार मंच इस भावना को स्थाई बनाने के लिए हर प्रकार का प्रयास करता रहेगा जिससे सहस्राब्दियों से अविरल आ रही संस्कृतिक यात्रा में कोई विराम न आए, यह आगे भी इसी प्रकार चलती रहे।

**—अजय भारती**

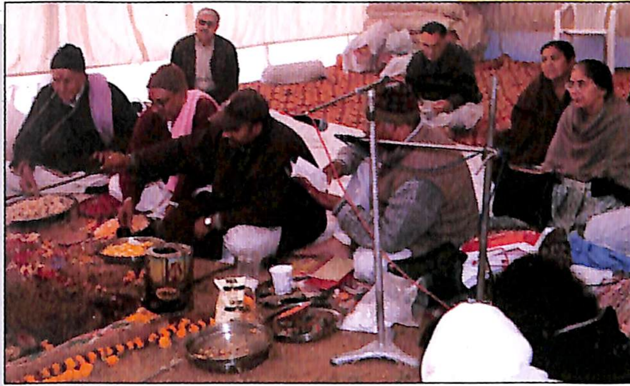
महामंत्री,

जम्मू-कश्मीर विचार मंच

With Best Compliments
from:



# Dabur
# India Ltd.



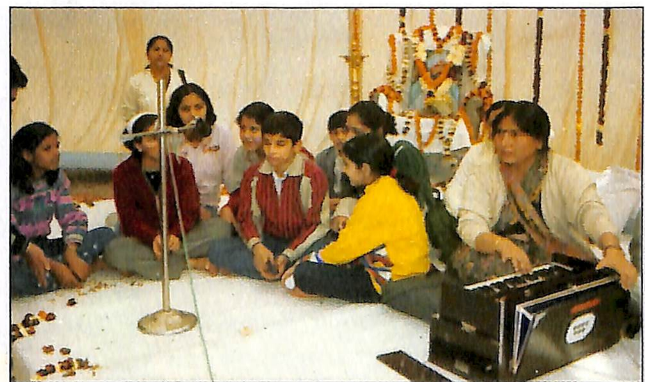
कृष्ण जू राज़दान की 150वीं जयंती पर आयोजित यज्ञ आहूति देते हुए उनके पौत्र प. श्याम लाल राज़दान



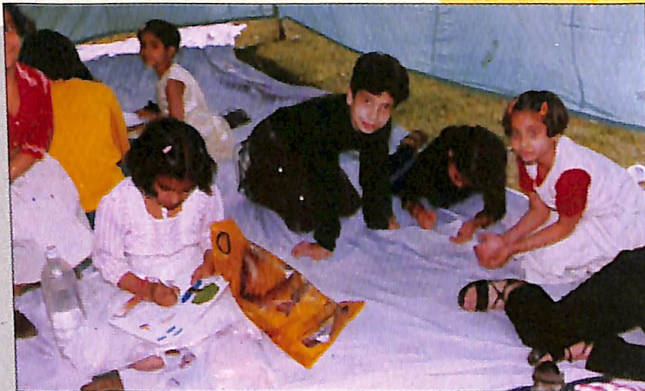

कृष्ण जू राज़दान वर्ष का श्रीगणेश करने आए केन्द्रीय गृह राज्य मन्त्री श्री आई. डी. स्वामी




कृष्ण जू राज़दान वर्ष सामूहिक शिवरात्रि कार्यक्रम पर कश्मीरी बच्चे नृत्य करते हुए ।



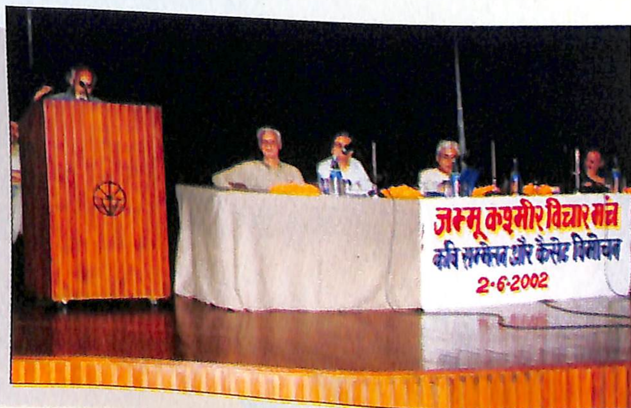
कृष्ण जू राज़दान के एक कार्यक्रम में बच्चे उनके भजन गाते हुए ।



कृष्ण जू राज़दान वर्ष के एक कार्यक्रम में कश्मीर विस्थापित बच्चे चित्र कला में भाग लेते हुए ।



कृष्ण जू राज़दान कवि सम्मेलन में उनके पड़पौत्र भूषण लाल राज़दान कविता पड़ते हुए ।




कृष्ण जू राज़दान कवि सम्मेलन एंव कैसेट विमोचन का एक दृश्य



कृष्ण जू राज़दान के उपलक्षय में सामूहिक शिवरात्रि के कार्यक्रम में केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री मुरली मनोहर जोशी बच्चों को पुरस्कार देते हुए ।

कृष्ण जू राज़दान की १५०वीं जयंती पर

# यहाँ उपस्थित है ईश्वर

डॉ॰ शशि शेखर तोषखानी

यह आस्था की भूमि है—
पसलियों के घाव से लेकर
प्रार्थनाओं के आकाश तक का भूगोल
आज जब गिरवी रख दिये हैं हमने
अपने सारे सितारे
आज जब लुढ़क रहे हैं
पवित्र ग्रंथों में अपने-अपने स्थान से
पूर्वजों के कपाल
आज जब कर दिया गया है
हमें इतिहास से बाहर
हमारे पास बचा है
यही इतना ही भूगोल
पीड़ा का यह धरातल!
यहीं कहीं मिलती हैं हमें लल्लेश्वरी
अपने किसी 'वाक्' की खिड़की से
देखती हुई
और हमारे रक्त में खिल उठता है
हज़ार पंखुड़ियों का कमल
यहीं कहीं हमें दिखायी देते हो तुम—
कृष्ण जू राज़दान
और हमारी देह की शिरा-शिरा में
झनझना उठता है ओंकार!
बहा ले जाता है हमें
तुम्हारे कंठ में लहराता हुआ गीतों का समुद्र
अपने उद्दाम ज्वार के साथ
तरंग-तरंग पर उठता-गिरता
बहता-तिरता है
हमारा मछली-मन

पहाड़ी की ऊँची चोटी पर खड़े
मंदिर की घंटियों की तरह
बजता है हमारे भीतर
अतीत
जिसकी सीढ़ियों पर छोड़ आये हो तुम
अपनी खड़ाऊँ
कृष्ण जू राज़दान!
आँधियों और अंधेरों
और रक्त की वर्षा के बीच
भटकते-भागते हुए हम
जब देते हैं तुम्हारे शब्दों के द्वार पर दस्तक
तो उसके पीछे खड़ा मिलता है हमें ईश्वर
घास की नोकों पर ओस की अनगिनत बूँदों की तरह
उतर आती है हम पर
उसकी मौन करुणा
नंदन-वन के चंदन तरुओं के नीचे बैठें ऋषि*
हमारे दुख को एक ऋचा की तरह गाते हैं
राधा और कृष्ण की चिरंतन रास लीला के लिये
मन बन जाता है वृंदावन
हमारी हड्डियों के मौन में सुनायी देता है
शिव और शक्ति का अनंत संवाद
तुम्हारी पंक्तियों से झरते
रहस्यमय नीले प्रकाश में
डबडबायी आँख-सा खुलता है
हमारे होने का अर्थ!

यह आस्था की भूमि है—
संभावनाओं का भूगोल
मैना की चोंच से गिरा
एक छोटा-सा कंकड़
यहाँ पहाड़ बन सकता है
दैत्य की पीठ को कुचलता हुआ**
आषाढ़ की आग
माघ की बर्फ़ में बदल सकती है
आतताई के अहंकार की चिंदियाँ उड़ाते हुए
और रुंधे कंठों से फूट सकते हैं
पूजा के रुके हुए बोल***

यह आस्था की भूमि है—
तुम्हारे स्वर में वास करती हुई
एक पूरी संस्कृति
यहाँ सहस्रधारा बनकर
बह रही है हृदय-हृदय में
कृष्ण जू राज़दान!

---

* कृष्ण जू राज़दान की एक काव्य-पंक्ति की ओर संकेत।

** कथा है कि कश्मीरी पंडितों की अधिष्ठात्री देवी शारिका ने एक मैना का रूप धारण कर अत्याचारी बकासुर के ऊपर अपनी चोंच से एक छोटा-सा कंकड़ गिरा दिया जो एक पहाड़ी बन गया। इस पहाड़ी को हारी पर्वत कहते हैं और इसे कश्मीरी पंडित एक बहुत ही पवित्र स्थान मानते हैं।

*** कश्मीर के अफ़गान गर्वनर जब्बार ख़ान की ओर संकेत जिसने कश्मीरी पंडितों को माघ के स्थान पर आषाढ़ में शिवरात्रि मनाने पर विवश कर दिया ताकि वह देखे कि उस दिन शिवरात्रि के अवसर पर बर्फ़ पड़ने से संबन्धित उनका विश्वास कहाँ तक सच निकलता है। जनश्रुति है कि उस वर्ष आषाढ़ में भी बर्फ़ पड़ी और कश्मीरी पंडितों ने हर्षोल्लास के साथ वह शिवरात्रि मनायी।

# Krishna Joo Razdan and His Concept of Bhakti

**Dr. S.S. Toshkhani**

A great poetic genius who represents the final upsurge of the Bhakti tradition in Kashmir, Krishnajoo Razdan is the most musical of all Kashmiri poets, high acoustic values forming the mainstay of his tremendous appeal. Like Lalleshwari, his spiritual experience translates itself into soul-stirring poetry, touching the borders of mysticism which has its antecedents in Utpalacharya and Bhatta Narayana. But while Lalleshwari upholds the philosophy of absolute non-dualism between God and Man, Krishnajoo Razdan correlates belief in a personal God and an impersonal view of the Ultimate Reality. Born in Vanpoh a small village in Southern Kashmir in 1850, Krishnajoo Razdan lived and wrote in an age when the horrors and holocausts of the Afghan rule in Kashmir were still haunting the racial memory of Kashmiri Hindus even though the state had passed into the hands of the Dogras. Krishnajoo Razdan sought comfort in a benign and compassionate God who protects the pious and upholds the cosmic order. He was thus very much a product of the socio-political and intellectual climate of his a sensibility as times. This aspect influenced poet and also his concept of Bhakti as a compensating factor.

Krishnajoo Razdan places Bhakti above everything else in life as to him it is instrumental in grasping the Ultimate Reality. For him Bhakti is a Bhava or a state of mind, an emotional rather than an intellectual response to the problems of existence. It is a prized possession as valuable as a string of pearls, for it helps to please God and satisfy one's spiritual craving for feeling His presence.

Krishnajoo Razdan looked at the world with eyes of an unattached person, but at the same time he was intensely attached to God as the source from which all positive values of life emanate. And thus, while non - attachment is present as the basic perceptive element in his poetic expression, a chiaroscuro effect of attachment and non-attachment emerges from it in an extremely charming form. Bhakti for him is a feeling, a "matter of emotion" that satisfies the human quest for a supreme personality who can be adored and to whom prayer can be addressed. That is why he regards it to be the most valuable thing one can acquire. It is a string of pearls, he says, for which he is prepared to pay the highest price:

*O wise buyer, do not take my pearls of Bhakti*
*for something cheap that can be purchased*
*from the market place*
*They are not false*
*Considering them to be so could only be too naïve*
*They are of the highest value!*

At another place, he uses the same metaphor to present Bhakti Bhava as an alternative to escape from existential anguish. One has the freedom of choice, he says, to wear or not to wear or the pearl-string of Bhakti:

*The choice is yours:*
*You are free to wear the string of pearls*
*That Bhakti is*
*(Or not to wear it)*
*There is no compulsion*
*No one to restrain you*
*You have the freedom to act*
*Go on make your choice.*

It is Bhakti Bhava alone that pleases God, that takes one to God and for that sincerety and simplicity of mind is an essential pre requisite:

*Tothan chhukh tsuy bhakti bhavas*
*Shyma rupa lagayo rama navas*
[You are pleased with one who approaches you with Bhakti Bhava. Oh Rama, I adore you in the form of Shyama.]

*Tothan chhukh tsuy sedyan to sadan*
*Pamposh padan vandayo pan*
[You are pleased with alone who are straightforward and guileless. I devote myself to your lotus feet, O Lord.]

Loving devotion for God flows as an overpowering current of emotion or Bhava in Krishna joo Razdan and it is with this Bhava, that he hails his chosen deity in one of his most popular songs *'byal tay madal'*, his whole body and soul consumed by its fervour, "It is with intense Bhakati Bhava that we hail you, O great Lord Shiva. We offer bouquets of *bel* (Wood apple leaves) *madal*, *vyana*, roses and lotuses for your worship."

Regarding Bhakti as an *anubhava*, an inner spiritual experience, Krishna joo seeks to cultivate a deep emotional and personal relationship with God based on it. God, he believes is someone unto whom one can surrender and whom one can love and depend upon:

*My boat is caught in a raging storm*
*Rocked by waves in the midst of ocean of existence*
*And you alone can take me across*

*This world is a vast and turbulent ocean*
*Shoreless and impossible to cross*
*Take me in to your lap*
*O Shambhu, take pity on me.*

*In front of me there is blazing fire*
*Behind me a heap of explosives*
*And placed in this situation I am supposed to do my work*
*O Shambhu, take pity on me.*

The search for God, he feels, is not easy and smooth. It involves great pain and suffering, and anguish of separation from Him is unbearable. Identifying himself with a woman looking for her separated lover, Krishnajoo Razdan describes his state of mind thus:

*I have fallen into the vicious trap that the world is*
*And my only hope lies in you*
*For you alone can free me from the tangle*
*O my eternal Lord, my Shiva!*
*Approaching you with an intense feeling of devtion*
*I am searching for you on the Harmukh Mount*
*For you alone can dispel*
*The darkness of delusion, My Lord.*

Sometimes he portrays himself as Radha or a Gopi waiting for Krishna in gardens and meadows:

*I am Radha waiting for Krishna*
*If he comes*
*I would offer my very life for him*

*Oh, how my heart has been stolen by*
*The son of cowherd Nanda!*

*I am looking for young Krishna*
*In gardens and meadows,*
*Along the banks of lakes and ponds,*
*By the side of the waterfalls*
*I think of the Lord who had subdued*
*Kalinaga*

It was in this state of mind that he wrote his sweet and mellifluous Rasalila songs which are among the best written in any language. Far from being indecent and obscene, these songs present Rasa as a dance of spiritual ecstasy—an eternal event that takes place in the Vrindavan of our mind, transcending the limits of time and space:

*My own mind is Vrindavan*
*And Narayan my soul!*

Here is how Rasa is portrayed by him in one of his beautiful songs:

*O come, and let the dance be our delight*
*For when the Gopis, lord began to dance*
*Six months had passed as though a single night*
*The seasons watched enraptured in their trance,*
*A month flew as an hour, a year a day,*
*A thousand eras we will dance away!*

**[Trs : Nila Cram Cook]**

These songs have an element of *rahasyanubhava* or mysticism about them, which coupled with their musicality, makes their appeal irresistible. What is most interesting is that these rapturous songs of Rasa and Krishna and Radha's divine love occur side by side with Krishna Razdan's equally enchanting and deeply devotional songs addressed to Shiva. The fact is that the great saint-poet does not take any doctrinaire or sectarian position in respect of Bhakti, but feels equally drawn to both Shiva and Krishna like the poet Vidyapati. He has also written paens in praise of the Mother Goddess and other deities to trying to synthesize various devedotional currents and subsuming all personal deities in his concept of the Ultimate Reality, as all of them according to him are but its different manifestations.

Krishnajoo Razdan did not believe in intellectualising devotion, his concept of Bhakti being essentially emotion-centred or feeling-centred. It is was his belief in personal God that led him to understand Bhakti as cultivation of an emotional and intimate relationship with Him. Yet the Bhakti he talks of does not exclude Jnana but can be viewed in conjunction with it. For him there is no antagonism between Bhakti and Jnana as both go hand in hand and complement each other. The Vaishnava Acharyas—Ramanuja, Madhava, Nimbarka and Vallabha—also take this position, as does the Shaiva school of philosophy with which Krishna joo Razdan seems to have a close affinity of thought. His attitude towards the relationship between Bhakti and Jnana appears also to be influenced by the Bhagvad Gita in which Krishna explains that Bhakti is not devoid of Jnana nor is Jnana devoid of Bhakti. Thus, at the end of the 18th chapter of the Gita we have Krishna saying:

*By means of devotion he (the aspirant) will know what I really am*
*And then knowing me, will become one with me"*

Krishnajoo Razdan considers knowledge to be essential for Bhakti, for when knowledge dawns, Bhakti too gets deepened. He prays to the Guru therefore, for giving him the vision of true knowledge:

*Give me the vision of true knowledge*
*With oneness of mind bring me closer to yourself*
*O satguru show me light in this darkness*

A Bhakta is also a Jnani, he believes, and then proceeds to describe the characteristics of a Jnani - Bhakta devoting an entire poem to it. In the poem entitled 'Characteristics of a Jnani', he says:

*One who desires moksha, knows his Self*
*One whose ignorance has been dispelled*
*Know that person's body to be the sacred Kashi*
*One whose mind is immersed in God, who is dead while living*
*One who always remembers the dying moment and gives charity*
*One who has the good fortune of showing loving devotion to God*
*Who does not believe that the One has a second*
*He alone is Jnani—a man of knowledge.*

These lines clearly show that Krishna joo Razdan not only sees knowledge of the Self as related to love for God, but also finds no contradiction between Bhakti and the monistic view of God. God is infinite love Himself, and knowledge leads to loving devotion for Him, which in turn leads to liberation. So, in Krishnajoo Razdan's view, Bhakti results in the feeling of oneness and identification with the object of its devotion and it is this feeling that helps to grasp the Ultimate Reality. The Shaiva philosophy of Kashmir, which had a great influence on Krishnajoo Razdan, as did Advaita, goes little further and says that, more than just feeling. Bhakti is Shakti itself. This Shakti, according to Prof. Shiv Kumar Shastri "is introduced into mind for its own betterment, for its own spiritual uplift. For the purpose of creation, Shiva-Shakti manifest itself in the from of the world. This is the *pravritti* of Shakti. For the purpose of liberation, Shakti becomes Bhakti in the mind of the devotee and the dawn of Shakti in man is the dawn of Bhakti in him. So it is technically called by the Shaivites as Shaktipata. It is through this Shaktipata that a *sadhaka* begins his journey." ('Bhakti: A Contemporary Discussion': p.11 ). Call it Bhakti or Shakti, what helps in the attainment of liberation is divine grace itself which Krishnajoo Razdan calls *anugraha*:

*Atambodh kulyisuuy dayi anugrah mul*
[The tree of self- awareness has God as its root.]

But without Bhakti one cannot have Gods *anugraha* or grace and without *anugraha* there can be no *moksha*, which for krishan joo Razdan is the goal he most aspires to attain:

*Say Gopis to Udhavji :*
*"Stop preaching to us this dry jnana of yours.*
*It is by Bhakti alone that mukti can be attained".*

This takes us to another aspect of Krishnajoo Razdan's Bhakti — the non-dualism between God and Man which finds repeated mention in his poetry despite his belief in a personal determinate God. It is here that he seems to be influenced by the monistic view of cosmic reality presented by Kashmir Shaiva philosophy and Advaita Vedanta. Identifying his chosen deities Shiva and Krishna with *nirguna*, *nirmala* and *nirakara* Brahma, he express the view that God resides within ones own self and as the all—pervading spirit pervades the hole universe. There is no need therefore to look for Him outside, for what is outside exists inside also. And not only that, what is *saguna* and *sakara* (having attributes and form) is *nirguna* and *nirakara* (attributeless and indeterminate) also. He is one and also many. To quote some of the poet's own lines:

*A bubble appeared on the surface of water*
*But is it away from the ocean?*
*The bubble bursts and merges with water.*

*Brahma, the impersonal ultimate being was within me*
*But I lost my senses and looked for him outside*
*Like one who looks for his child in the whole town*
*When he is actually there in his arms*

Krishnajoo Razdan feels the presence of this indefinable, infinite and unfathomable spirit everywhere. He identifies his chosen personal deities Shiva and Krishna with it, directing his love and emotion to them. He sees Krishna as spring embodied whose coming turns the entire world lush green and Shiva to him is the King Swan resplendent in his white coloured plumes:

*Shyama has come, looking dark and beautiful*
*Wearing robes of the colour of spring*
*The whole world has become green*
*O look, spring has come!*

*The King Swan has come to my house*
*My desire has been fulfilled!*

Krishna Razdan does not find any incompatibility between faith in a personal God and the idea of an immutable and eternal reality with neither name nor form, for he believes that reality can express itself in different forms. This concept of Bhakti is based on a flexible attitude reconciling *saguna* and *nirguna*, feeling and reason, determinate and indeterminate, and accommodating contradiction and paradoxes. Behind it seems to be the Shaiva doctrine that everything is a part of everything else. On the one hand he accepts and tries to explain abstractions about the oneness of God and on the other hand he identifies personal deities with the supreme consciousness pervading the world, making no distinction between Shiva and Krishna and Rama or different manifestations of the Mother Goddess. In one of the beautiful lyrics in 'Shiva Lagna' his magnum opus, he presents, the idea of the non-duality between Shiva and Krishna thus:

*He whose complexion is dark as the night (Krishna)*
*Has come to our house, with morning in his arms (Shiva)*
*See how they look like the beautiful*
*black and white colours of the eyes!*

In many of his poems he uses light as a metaphor to describe God. This is due to the fact that his concept of the Ultimate Reality is rooted in Shaivism, which speaks of it as Prakasha and Vimarsha or light and self-consciousness. Unfortunately Shiva-Bhakti and Shaiva concepts of Bhakti have been constantly ignored by some theorists who have concentrated more upon the Vaishnava tradition and have identified Bhakti with devotion to the incarnations of Vishnu alone. But in Kashmir Shiva – Bhakti has always been the dominant current though the tradition of Vishnu Bhakti has not been ignored or marginalised.

Kashmir Shaivism forms the metaphysical base of much of Krihnajoo Razdan's poetry. This philosophy describes Shiva as the one inner soul of all individual souls. It is immanent in the universe and assumes form and is endowed with undivided I - consciousness in the form "I am this". The ultimate goal for the indvidual aspirant is, therefore, to recognise the essential identity of his soul with the Absolute. It is this monistic philosophy upholding the absolute unity of reality and oneness of the individual soul and Shiva that is reflected in its essence in Krishnajoo Razdan's 'Shiv Lagna' and in fact sums up his view about relationship of God, Man and the World.

# Some Miraculous Anecdotes of Pandit Krishnajoo Razdan's Life

**S.L.Razdan**

Once, when Pandit Krishnajoo Razdan was still a child, he came to understand that his parents were going to the shrine of Goddess Ragnya at Manzgom, a village in south Kashmir. He also expressed his desire to accompany them to worship the Goddess. Manzgom was some 20 to 25 kms. away from Vanpoh. The entire distance to and fro had to be covered on foot, which would be quite difficult for the young Krishna.So the parents somehow managed to give the young boy a slip and left. On coming to know that they had left without taking him along with them, Krishna felt utterly miserable. He wept bitterly, refusing food and water for the whole day. While weeping, he felt asleep and on getting up he found his lips covered with *khir*, a sweet dish made essentially of rice, milk and sugar, and he could instantly recall that a beautifully dressed lady had come, held him in her arms, wiped his tears asking him not to weep any more now that she had herself come to see him and fed him the *khir.* It is from that time that Krishna started composing devotional lyrics and poems.

Pt. Damodhar Lal Bhatt, a renowned advocate of Jammu and Kashmir High Court, recalls that during his school days once while treading towards his school, which was nearly 8 kms. away, he was suddenly stopped by Pt. Krishna joo Razdan, who enquired of him as to why he was not carrying the umbrella as rains were imminent. Pt. Bhatt looked around and saw that the day was quite sunny and the sky was very clear. Out of sheer deference, he returned home and carried his umbrella along. While still at school he saw dark clouds building ands it was raining quite heavily when it was time to return.

The same Mr. Bhatt recalls that while on his way back from school, he saw Pt. Krishnajoo Razdan repeatedly yelling at one Mukhti, a land-tiller's wife, who seemed to be engrossed in thoughts while spinning the wheel and was thus unable to respond to his calls. Mr Bhatt also tried to attract her attention but failed. Seeing this, Pandit Krishnajoo Razdan asked Mr. Bhatt to take out paper and pencil from his bag and dictated a poem in Persian eulogizing Mukhti's beauty and her concentration. Mr. Bhatt would often recall this poem whenever there was a mention of saint Razdan. In fact, a copy written in the hand of Mr. Bhatt is still available with one of Mr. Bhatt's relatives.

Pt. Nana Koul of Vessu recalls an incident that took place when he was a young boy. Pandit Krishnajoo Razdan was married into this family and would be offered the highest seat whenever there was any function. On one such occasion when some priests had been invited to a feast, Pt. Krishnajoo Razdan as usual was occupying the head seat. Tea was to be served in silver cups (*khos* in Kashmiri). There were 11 guests including Pt. Razdan and 11 cups. Nana Koul was asked to hand over the cups to the guests before the tea would be served from the samovar. But, instead of starting from where Pt. Razdan was seated, he started from the other end thinking that it mattered little. After handing over a cup each to the invitees, he was surprised to see that he was left with no cup for Pt. Razdan. In the meanwhile, one of the guests said that he had received one additional cup by mistake and returned it to Nana Koul for giving it to Razdan Sahib who did not seem to be happy about the whole episode. Pt. Krishnajoo Razdan indicated it to Nana

Koul that the latter's exalted status had developed a kink *(Nana Koul chani jal-o-jalalchi kursi gav az kham)*– the exact words Nana Koul would remember till his death.

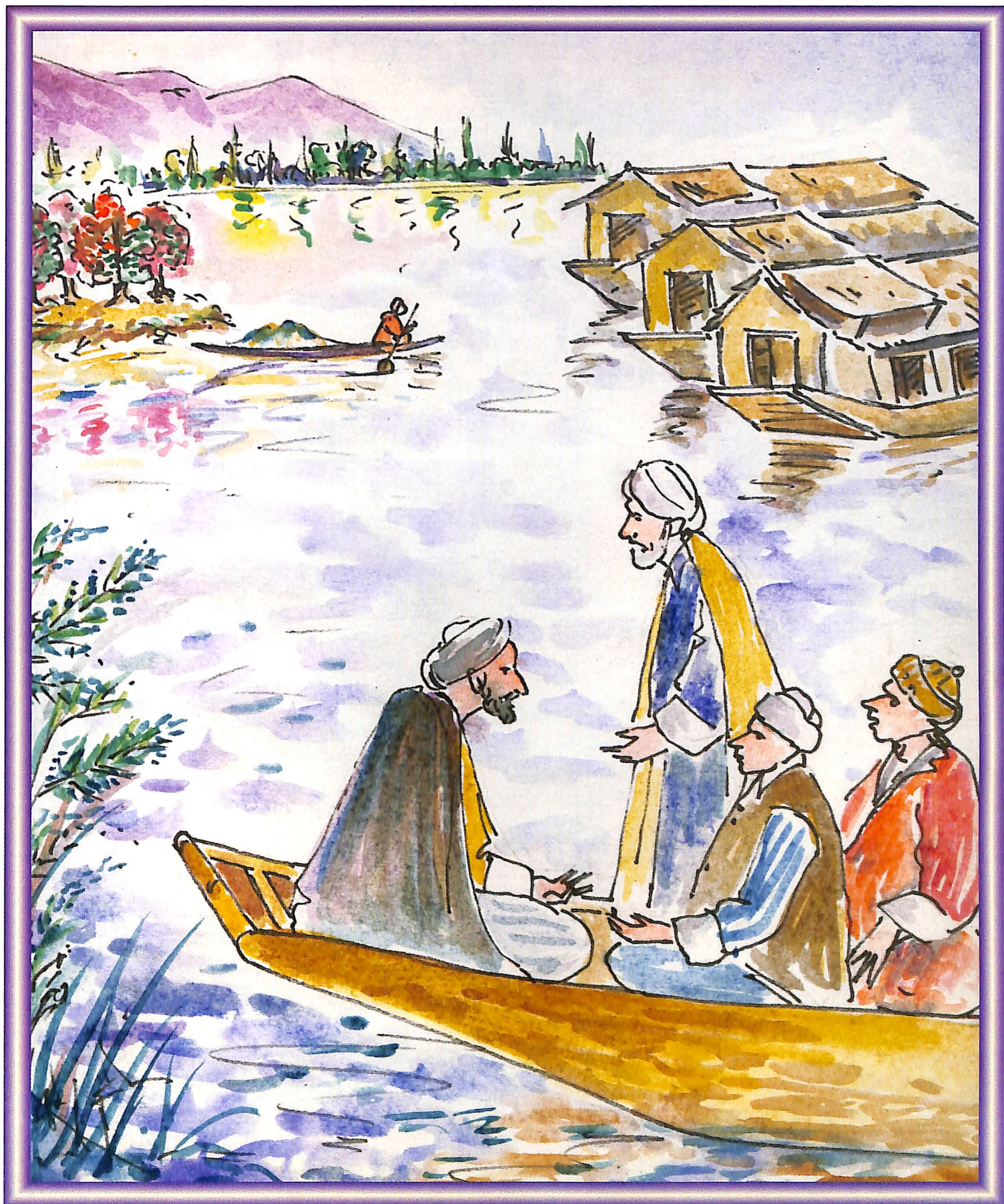
The matter was over or so everybody thought. Nana Koul developed a stomach-ache and was taken to a local doctor for treatment as usual. But he could not be cured. He was taken to different doctors, but did not show any improvement. The matter went on for six months, when his mother asked him to call on Pt. Krishnajoo Razdan who could be of some help in the matter. Nana Koul called on Pt. Razdan and told him about his problem. Krishnajoo Razdan asked him to return to his home and said that he would be visiting them in a day or two to sort out the matter. While the whole family was waiting eagerly for Razdan Sahib's arrival, the Mahatama made his appearance early in the morning and asked for a cup of tea to be prepared by Nana Koul himself after washing the utensils to be used thoroughly and that too personally. Caught in the situation Nana Koul did as told. Krishnajoo Razdan had half a cup of the tea and asked Nana Koul to take the leftovers. Immediately thereafter Nana Koul was fit and kicking.

Pt. Krishnajoo Razdan is said to have first met Maharaja Pratap Singh, the ruler of the state of Jammu & Kashmir, at Tulamula at Khirbhawani temple. The Maharaja enquired if the saint could tell him about the object of his worship. After thinking for a while, Razdan Sahib replied that he worshiped *shiver*, the bird that digs out the anger of Lord Shiva. Surprised, the Maharaja perhaps wanted to put Razdan Sahib to another test and told him straightaway that he would regard him a saint if the water of the Khir Bhawani *kund* changed colour seven times. The colour of the water did change seven times to the utter astonishment of the Maharaja, who almost instantly became ardent admirer of Pt. Krishnajoo Razdan.On every visit that the Maharaja made from Jammu to Srinagar or vice-versa, he would seek Razdan ji and present him with a *nazrana* of Rs. 11. Vanpoh, the native village of Pt. Krishnajoo Razdan, is situated on the highway connecting Jammu and Srinagar

Once, the Maharaja of Poonch, a cousin of Maharaja Pratap Singh, was seriously ill and Krishnajoo was approached to render some help. Mahatma Razdan said that he should give as much *annadan* (gift of food) as possible as he was unlikely to survive. While the Maharaja was preparing to convey this message, a telegram was received from Poonch informing that the Maharaja was improving. With doubts in their minds, Maharaja Pratap Singh's people again approached Pt. Krishanjoo with the latest news.Razdan Sahib told them that the Maharaja's end was very near. While they were returning with the prediction made again by Pt. Krishnajoo, another telegram was received from Poonch informing of the death of the Maharaja.

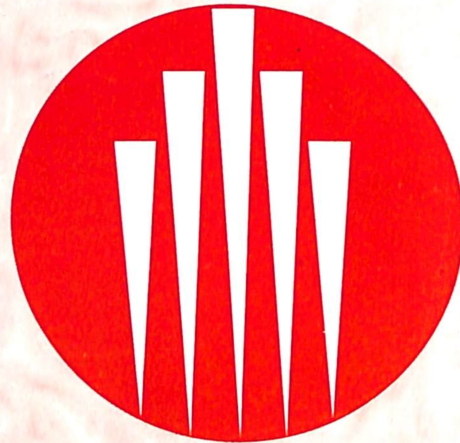
Pt. Krishanjoo Razdan was himself a disciple of Pandit Mehtab Kak. Because of his talent as a poet, his co-disciples would feel jealous of him and tell the Guru that he was actually copying others and there was no originality in him. Once the Guru along with his disciples including Krishnajoo, were enjoying the scenic beauty of the Dal lake from a houseboat. Suddenly the Guru asked Krishnajoo to recite a poem about the Dal Lake. It was then and there that the most popular lyric of Krishna Razdan, *"vela vot mela kuy darshun me haav, dal ma hosha tsestakiy pamposh chhav."* The equivocal lyric deals with all things and situations relating to the Dal lake on the one hand and the lessons of moral upliftment on the other. This was perhaps the Guru's way of silencing the disciples.

One day, one of Krishnajoo Razdan's disciples was heading towards Vanpoh to call on him carrying a basket of sweet apples for him. Having walked quite a distance on foot he felt hungry and picked up one or two apples from the basket to eat. On reaching Krishnajoo Razdan's residence he was surprised to hear from swami that the gift had lost its sanctity by his defalcating act and that he would therefore not be in a position to accept it.



गुरु एवं गुरु भाईयों के साथ डल झील पर नौका विहार करते
हुए कृष्ण जू राज़दान अपनी तत्काल रचित कविता सुना रहे है।

## With Best Compliments From



**SUNCITY**

**PROJECTS LIMITED**

***Regd. Off. :***

B-10, LAWRENCE ROAD INDUSTRIAL AREA,
NEW DELHI-110 035 (INDIA)

***Mktg. Off. :***

48, Tolstoy Lane, New Delhi-110001
Tel. : 23327771, 23327735, 23327753 Fax : 23736758

e-mail : info@suncityprojects.net **Visit us at : www.suncityprojects.net**

# Devotional Poetry As Exquisite Verbal Painting

Prof. Kanhaya Lal Moza

There are numerous passages in *'Shiva Parinay'* where Pt. Krishnajoo Razdan stands out as an exquisite verbal painter of the Kashmiri Hindu social ethos of his times. Instead of hurrying through such narrative segments we observe him luxuriating in deliberate verbal strokes for conjuring up some captivating aspects of the nineteenth century Kashmiri Hindu life. Actuated by infinite patience and wonderful artistic discipline, the immortal bard's creative effort illustrates his consummate artistic detachment and high objectivity. In this respect he stands uniquely apart from all other devotional poets in Kashmiri literature. Krishnajoo Razdan as a verbal painter is a topic of vast critical scope. Here I consider only two pieces from the immortal bard's *Shiv Parinay* for illustrating this scintillating feature of his great poetry.

In *'Daya Gon Gyav Pyath Tumbakhnare,'* Pt. Krishnajoo Razdan celebrates the *maanzi raath* of Girija, the divine consort of Lord Shiva. The poet wonderfully conjures up the atmosphere of a contemporary Kashmiri Hindu household on such a festive occasion. The guests in the magnificient hall designed and erected by King Himal (Himalaya) for the matrimonial celebrations are crowded around the cauldron containing henna and they are singing the praises of the Lord to the tune of *tumbakhnaar*. The assembled guests have been singing throughout the night to the great appreciation of the Lord who is himself both Shiva and Keshava. They have been enjoying nectar trickling down from the heavens. They have sung away the night and the sun has made his presence felt. The shower of bliss sent by spangled *Siriya Div* has made flowers to bloom in floral tufts. The poet here beautifully portrays a Kashmiri *maanzi raath* gradually yielding place to twilight dawn. The cauldron containing henna is meticulously garnished with gold. All the assembled guests sitting around it have applied henna to their hands and feet singing the praises of Ishaan to the melody of the percussion instrument. There are jubilations and celebrations everywhere and goddess Divath has brought good fortune in abundance. The night of maaenz has come after jostling away numerous nights in succession. Jyotirup Shiva renders bringing of Laayi Boi and Ganga Vyas imperative and every object around gets covered by Shiva's sacred ashes. On this festive occasion, goddess Barkat has come laden with an inexhaustible treasure of bounties. Goddess *Siddeth* entering the portals sits at the window. She listens to the praises of the Lord sung to the beats of the *tumbakhnaaer.* The bride Parvati, whom Pt. Krishnajoo Razdan calls also Vaak Devi, the goddess of the primeval sound, is embellished by goddess Sharada for the matrimonial occasion. Goddess Siddha Laxmi binds her hyacinth hair into charming plaits.

In *'Daya Gon Gyav Peth Tumbakhnaare,' Pooshi Nool* (golden oriole) symbolizes human consciousness and *Vana Haaer* (starling) is the body. Razdan Sahib obviously desires that human consciousness should subordinate the instrument of body to singing perpetually the praises of the Lord. This ideal was preached long ago by the great Greek philosopher Socrates. In recent India, saint Razdan and Mahatma Gandhi strove assiduously for the realization of this ideal. In *Daya Gon Gyav Peth Tumbakhnaare,* Pt. Krishnajoo Razdan catalogues Divath, Ganga Vyas, Laayi Boi, Barkat and Siddeth, the typical characters from Kashmiri Hindu pantheon, alongside with the pan-Hindu beneficient goddesses like Vakh Devi and Sidda Laxmi.

*In Samivoo Lukav Sona Shin Vaalav,* Pt Krishna Joo attempts a painting of Kashmir landscape under a chaste immaculate sheet of snowy alabaster. The poet wonderfully captures the stir and commotion which a heavy snowfall inevitably ushers into the heavenly vale. As Lord Ishaan accompanied by horrible creatures constituting his matrimonial procession is asked by Girija's relations to produce ornaments for bedecking the bride, he brings down from heavens filigree flakes of gold. At this point of narration Razdan Sahib luxuriates in the verbal painting of Kashmir landscape laced by thickly falling filigree flakes of snow. Kashmiri Hindu populace crowds wooden roofs covered with birch-bark sheets and thick layers of clay for pushing down massy loads of scintillating pearls and golden snow. The crumbling down of thatched cottages under the heavy load is universally feared. The hillocks of snow in courtyards obliterate the view of the mountains beyond and touch the windows of slumberous apartments. The impecunious inhabitants of the terrestrial globe shake off their impecunity for good. They find it difficult to garner the massy wealth in baskets and other containers; they fear the towering of their paths above the roofy turrets; they propose repairs of barns and garners for storing the precious wealth; the streets and alleys become bleak as shopkeepers rush away to their homes after shuttering close their shops. Indra informs the supplicating relations of Parvati that their cries are bound to be futile unless Lord Shiva himself sweeps the glossy firmament off the pearly rich pregnant clouds. At the conclusion of the poetic artifact saint-poet Razdan reaffirms his conviction that Shiva is realizable only through an unguarded plunge into the *mysterium tremendrum* constantly dogging human existence.

Evaluating poetry mainly on the basis of the profundity of the communicated philosophical thought and experience is a medieval malady, which continues pestering literary critics even today. The eulogizing frenzy persistently generated by the Lalleshwari is a manifestation of the same atavistic critical predilection. It is due to the same reason that numerous scholars have miserably failed to appreciate the beauty of the poetic artifacts where saint-poet Razdan, adopting the Shiva Mahapurana as scaffolding, luxuriates in the painting of Kashmir landscape and Kashmiri Hindu life. In medieval times poetry was a handmaiden of philosophy. We observe a persistent recurrence of this phenomenon down the centuries. Pt.Krishnajoo Razdan deserves being highly credited for his mature artistic efforts to disentangle poetry from philosophy. Most of his poetic compositions transparently objectify his deep conviction that the principal concern of literature should be to portray and not to preach.

# PANDIT KRISHNAJOO RAZDAN AND HIS 'SHIVA LAGNA'
## A Kashmir Shaiva Perspective

Dr. Advaitavadini Kaul

Pandit Krishnajoo Razdan is regarded as one of the towering saint- poets of Kashmir who translated his deep insights about Kashmir *shaiva sadhana* into some of the best poetry ever written in the Kashmiri language. The tradition of *shaiva sadhana* has deep roots in the soil of Kashmir and has existed there from very early times; but it was only in the 9th-10th century that it flowered into a full-blown and distinctive school of Indian philosophical thought. The great Shaiva thinkers of Kashmir, who were well versed in other branches of knowledge also, must have found the serene atmosphere prevailing in the pious land quite conducive for nurturing their contemplative faculties.

A unique feature of the Shaiva philosophy of Kashmir is that its doors are open for every human being motivated by earnest spiritual quest, without any discrimination of caste, creed, colour or gender. As such, its teachings are universal in its import and positive in its approach. According to this philosophy, the universe is a manifestation of Shiva and Shiva means *ananda* or pure bliss. It is the fullness of this 'bliss' that overflows freely into the joyful activity of creation or manifestation of this universe. Creation thus, springs from the Reality that is nothing but goodness and bliss. The individual soul too is a part of this 'bliss', but tainted by impurities it becomes limited. The whole of creation then, comprising sentient beings and insentient matter,is identical with Shiva in essence, but different in form and function so long as it remains in the state of impurity.

The purpose of creation, according to Kashmir Shaivism is to provide the individual soul with proper opportunities to strive for salvation, which is possible only with the maturing of impurities (*mala paripaka*). The reality becomes obscured for the individual soul due to ignorance and limitation, though otherwise it is all 'bliss'. As one cannot see Shiva due to the obstruction caused by the 'impurities', Shiva is also said to be the liberator who frees the individual soul from this obstruction. He creates opportunities for it to strive on the path of self-liberation. This is *anugraha* or *shaktipata*, the grace of the Lord. Self-realization is thus gradual evolution of the individual soul – a matter of self-purification. The more the individual consciousness becomes free of impurities, the more light illumines up his path of self-realization.

Both Vaishnava and the Shaiva thinkers believe in the power of God's grace combined with self-effort. This grace is relevant both in worldly enjoyment and also in liberation. Material prosperity as well as spiritual progress, i.e. self-realization, can be attained only by the grace of Shiva.

Kashmir Shaivism prescibes three means for self-realization: *shambhavopaya*, the supreme means; *shaktopaya*; the medium means, and the *anavopaya*, the inferior means, based upon different stages of *yoga sadhana*.

Pt. Krishnajoo Razdan was the follower of this tradition of *shaiva sadhana*. It is quite certain that it

is this yogic *sadhana* that he practiced. As he himself states:

यूगॅचि डबि छय लछि बज़ॅ हेरय
कृष्णास फेरय निश मो'कलाव
ह्योर खारुन छुस गुडन्युक पोवुय
परम शक्ति गव लछि नोवय ह्यथ

(SL, p.15)

One has to ascend many steps to reach the attic or the highest stage of yoga. Let Krishna (the poet) not face obstacles, as he is yet at the very first stage. The Supreme Energy is wedded to one who has many names.

At another place the poet as a spiritual aspirant says:

शिव करमी छुस कृष्णॅ राज़दान
मनॅ किञ धारनायि धार चोंन ध्यान
शुभ लक्षण प्रथ शायि चोन थान
सदाशिव समियो वन्दयो पान

**(SL, p.16)**

I, Krishna Razdan, am a *Shivakarmi* or the follower of the Shaiva tradition. Meditating upon you, O Lord, I find your auspicious abode in every place. O Sadashiva, I offer my entire self to you.

Pt. Krishnajoo Razdan has been prolific as a poet, having written a great number of *lilas* or devotional poems. Recently, his grandson Pt. Shyamlal Razdan, has brought out his entire works in three volumes in the Devanagari script under the titles: 'Shiva Lagna' (SL), Krishna Darshun (KD), and 'Krishna Vani' (KV). In all these poems the poet has looked upon the world through the lense of a Shaiva devotee, reflecting upon various aspects of human existence. History and geography, flora and fauna, temples and places of pilgrimage, local gods and goddesses, mythological stories and prevalent traditions- everything forms their subject matter.

Here, I shall confine myself to an assessment of his well-known poetic work, the Shiva Lagna. It is about the divine union of Shiva and Shakti, the two fundamental aspects of the Shaiva thought. Their union is an occasion of immense joy, celebrated as much by ordinary devotees as by those who have attained high spiritual merit. 'Shiva Lagna', presents a narration of marriage of these two fundamental aspects as an occasion of merriness for both the common human beings as also for spiritual aspirants. The poet says:

यि सोरुय शक्ति नाथॅन्य छुस वनान गीथ
सु मायातीत खान्दर छुम वनुन हीथ

**(SL, p.203)**

[All that I sing (Shiva Lagna) is (actually) the glory of Shakhtinatha, Shiva. Though He is beyond *Maya,* the 'marriage' gives me a pretext (to sing His praises)].

The work begins with reverence to Ganesha, the Remover of Obstacles, and then follows this prayer to the guru:

शब्दॅ प्रकाशॅ वारॅ वासना गालतम
ह्यो'र कुन खारतम पज़ि रज़ि सूॅत्य
उपनिषदन हुन्द सिर म्ये ति भावतम्
सतग्वरॅ हावतम घटि मन्ज़ गाश

**(SL, p.7)**

[By the light of your words remove my impurities (*vasanas*). Uncover the secrets of the *Upanishadas* to me. Through such real method elevate me, O my teacher! O my true master, lead me from darkness to light.]

Then follows obeisance to the creator of the universe:

परमात्मा युस छु परमानन्दय
तमिसय छुय स्वच्छन्दय नाव
स्वच्छन्दस निशि माया द्राये
ओम नमह शिवाय कर ओम नमह शिवाय

**(SL, p.9)**

[The Supreme Self is all bliss. That very Supreme Self is known as *Svacchanda* or one of unrestrained will. From *Svacchanda* evolved *maya*. Pay (your) salutations to Shiva; say *'Om namah Shivaya'*.]

It is from *maya*, says the poet, that Lord Vishnu and Lord Brahma emanate and then the evolution of the universe takes place. Uma taking birth from Prajapati gets married to Shiva. The other twenty-seven daughters of Prajapati get married to the Moon-god. This forms a constellation, which gives rise to time consisting of moments and quarters.

Ego gives rise to imbalance in the mind of an individual. That is why when Daksha Prajapati performs his great *yajna*, he does not invite his daughter Uma and son-in-law Shankara. From the angry form of the goddess is born Jwala, whose shrine is located in the village Khriva in Kashmir. The poet offers his prayers to the goddess along with her other forms. Sati is said to have immersed her body through the power *(agni)* of yoga. The anger of Shiva too takes the form of Virabhadra to destroy Daksha's ego. So Brahma, Varuna, Mangala, Budha and Brihaspati take refuge in Shiva, offering prayers to Him. The poet offers prayers on his own behalf also. All these prayers contain mystic thought of the highest order. Daksha, realising the falseness of his ego also prays to Shiva. Feeling ashamed and repentant, he becomes indifferent to wordly desires and prays to Shiva. It is on this note that the *yajna* performed by Dakshaprajapati concludes. On this occasion Rishi Narada happily plays on his Sitar and sings the praise of Shiva. Thus ends the first part of *Shiva Lagna*. with the poet too offering his prayers to Shiva.

In the second part, the poet narrates the marriage of Mahadeva Shiva and Parvati. The poet praises the beauty of Gauri or Parvati who from very early age is drawn to Shiva through the impressions of her previous birth. She starts practicing penance and remains in continuous meditation. Through Parvati's prayers to Shiva, the poet tries to show that the two aspects of the Supreme Reality are in fact one, like an ornament and its beauty, day and night, ether and the universe, the pomegranate and its seeds, the moon and the sun, *atma* and *prana*, beads and thread. While meditating, Gauri becomes one with Shiva. Shiva, in the disguise of an ascetic tests her devotion and finds it firm and unshakable. Nothing that the ascetic says dissuades her from her path. His words anger her and she strongly rebuffs him. Pleased, Shiva appears before her in his true form. Gauri (Parvati) praises him as the all pervading Lord. Thereafter follows the description of their marriage, in which Shiva is shown as superior to all gods. For Shiva, all are one and equal. In this description we find expression of profound yogic mysticism. After the reception of the Barat the poet describes the symbolism of the *vyuga* (a decorative and colourful *mandala* on which both the groom and the bride stand). Thereafter *dvarapuja* (ritual performance at the entrance of the house) takes place before they enter the *lagna mandapa* for performing the marriage *(lagna)*. The term *lagna* signifies the auspicious moment of the unification of the two fundamental aspects, Shiva and his Shakti or Cosmic Energy. *Poshapuza*, (worshipping) the bridegroom and the bride as Shiva and Shakti with flowers is even today

considered a special aspect of Kashmiri marriage ritual. Interestingly, while describing it, Pt. Krishna joo Razdan mentions the names of different local goddesses along with their respective spouses and their shrines in Kashmir. Shiva does take various forms but this is something that one has to realize in one's own mind. With such realization, every thing becomes *Shivamaya*— pure bliss. Other typical Kashmiri Pandit wedding rites like *mananmal* and *daybata* are also described and given a symbolic interpretation. Asked for gift of gold ornaments appropriate for the bride, Shiva asks what gold is like? Is it like food that sustains one's life? Or precious because it is rare? If that is so, why should not all high and low become similar by easily acquiring it? Surely then there will be no need for any one to become greedy for it. And so he makes golden snow fall from the sky at that place.

Trying to elaborate this point, the poet describes how the whole world was covered by the golden snow as the gift for the bride from her home to be. In other words, the Almighty made prosperity available to all, so that every one felt satisfied. But how much wealth can a person accumlate? The snow itself is a wealth bestowed upon the world by nature. But it has to be timely and in appropriate measure. This reminds one of the terms *satya and rita* meaning the Truth and the Cycle of Truth, referred to in the Vedas.The people try to gather as much golden snow as possible, but soon realise the meaning of rita or 'cycle of truth'. They start praying that the excessive snowfall should stop lest it proves dangerous. As such, as the sense of non-duality dawns, there is nothing more that one desires. All becomes one. The greatest wealth is to attain unity with Absolute Truth i.e. Shiva. On reaching this highest stage of *yoga sadhana*, one must not be influenced by material desires which can be a source of great distraction for even a yogi and make him oblivious of the higher goal.

So much golden snow falls that people push it down from their roofs lest they cave in because of its weight. But the snow accumulates in their courtyards in big heaps till there is no place where they can store it. While they pray to Shiva, Indra comes to their rescue and asks them to surrender before Shiva's will. The earth too finds the snow too heavy and prays to Shiva to stop it.

Realizing their real nature, people submit before Shiva's will. The whole poem is replete with mystic meanings. They realize that the natural order is to be maintained for the sustenence of mankind. Responding to the prayers, Shiva creates the symbolic mount Sumeru and everything becomes normal again. Himalaya is then shown singing the praises of Lord Shiva and Lord Vishnu, and the poem refers to the significance of *Shivaratri*.The Goddess *(Para Shakti)* is recognized as the virgin goddess and thus the symbolic meaning of giving gifts of money to daughters on the occasion of Shivratri *(herath bog)* becomes clear. Offerings (to the Goddess) in return, bestow blessings upon individual souls. She is the bestower of grace, which is called as *shaktipata*. Vatuka Bhairava (Shiva in the form of a boy) appears on this occasion along with his companions to bestow wisdom upon all to enable them to acquire this divine grace. Krishnajoo Razdan adds to the local colour by relating several most stories about Shivaratri. In the end, Himalaya in his prayer says that Vishnu and Shiva are one:

कृष्णस शिवॅु रूपॅु दर्शुन दितॅु चुय
सुय चुय सुय कीवलॅु छुखनु जुय
शामॅु प्रभातॅु रूॅफ हावतम कालै
नादॅु ब्यंदॅु परमानंदॅु नंदॅु लालै

**(SL,p. 207)**

[O lord Vishnu, reveal yourself to Krishna (the poet) in the form of Shiva, because He (Lord Shiva) and you (Vishnu) are one and not two. O Shyama, reveal to me your true form, bright as the morning. O Eternal Sound and Dimensionless *bindu*, O son of Nanda, you are Supreme Bliss itself.]

Shiva is pleased with the words uttered by Himalaya. He advises him to try to know the real nature of existence as that alone can lead him from ignorance to enlightenment. And that is possible only when one is devoid of desires, which is what renunciation means. It is very important to understand the real meaning of renunciation. In Kashmir Shaiva terms it means that one should be unattached to material things,even while enjoing them fully. Says Krishnajoo Razdan:

सत् ज़न बन मन कर कालासुँय
बस्ती मंज वनवासुँय रोज़
च्यतुँ किन्य भस्मुँ मल वल अतलासुँय
सादुँ प्रक्रच् सन्यासुँय रोज़
ओम शिव शंभू कर अभ्यासुँय
बस्ती मंज़ वनवासुँय रोज़

Be a true human being, with your thinking high as mount Kailasa. That will enable you to remain unattached (*vanvasa)* while enjoying the manifest nature (*basti*) in full. While enjoying, you have to be aware of the real nature of that enjoyment which aims at being unattached to it. Be continuously aware of your oneness with the Shiva, who is Supreme Bliss. Thus continues the concluding part of the marriage. Invitees now start going back. Expressing this as an experience of the highest yogic state, the poet says:

समाज़ व्यथानस कुनुय म्वख गौ
अन्त: स्वख गौ सर्व व्यवहार
द्रख चोल म्वख होव ब्रह्मानंदन
संत बीठ्य चन्दन कुलि नुँय तल

At this stage of *turiya*, meditation and activity become one as all actions now aim at the inner happiness. Sorrow has disappeared as supreme bliss has become apparent. O look, the saints are sitting under the sandalwood tree.

Praying to Narayana, the poet narrates the story of Lord Krishna and says:

'हरस' सॉंपुन 'हरी' कीशव बन्यव 'शिव'
अद्वैयतै रूप नारायण प्रकट गौ

Hara (Shiva) became Hari (Vishnu) and Keshava (Krishna) became Shiva.Narayanna is the non-dual form of Shiva and Vishnu. With the marriage over, the groom and the bride, *Shiva* and his *Maya,* depart, accompanied by the eight *siddhis* (*ashtasiddhi*) amidst recitations from the Panachastavi, and Shankaracharaya's Saundarya Lahiri (both these works are popularly recited in Kashmir):

शेयव तरफौ वनान तस भैरवी आस
परान तस पाँछ् तव पञ्चस्तवी आस
स्वंदर वाणी स्वंदर लहरी परान आस
महा माया महा माया करान आस

From six directions Bhairavi (*goddess* bestowing fearlessness) was resonant. Recitations of the five hymns of *Panchastavi* and the beautiful verses of the Saundarya Lahiri singing praises of Mahamaya were being recited.

This is followed by a prayer to the Mother Goddess in the form of Sharika, one of the most popular local deities. Apart from referring to the shrine of the goddess at Hari Parbat in Kashmir, the poet refers to the great Shaiva and Vedanta philosophers Abhinavgupta and Shankaracarya. The poet underlines the significance of ritual performances (*karma- kanda*) saying that as collective religious

activity these could lead one to the highest state of enlightenment. What he wants to convey is that ritual performances represent the different ways of attaining the Supreme Reality. Then comes a long philosophical discourse on the signifcance and meaning of Shivaratri. Shivratri is the "Night of the Attainment of Truth", he says, because this is the auspicious moment when one can receive the ambrosia of God's grace:

छ़ोच़ प्रकृथ साञ हागिञ लोच़ ज़ान
भवॅ सरुॅ सदरस मंज़ छे ईरान
म्वख्तुॅ प्रावुॅनाव त्राव शक्ति पातुॅ बरसाथ
शिव राच़ हुँदि द्वह दै सतुॅरात

(SL,p .250)

We are ignorant like the musk deer, (who looks for scent in all directions when it is in its own navel), adrift in the ocean of existence. Shower on us the pearls of grace through "*shaktipata*" as Shivaratri is indeed the Night of Truth.

Referring to the worship of Vatuk Bhairva on this occasion, he says:

वुटक बारव नाथुॅ छुख चुॅ शंभू नाथ
साथी ह्याथ छुख साथुॅय साथ
पालुॅ वुॅनि सालुॅ युॅतुॅ पालुॅ वुॅञ छि शिव राथ
शिवुॅ रॉच़ हुँदि द्वह छै सतुॅरात

(SL,p .250)

O Vatuka Bhairva! You are none other than Shiva Himself. Accompanied by your companions You are always with us. O Protector! We extend our invitation to You, so that we are able to observe Shivaratri. Shivaratri is indeed the Night of Truth.

Shivaratri, says Pt. Krishnajoo Razdan, is great as it is of all the nights the Night of Truth and Bliss. This is the time when helpless souls expect to receive the boon of bliss, as during this night the fundamental elements (*karana devatas*) are in playful action. That is why in every household on this occasion clay images of various deities related to the worship are purchased. One may understand it as an invisible workshop in which the elements viz. earth, water, fire, air and ether congregate and with all artisans showing their skills, the formless one takes form. Shivaratri is observed, Pt. Krishnajoo Razdan says, traditionally since ancient times. Acharya Abhinavgupta, who has helped thousands to cross the ocean of this world, has been *a sadhaka* (practiser) of Shivaratri. The poet in the following verse emphasizes the importance of keeping awake during the night:

फकथ हुश्यार रोजुन बड कथा छै
स्वरुन ह्यो' केंह करुन ह्यो' क्या कथा छै
ह्यकख नै केंह वटख व्यस्तारसुॅय गिंद
वुन्योंदुर कर शुर्यन सूॅत्य ज़ारुॅसुॅय गिंद

It is great to keep awake on this night. Why don't you do something—meditate upon God. And if you cannot do that, then play with the ritual objects related to the worship of *vatuka*. Keep awake. If you can do nothing else, at least play a gambling game with your children.

While interpreting various rituals pertaining to Shivaratri, Pandit Krishnajoo Razdan points out that the Shaivism is a celebration of life.

कॅम्य को'ड युथ रुत आश्चर्य मथ
ख्यथ च्यथ शांत गयि सा'री ह्यथ
यूगुॅ धर्मसालि वोत भूगुक बाम
असि वुछ क्वछि क्यथ सुबुॅ ह्यथ शाम

SL ,p. 255)

Who has invented this wonderful doctrine that teaches one to seek fulfillment through enjoying life. This *dharamshala* (pilgrim's inn) of yoga has a roof of *bhoga* or wordly enjoyment. With (the introduction of) this (doctrine) (the body of) a Yogi (which is) like the house of *dharma*, reaches the roof of enjoyment. (A *dharamashala* is a place open for all, so is yoga for elevation of souls).

Shivaratri and the cult of Shakti point to the oneness of the two aspects of reality, like morning in the lap of the night. The union of Shiva and Shakti is a state beyond description. It is a state in which the formless one is in his abode of nothingness, leaving no sign or clue that can help one to describe Him.

न्यरंज़न वा'तिथुय प्यव शुन्य थानस
निशाना कुस वनिय तस बेनिशानस

**SL, p.262**

[The formless attaining the state of formlessness leaves no sign to be described by.]

In the concluding verses of *Shiva Lagna,* Pandit Krishnajoo Razdan sings praises of this aspect of the Supreme Reality:

रूपुँ रस्यति कुस ज़ानि कमि सनुँ नयि गोख
दयि गोख शून्य शअयि ह्यथ विज्ञान
साधुँ सत्संगुँ चे न्यरनयुँ नयि गोख
जितेंद्रियि गोख लयस्थान

**SL, p.263**

[O Formless One, who knows which way have you gone. O Almighty! Your abode is the void where no science or worldly knowledge can reach. (This is indeed an experience beyond description). Only association with the good and the virtuous can show the way to one. O Conqurer of the Senses, You are where there is nothing but oneness.]

In one of his most beautiful poems, the saint-poet prays for being transported to the highest stage of *jnana:*

अन्दर चा'निथ ज्ञानुँकि घरे
हावुम चूरिम पोर
तथ मंज़ रूज़िथ आनंद भरै
बु क्या करै ज़ोर

**SL, p.267**

[Take me inside through the gate of wisdom and show me the fourth stage (*turiya).* Staying there I will enjoy bliss.]

कृष्णास मुचुराव भावुँकि बरै
कुनी वरै तोर
युथ लरि चेय ह्यथ बसि अमरै
बु क्या करै ज़ोर

**SL,p. 267**

[Open the doors of devotion for Krishna to reach that state (*turiya).* Let there be no bolt on that door, so that it opens by just one push. In that house of immortality I would like to dwell with you. This is what I insist upon, O Lord.]

Shiva Lagna thus expresses highest mystic experiences in its verses, experiences that are inspired by the Shaiva mysticism of Kashmir. It was this tradition of *sadhana* that Pandit Krishnajoo Razdan followed, a tradition that has been integral to the Kashmiri Pandit way of life.

# कृष्ण जू राज़दान की सम्पूर्ण रचनावली

सोमनाथ वीर

संत कवि कृष्ण जू राज़दान की जीवन गाथा तथा रचनावली के बिखरे पन्ने जोड़ कर ग्रन्थ रूप में प्रस्तुत करना दुष्कर तो था परन्तु रुचिकर भी था। यह कार्य कल्चरल अकादमी, श्रीनगर द्वारा सौभाग्यवश मुझे सौंपा गया। तब तक कितने ही विख्यात लेखकों तथा पंडितों ने यह कार्य करने का प्रयत्न किया था। किसी ने कैसेट बनवाकर कार्य अधूरा छोड़ा तो किसी ने दौड़ लगाकर राज़दान साहब के काव्य सागर को देखा और भयभीत होकर किनारे पर ही ठिठक गया। परन्तु गुरु कृपा ऐसी थी कि मैंने ढाई वर्ष तक अनथक परिश्रम किया और अन्त में संग्रह निकालने में सफल हुआ।

रचनावली बनाने के लिए मेरे पास केवल दो छपी हुई पुस्तकें थीं। एक जॉर्ज ग्रियर्सन द्वारा प्रोत्साहित मुकुन्दराम शास्त्री महामहोपाध्याय का संस्कृत अनुवाद सहित 'शिव परिणय' जिसका कागज़ टूटता था। परन्तु 'शिव परिणय' में एक तो पाठ भेद था और फिर इसमें राज़दान जी की सारी कवितायें नहीं थीं। दूसरी पुस्तक राज़दान साहब के भांजे स्व. हरीहर कौल द्वारा प्रकाशित 'हरीहर कल्याण' थी। परन्तु जैसे कि मुझे ज्ञात हुआ था यह पुस्तक कृष्ण दास जी (कृष्ण जू राज़दान) से पूछे बिना ही छापी गई थी और जब संत कवि राज़दान जी ने उस पुस्तक को देखा तो उन्होंने इसे 'नदर्य मोंजि' (कमल ककड़ी की पकौड़ी) कहकर ठुकरा ही दिया क्योंकि इसमें कुछ त्रुटियाँ थीं। 'नदर्य मोंजि' नामक पुस्तिका मुसलमान द्वारा पाले गये कृष्ण जू राज़दान के एक बेटे आनंद ने छापी थी परन्तु मुझे उस की कोई प्रति प्राप्त नहीं हो पायी। राज़दान साहब के पुत्र पं. शंकर रैना के कई पुत्र है जिन में एक का नाम पं. जिया लाल रैना था जो अब इस संसार में नहीं है। राज़दान साहब के चार शिष्य थे जिन्होंने के जीवनकाल में ही उनकी रचनाओं को लिपिबद्ध करके सुरक्षित रखा था। स्व. जिया लाल जी ने भी राज़दान जी की लगभग सारी कविताएं की प्रतिलिपि बनाकर सुरक्षित रखी थी। परन्तु कुछेक स्थानो पर पाठ भेद था और कुछेक कवितायें इस में नहीं थी। कृष्ण जू का एक और कविता संग्रह सत्थू, श्रीनगर के श्री निरंजन नाथ के पास हस्तलिखित रूप में था पर वह संग्रह भी आधा-अधूरा निकला। शिष्यों द्वारा लिखी कोई प्रति नहीं मिली। अतः मेरे पास एक चुनौती उपस्थित हुई कि मैं किस आधार पर सम्पूर्ण रचनावली का गठन करूं। काफी सोच-विचार के बाद मैं इस परिणाम पर पहुंचा कि छपी हुई पुस्तकों में पहले स्थान पर 'शिव परिणय',दूसरे पर स्व. जिया लाल जी द्वारा लिपिबद्ध संग्रह जिसको मैंने 'वनपुह पाण्डुलिपि' नाम दिया तथा तीसरे स्थान पर 'हरीहर कल्याण' रखा। स्व. दामोदर भट्ट, एडवोकेट ने मुझे राज़दान साहब की जीवन उनकी फ़ारसी कवितायें तथा अन्य घटनाओं से अवगत कराया। उनको राज़दान जी की फ़ारसी कवितायें याद थीं। स्व. जिया लाल जी भी कविता पाठ के अच्छ ज्ञाता थें अतः इन सब सन्तों का लाभ उठाकर मैंने लगभग साढ़े चार सौ कविताओं का ग्रन्थ तैयार किया जिसे कल्चरल अकादमी ने छपवाया। अब अकादमी दूसरा संस्करण छाप रही है जिसमें पृष्ठों की संख्या बढ़ गई है।

पहले संस्करण में मैंने राज़दान साहब के जीवन तथा काव्य पर किये गये विश्लेषण का विस्तृत ब्यौरा दिया था। परन्तु इतने बड़े कार्य को सम्पन्न करते-करते कुछ त्रुटियाँ रह गईं जिसे समय के अभाव के कारण मै दूर न कर सका था। उन की जन्म तथा मृत्यु की तिथियों के बारे में मुझे स्व. जियालाल जी द्वारा दी गयी जानकारी पर ही निर्भर रहना पड़ा तो तिथियों को ईस्वी संवत् में रूपान्तरित करने के लिए स्व. मधुसूदन शास्त्री (बिजबिहारा) से सहायता मांगनी पड़ी। बाद में पता चला कि शास्त्री जी की तिथियाँ सही नही है। अतः नये संस्करण को सही बनाने के लिए मुझे स्व. प्रेमनाथ शास्त्री के पुत्र श्री ओंमकार नाथ शास्त्री के पास जाना पड़ा जहाँ मैंने पंचांग देखकर यह पाया कि राज़दान साहब की मृत्यु तिथि मार्गशीर्ष शुक्ल अष्टमी,

सं. 1982 तदानुसार 23 नवम्बर 1925 ई. ठीक बैठती है जिसे पहले गलती से 1926 ई. दिया गया था। परन्तु जहां तक उनकी जन्म तिथि का सम्बन्ध है भाद्रपद शुक्ल पक्ष चतुर्थी (विनायक चतुर्थी) 1907 वि. की ईसाई पंचांग के अनुसार सही तिथि न पा सका क्योंकि 1850 का रिकॉर्ड पंचांग में भी न मिल सका। हो सकता है कि कहीं किसी के पास उपलब्ध हो। चान्द्र पंचांग के अनुसार तिथियाँ घटती-बढ़ती है अतः देसी तिथि का ईस्वी में रूपान्तरित करने की प्रचलित विधि ठीक नही बैठती।

पुराने संस्करण में लगभग डेढ़ सौ पृष्ठ छ्प नही सके थे तथा एक हज़ार शब्दों की अर्थ सहित शब्दावली भी रह गई थी। अब की बार नये एडिशन में कुछ और पृष्ठ जोड़े गये है जिन में कवि के जीवनकाल की कुछ और घटनाओं का उल्लेख किया गया है। कुछ स्थानीय कथाओं का वर्णन भी जोड़ा गया है। पहले एडिशन में जो बहुत से पृष्ठ स्पष्ट नही छ्पे थे कई एक स्थानों पर प्रूफ रीडिंग न किये जाने के कारण अशुद्ध रूप छ्प के रह गये थे। इन सब को नये एडिशन में शुद्ध किया गया है। अन्य लम्बी कविताओं के समान उन्होंने इस काव्य ग्रन्थ का प्रारम्भ प्रबन्ध काव्य शैली में करते हुए सबसे पहले श्री गणेश, गुरु, ग्रह, नक्षत्र, तथा अन्य देवी-देवतओं की स्तुतियां की है, फिर ग्रंथ-रचना का प्रयोजन दिया है।

कृष्ण जू का सम्पूर्ण काव्य शिवमय है। उन्होंने वास्तव में शिव पुराण से कथा लेकर 'शिव लग्न' के प्रथम भाग में सती माता (उमा) का जन्म तथा शिव के साथ उनके विवाह और दक्ष प्रजापति के रचाये यज्ञ में सती होने का वर्णन किया है। दूसरे भाग में पार्वती के रूप में हिमालय के पास उमा के जन्म शिव की तपस्या तथा उनके साथ विवाह का वर्णन है तत्पश्चात् कृष्ण जू प्रबन्ध काव्य शैली को त्याग कर केवल लीला-गीत संबन्धी और ज्ञानपरक कविताओं द्वारा अपने भक्ति-भाव का प्रदर्शन करते दिखायी देते हैं। वे एक के बाद एक कृष्ण भक्ति से ओतप्रोत इतने लीला-गीतों की रचना करते चलते है कि उनके गीत-सागर का कहीं छोर नज़र नहीं आता। परन्तु वास्तव में कश्मीरी पंडितों की प्रथानुसार वे शिव-भक्त ही थे। वे सदा अद्वैतवादी रहे है जहाँ कृष्ण तथा शिव एक ही परमसत्ता के दो रूप हैं। वे कृष्ण तथा शिव को भिन्न नहीं मानते और सब देवी-देवतओं को निराकार परमब्रह्म की ही अभिव्यक्ति मानते है। यह कश्मीरी पंडितों की धार्मिक आस्था के अनुरूप ही है। मैंने इन सब वंदना-स्तुतियों को विषय वस्तु के अनुसार शीर्षक दिये हैं। जैसे 'शिवरात्रि महिमा', 'मंज़गाम का चन्दन पेड़', 'संसार भांड जशन' इत्यादि। अतः मेरे विचार से कश्मीरी पंडितों की आने वाली पीढ़ियों के मार्गदर्शन के लिए हर घर में इस ग्रन्थ को रखना अत्यावश्यक है ताकि उन्हें हमारी वास्तविक सभ्यता तथा परमपरा का बोध हो।

कृष्णदास (कृष्ण जू) की कविता भक्ति प्रधान भी है तथा ज्ञान प्रधान भी। सरस तथा गेय भी है, गूढ़ भी। पहले उनके शिष्य कंठराम शराबी द्वारा गायी गईं उनकी कुछ कवितायें ही लोकप्रिय हुईं, परन्तु जो अप्रकाशित ज्ञान भण्डार था वह लोगों की नज़रों से ओझल ही रहा और अब उसकी ओर ध्यान देने की आवश्यकता है। रेडियों तथा कुछ कलाकारों द्वारा उनकी गेय तथा आसान कवितायें ही लोकप्रिय हो गयीं। परन्तु उन्होंने जीवन के अंतिम दिनों में जिस कविता की रचना की है, दर्शनिक दृष्टि से वह ज्ञान का स्त्रोत है। आशा है कि हर पंडित घर में यह नया एडिशन पढ़ा जायेगा।

# पण्डित कृष्ण जू राज़दान का 'शिव परिणय'

**प्रो॰ ( डॉ॰ ) भूषणलाल कौल**

शिव-शक्ति की प्रणय-कथा ने पण्डित कृष्ण जू राज़दान (सन् 1850 ई॰-1926 ई॰) को विशेष रूप से मोह लिया था। विभिन्न उप-शीर्षकों के अंतर्गत उन्होंने इस सूक्ष्म कथा-सूत्र को मूर्त रूप प्रदान करने का प्रयास किया है। यहाँ अनेकों पौराणिक सन्दर्भ, मिथकीय पात्र, जन-श्रुति और लोक विश्वास पर आधारित घटनाएँ, परम्परागत मान्यताएँ एवं विश्वास भक्त-कवि को सर्जन के लिये प्रेरित करते है। दक्ष प्रजापति का यज्ञ, उमा का अग्नि समर्पण, हिमालय की कथा और पार्वती का जन्म, सती के द्वारा शिव की तलाश, शिव का रूप बदलकर उपस्थित होना और गौरी के प्रेम की परीक्षा लेना, जोगी और पार्वती के बीच बहस, शिव-पार्वती के विवाह का निर्णय, दूल्हा का विरक्त जोगी रूप, मीनावती का विलाप और शिव की स्तुति, शिवजी का प्रसन्न होकर आनन्दमय रूप धारण कर पार्वती को वरण करना, लग्न और पुष्प-पूजा, विदाई से पूर्व स्वर्ण हिमपात आदि प्रमुख घटनाओं के आधार पर **'शिव परिणय'** की सृष्टि कवि ने अपनी मौलिक प्रतिभा के आधार पर की है। शैव मतानुयायी कश्मीरी पण्डितों के लोक-विश्वासों की अत्यंत मनमोहक अभिव्यक्ति इस वर्णनात्मक कथा-काव्य के माध्यम से हुई है।

एक अन्य महत्वपूर्ण बात यह है कि **'शिव परिणय'** की कथा में स्थानीय रंग निखर कर सामने आया है। यहाँ तक कि शिवरात्रि का महात्म्य भी कवि के आकर्षण का केन्द्र बनकर उसकी सर्जनात्मक प्रतिभा को महिमा मंडित बना देता है। कवि ने कश्मीरी पण्डितों के घरों में सम्पन्न होने वाले विवाह - उत्सव के लगभग समस्त सामाजिक एवं धार्मिक अनुष्ठानों का विशेष धयान रखा है। बारात का उचित स्वागत-सत्कार, लग्न से पूर्व द्वार-पूजा, लग्न पर कन्यादान, पुष्प पूजा, अग्नि के फेरे, विभिन्न देवी देवताओं को साक्षी मानकर वर द्वारा वधू को वरण करने की प्रतिज्ञा, अग्निक्षेत्र, दूल्हा को 'मननमाल' (मंगल माला) बान्धना, विदाई की तैयारी और इन समस्त सामाजिक-धार्मिक अनुष्ठानों पर स्त्रियों द्वारा लगातार 'वनवुन' गीत गाना इस कथा काव्य को न केवल महिमा मंडित कर देता है अपितु शिव-शक्ति की प्रणय कथा को पारिवारिक सन्दर्भों के साथ जोड़ देता है।

**'शिव परिणय'** वर्णानात्मक कथा-काव्य का आरम्भ मंगलाचरण से होता है। गणाधिपति महागणेश की स्तुति के बाद कवि सद्गुरु के सम्मुख नतमस्तक होकर विनीत भाव से प्रार्थना करता है कि :-

**ओ'न छुस जा़डन हिंज़ वथ वुछनावतम**<br>
**सतग्वरॅ हावतम गटि मंज़ गाश।**<br>
**वोलनस संसारॅचि मायाये**<br>
**मोकलय चानि वोपाये सूॅत्यि**<br>
**दयायि हुंज़ॅइ नज़रा त्रावतम**<br>
**सतग्वरॅ हावतम गटि मंज़ गाश।**<br>
**मूलॅ तलॅ ओसुस न्यर्मल पोनी**<br>
**व्यवहार प्रक्रच् कोरनम यख्**<br>
**न्यर्णय गरमी सूॅत्यि व्यग्लावतम**<br>
**सतग्वरॅ हावतम गटि मंज़ गाश।**

शिव और शक्ति के पारस्परिक सम्बन्ध की ओर संकेत करते हुए कवि लिखते हैं कि दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। वस्तुत: शक्ति के बिना शिव शव है। यदि शिव ज्ञान रूप हैं तो शक्ति क्रिया रूप है। शिव अपनी इच्छा को शक्ति के द्वारा ही सफल कर देते है। कवि के कथनानुसार रात और दिन, पृथ्वी और आकाश अनार के दाने और अनार, अमृत कुंड और

अमृत, लक्ष्मी और नारायण तथा सावित्री और ब्रह्मा को जो सम्बन्ध परस्पर है वही पार्वती और शिव अर्थात् शक्ति और शिव का परस्पर एक दूसरे के साथ है:-

**'चुं छुख दोह त ब्व छस रात वॅ आकाश तु ब्व बुतॅरात**
**चुं छुख दानि ब्व छस दानॅ ब्व छस पानॅ दयालू ।**
**चुं छुख ड्यक प्यठुक टिकॅ ब्व छस बुथि प्यठुक तीज़**
**ड्यकस टिकॅ छुइ शूबान ब्व छस पान दयालू।'**

सती द्वारा अग्नि-समाधि लेने के पश्चात् हिमालय के घर पार्वती का जन्म **'शिव परिणय'** के कथानक का अग्रिम मोड़ है। हिमालय के घर में बड़े लाड़-प्यार के साथ उसका भरण-पोषण होता है। पूर्व-जन्म की प्रत्येक घटना उसके मानसपटल पर अंकित है। वह अपने होने वाले भर्ता की तलाश में वन-वन भटकती है। हर गोशे और चमन में उसे शिव की तलाश है। उसे लगता है कि प्रकृति का कण-कण शिवमय है। शिव का अद्भुत सौन्दर्य ही सर्वत्र व्याप्त है पर साकार रूप में उसे वरण करने की उत्कट इच्छा से प्रेरित पार्वती शिव का गुणगान करती हुई वस्तुतः प्राणप्रिय में लय होने के हेतु व्याकुल दिखाई देती है। उसे विश्वास है कि शिव ही इस सृष्टि का मूल कारण है और प्रकृति के कण-कण में उसी का रूप लावण्य प्रतिबिम्बित है:-

**चुंइ छुख ज़प यग्युक ज़प चुंइ छुख तपॅवनुक तप**
**चुंइ छुख सादन हुन्दुंइ साद क्यथो याद म्ये' प्योहम**
**चुंइ छुख यूग्यन हुन्दुंइ यूग चुंइ छुख प्राणिन्यन हुन्दुंइ प्राण**
**चुंइ छुख द्वख चुंइ छुख स्वख चुंइ छुख परमानन्द म्वख**
**चुंइ छुख कम चुइ छुख ज़्यॉद क्यथो याद म्ये' प्योहम॥**

बहुत भटकाने के बाद और उसके प्रेम की कठिन परीक्षा लेने के पश्चात् आशुतोष गौरी पर प्रसन्न होते हैं और उसके साथ विवाह सूत्र में बन्ध जाने का वचन देकर वापस कैलाश पर्वत पर लौट आते हैं और सप्त ऋषियों के साथ अरुंधती और नारद मुनीश्वर को हीमाल (हिमालय) के घर गौरी का हाथ माँगने के लिये भेज देते है। मीनावती और हीमाल सहर्ष रिश्ते को स्वीकार करते हैं और तत्पश्चात् निश्चित तिथि पर विवाह हेतु शिव जी विचित्र रूप मुद्रा में सर्पमाल धारण किये हुए, वृषभ पर सवार, भस्मस्नात, सिंहचर्म धारण किये, मस्तानी चाल में हिमालय के घर बारात के साथ पहुँचते हैं। देखते ही मीनावती नारद मुनीश्वर के सम्मुख रोते हुए विलाप करती है। वह शिव की लीला को समझ नहीं पाती । क्रुद्ध होकर वह अपने आपको कोसती है और बेटी के निर्णय पर क्षोभ व्यक्त करती है। जोगी बाबा को बेटी के दूल्हा के रूप में देखकर वह तड़प उठती है और भीतर की पीड़ा को अश्रुओं से भिगोकर नारद मुनीश्वर के सम्मुख इस प्रकार व्यक्त करती है :-

**दप्योनस बड़्य नारद जी यि क्या गोम**
**गोसोन्या हूयूह यि क्युथ महाराज़ यिथ प्योम**
**यि कॅम्य यो'छ़नय यिथुई महाराज़ यीनय**
**गोसोन्या राज़ॅकोमारे च़्ये' नीनय**
**दिवन अर्द बाख लॅजिस वर्दनि लूक पामन**
**मलनि ल'ज्य ख़ाक वा'लनि चाख जामन**
**दमन मंज़ वुछ बनान क्या व्यवहारस**
**सपुन मातम सरापा राज़दारस।**

पर्याप्त अनुनय-विनय के पश्चात् शिव जी प्रसन्न हो कर, अद्भुत सौन्दर्ययुक्त और तेजवान दूल्हा का रूप धारण कर लेते हैं और तत्पश्चात् गौरी का विवाह सम्पन्न हो जाता है। विवाह के अवसर पर वे समस्त धार्मिक अनुष्ठान और सामाजिक रीति-रस्म पूरे किये जाते हैं जो कश्मीरी पण्डित परिवारों में ऐसे शुभावसरों पर सम्पन्न होते हैं। लग्न-मंडप पर पुष्प-पूजा का कवि ने विशेष रूप से वर्णन किया है। नानारंगी पुष्प अर्पित करते हुए दूल्हा-दुल्हन की बड़ी श्रद्धा के साथ पूजा की जाती है और परिवार के सभी निकटस्थ सम्बन्धी इस पूजा में सम्मिलित होकर भविष्य की मंगल कामना करते हुए नव-दम्पत्ति को सुखद पारिवारिक जीवन जीने के हेतु आर्शीवाद देते हैं। मंत्रोच्चारण के साथ लग्न का यह विशिष्ट अनुष्ठान सम्पन्न होता है। शिव और शक्ति की पुष्प-पूजा हो रही है - यह दृश्य निस्संदेह स्वर्गिक है और कवि इसका एक सजीव चित्र शब्दों के माध्यम से अत्यंत कलात्मकता के साथ प्रस्तुत करता है:-

'अनिख वॅन्य दिथ चोपा'री पोश सा'री
करॅनि लॅग्य पोषि पूज़ा तारॅता'री
कॅरिथ प्रथ रंगॅ रंगै पोषनुंइ ढेर
को'रुख शिव शक्ति रूपस अंद्य-अंद्य गेर
परान ओस वीद मंगल श्रुकि ब्रह्मा
उमासुँय सूँत्य-सूँत्यी कर चुं क्षमा
वॅलिख नीरिथ शिव सुंद्य लालॅ आलव।'

स्त्रियों की ओर से यह शिकायत करने पर कि पिया के घर से गौरी के गहने नहीं आये हैं शंकर की इच्छा से स्वर्ण हिमपात होता है और सारा वातावरण हर्षोल्लास में निमग्न शिव के जय जयकार से गूँज उठता है। इसके पश्चात् शिवरात्रि के महात्म्य पर प्रकाश डाला गया है। इसे शिव और पार्वती के प्रथम मिलन की रात्रि मान कर कवि मुक्त कंठ से मधुर मिलन के महिमागान में लीन हो जाता है। अब शिवजी पार्वती के साथ कैलास पर्वत की ओर प्रस्थान करने हेतु तैयारी कर रहे हैं और विदाई के समय मीनावती के साथ साथ अन्य उपस्थित सगे - सम्बन्धी पुनः शिव-वन्दना करते हुए गद्गद् हो उठते हैं। इसी प्रकार शिवजी के रुख़सत होने पर भी ही माल के समस्त शुभचिंतक एकत्र होकर मुदित मन से शिवनाथ की स्तुतिवन्दना करते हैं और इस शुभ विवाह अनुष्ठान के सम्पन्न होने पर एक दूसरे को बधाई देते हैं। कवि तत्पश्चात् 'ओउम्' शब्द की दार्शनिक व्याख्या लीलाओं के द्वारा करते हैं और संसार के मिथ्या / नश्वर / असार होने का एहसास उसे संसार-प्रवाह में मग्न लोभी जनों को सावधान करने के लिये प्रेरित करता है।
अंत में कवि ने गौरी के प्रति स्तुति-गान को उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया है:-

हिमालय परबतॅनि गरि चुँई ज़ायख
आयख करने ज़गॅ रखिपाला
परम शखित परमशिव छांडनि द्रायख
कर्म सूँत्य समॅजख शिवशक्ति रूँप
भगवत माया बोज़नै आयख
आयख करने ज़गॅ रखिपाला
ज़गतॅच दाता छख फलदायक
यस दिख चुँई तस दियि शिव जी
सुई चे' लायख चुँई तस लायख
आयख करने ज़गॅ रखिपाला।

स्पष्ट है कि **'शिव परिणय'** में शिवपार्वती के विवाह की कथा मुख्य रूप से वर्णित है और इस के लिए कवि ने कथा-वाचक के समान वर्णानात्मक शैली को अपनाया है। लेकिन रचना का सम्पूर्ण सौन्दर्य केवल कथा-वर्णन में ही नहीं है अपितु कई अन्य तत्वों के समुचित संयोग से 'शिव-परिणय' एक विशिष्ट रचना बन पड़ी है। विवाह-कथा के साथ-साथ इस रचना के कुछ अन्य विचारणीय प्रमुख आकर्षण इस प्रकार हैं :-

1. 'शिव-परिणय' में वर्णनात्मक कथा-शैली और गीति-शैली का समुचित संयोग देखने को मिलता है। कथा की मुख्य धारा में असंख्य शिव-लीलाएँ भी प्रवाहित हैं। इतना ही नहीं, कृष्ण-लीलाएँ और देवी-देवताओं के स्तुति गान एवं भजन भी हमें में देखने को मिलते हैं। वही समन्वयात्मक दृष्टिकोण इस रचना में भी अपनाया गया है और विष्णु के अवतार रूप की वन्दना मुक्त-कंठ से की गई है। कृष्ण जू राज़दान सगुण भक्त थे अथवा निर्गुण-यह कहना तनिक मुश्किल है, लेकिन इस में सन्देह नहीं कि वे शिव के अनन्य उपासक थे और स्तुति गायन में सिद्धहस्त। भक्ति के किसी सम्प्रदाय अथवा वर्ग के साथ उन्हें ज़ोड़ा नहीं जा सकता। मेरा दृढ़ विश्वास है कि राज़दान साहब पहले कवि थे फिर भक्त, अतः प्रत्येक रचना में, चाहे वह शिव से सम्बन्धित है या राम से अथवा कृष्ण से, एक सच्चे कवि का कवि हृदय प्रतिबिम्बित दिखाई देता है। यहाँ शिव-स्तुति में कृष्णलीला का माधुर्य घुलमिल गया है। राम भक्ति में अन्य देवी-देवता भी भागीदार बन गए हैं। यह तो अजब संगम है जो एक सच्चे भक्त को जहाँ आनन्द विभोर कर देता है वहाँ कभी-कभी शंका में भी डाल देता है।

2. सम्पूर्ण कथा लोक-मानस से जुड़ी है। एक विशिष्ट परिवेश को ध्यान में रख कर राजदान साहब शिव-पार्वती की विवाह-कथा सुनाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि यह शुभविवाह

कश्मीर में किसी प्रतिष्ठित पण्डित परिवार में हो रहा है। अतः विशिष्ट लोक-जीवन और समाज से सम्बन्धित प्रत्येक रीति रिवाज का पालन बड़े चाव के साथ हो रहा है। 'शिव-परिणय' में निस्सन्देह कश्मीरी पण्डितों का पारिवारिक जीवन समस्त विश्वासों, परम्पराओं, रीतिरिवाजों और मान्यताओं के साथ प्रतिबिम्बित हो उठा है।

3. शैव दर्शन तथा अद्वैतवादी विचारधारा का प्रभाव सम्पूर्ण रचना में सामूहिक रूप से देखने को मिलता है। यहाँ शिव (त्रिक् सिद्धान्त के आधार पर) तीनों रूपों में (शिव रूप, शक्ति रूप तथा नररूप) लीला करते हुए मंत्रमुग्ध कर देते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि **'शिव परिणय'** शिव-भक्त कृष्ण राज़दान के निजी विश्वासों के अनुरूप सर्वशक्तिमान ब्रह्म की व्यक्त लीला है। वहीं शिव जो जगत का मूलकारण है, सौन्दर्य का सार तथा आनन्द का स्रोत है तथा शैवमतानुयायी भक्त जनों की भक्ति का ठोस आधार है, इस लीला जगत में व्यक्त होकर शक्ति के संग प्रकृति के कण-कण में अपने सौन्दर्य का विस्तार पाता है । 'शिव परिणय' में शिव-भक्त अपने विश्वासों के अनुरूप ही अपने इष्ट के प्रति समर्पित रहता है। न केवल भक्त जन अपितु असंख्य देवी-देवता शिवस्तुति में लीन दिखाई देते हैं। इन में उल्लेखनीय हैं-विष्णु, ब्रह्मा, यमराज, इन्द्र, सप्त-ऋषि, वरुणदेव चित्रगुप्त, सूर्य देव, चन्द्रमा, लक्ष्मी, सरस्वती, भौम, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनिश्वर तथा नारद मुनीश्वर ।

4. **'शिव परिणय'** की कई लीलाओं और स्तुतिपरक गीतों में विशिष्ट दार्शनिक पृष्ठभूमि पर गहन विचारों की अभिव्यक्ति अत्यन्त कलात्मकता के साथ हुई है। अद्वैतवादी विचारधारा से प्रभावित कवि अन्तिम क्षणों में जगत-मिथ्या के बोध से पीड़ित होकर जीव को सांसारिक बन्धनों से मुक्त होने के लिये तथा पाँच इन्द्रियों को अपने वश में करने के हेतु सावध ान करते हैं। अपने आपको पहचान कर अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु साधनारत्न रहना जीव के लिये परमावश्यक है। मानस के तमसान्धकार को तो ज्ञान ज्योति से ही प्रज्वलित किया जाता है। विवेक-बुद्धि का अपना महत्त्व है अवश्य, क्योंकि हंस- बुद्धि से ही कांच और कंचन की पहचान सम्भव है।

5. कई पौराणिक कथा सन्दर्भो के आधार पर कृष्ण जू ने 'शिव परिणय' की कथा को सम्यक् विस्तार प्रदान किया है। इन पौराणिक सन्दर्भो अथवा मिथकीय पात्रों के द्वारा कवि लोक मिज़ाज के अनुकूल शिव-पार्वती की कथा को एक नवीन आकार प्रदान करने में सफल हुए हैं। मेरा दृढ़ विश्वास है कि जीवन के किसी भी मोड़ पर अपनी परम्परा से अलग होना घातक सिद्ध होता है। यहाँ इस बात को स्पष्ट करना आवश्यक होगा कि परम्परा और अन्धा विश्वास एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न और अलग है। जहाँ हम अपनी परम्परा से अलग हो जाते हैं वहीं हम अपनी पहचान खो देते हैं। पौराणिक कथाएँ, सन्दर्भ और पात्र आज भी हमें अपने अतीत के साथ जुड़ने और वर्तमान के साथ जूझने में आत्मिक शक्ति प्रदान करते हैं। प्रस्तुत रचना में उमा के नामकरण से सम्बन्धित कथा, प्रहलाद की कथा, विष्णु की शिव-भक्ति, यमराज की शिवस्तुति, हर्षेश्वर की कथा तथा भस्मासुर की कथा इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं । इतना ही नहीं सम्पूर्ण कथा में नारद मुनीश्वर की भूमि का भी पर्याप्त महत्त्व है।

6. कश्मीर के महान शैवमताचार्य, दार्शनिक, आलोचक तथा काव्यशास्त्र के आचार्य अभिनवगुप्त के प्रकांड पाण्डित्य से प्रभावित होकर राज़दान साहब ने एक स्तुति गीत (सा'री हयथ निम सर्व वोपका'री, अभिनवगुप्त आचा'री ज़न) लिखा है और इस प्रकार 'तंत्रालोक' तथा 'अभिनवभारती' के रचयिता की असाधारण प्रतिभा के प्रति अपनी श्रद्धा के सुमन अर्पित किए हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि केवल पौराणिक सन्दर्भ ही नहीं अपितु शुद्ध ऐतिहासिक सन्दर्भ एवं पात्र भी 'शिव परिणय' के कथा-विस्तार में सहायक सिद्ध हुए हैं ।

7. राज़दान साहब ने **'शिव परिणय'** की कुछ लीलाएँ खड़ी बोली में लिखी हैं और कुछ लीलाएँ खिचड़ी भाषा में । खड़ी बोली और कश्मीरी का मिश्रित रूप इन लीलाओं को अभिव्यक्ति कला की दृष्टि से आकर्षक बना देता है। प्रयोगात्मक स्तर पर इन रचनाओं का ऐतिहासिक महत्त्व है।

8. सहजता और सरलता कृष्ण राजदान की भाषा का मुख्य आकर्षण है। उन्हें न पाण्डित्य प्रदर्शन का मोह था और न अलंकृत भाषा के प्रति आग्रह। अभिव्यक्ति को सशक्त एवं

ग्राहय बनाने के हेतु कवि ने लोक में व्यवहत मुहावरों, कहावतों तथा शब्द-प्रयोगों के साथ साथ नाना प्रकृति-दृश्यों का भी चित्रांकन किया है। लोक-भाषा के साथ साथ लोक-संगीत के प्रति भी उन्हें विशेष रुचि थी। कश्मीर में प्रचलित लोकगीतों की विविध शैलियों विवाह आदि अवसरों पर गाये जाने वाले मंगलगीत से वे भली-भाँति परिचित थे । इन में विशेष रूप से 'वनवुन' (मंगल गीत) **'शिव परिणय'** में शिव-पार्वती, विवाह के अवसर पर गाए गए हैं। राज़दान साहब लोक-जीवन के प्रति सचेत थे। लोक-जीवन की पृष्ठभूमि पर ही तो **'शिव परिणय'** का प्रणयन हुआ है। इन की अनेक लीलायें लोक-साहित्य का अभिन्न अंग बन गई हैं और कश्मीरी पण्डितों के विवाह गीतों में सम्मिलित हुई हैं। विवाहोत्सव पर एक विशेष 'वनवुन' गीत अतिथियों का मन इस प्रकार मोह लेता है :-

**'पा'र्य पा'र्य ल'ग्यतोस रथ़ सवारे**
**माहराज़् राज़्कोमारे आव।**
**सा'निस पोषि बागस ओस गोशा**
**गोशस प्यठ पम्पोशा ब्यूठ**
**रोशि चाव पोशिनूल मंज़ पोशिवारे**
**माहराज़् राज़्कोमारे आव ।**
**द्वारस सा'निस बन्याव स्वर्गदारा**
**का'नी सा'नी शालमारा हिश**
**सालरव कमि हालॅ छालॅ तति मारे**
**माहराज़् राज़्कोमारे आव।**

**बनॅचे विगने वनवॅुनि द्राये**
**आकाश प्यठॅ वछ़ॅ अछ़ॅरछ़ॅ ब्वन**
**ग्वन छस वनॅुनवान कनॅ दारे**
**माहराज़् राज़्कोमारे आव।**

9. तुम्बकनारी (एक कश्मीरी लोक-वाद्य) का कश्मीरी लोक संगीत में विशेष महत्त्व रहा है। आज भी विवाह के शुभ अवसर पर कई दिनों तक स्त्रियाँ घरों में तुम्बकनारी बजा-बजा कर गीत गाती हैं। कश्मीर के लोक संगीतज्ञों ने इसे घड़े का पूरक मान कर पर्याप्त महत्त्व प्रदान किया है। राज़दान साहब ने **'शिव परिणय'** में तुम्बकनारी के गीत भी गाये हैं। लोक-रंग पण्डित कृष्ण राज़दान की लेखनी का मुख्य आकर्षण रहा है। यहाँ लोक ही काव्य का पर्याय बन गया है। इस प्रकार यह बात स्पष्ट होती है कि कश्मीरी भक्ति साहित्य के इतिहास में **'शिव परिणय'** निस्सन्देह एक अनमोल कलात्मक उपलब्धि है। प्रत्येक कश्मीरी भाषा-भाषी को इस सांस्कृतिक विरासत पर गर्व होना चाहिये । शिवभक्त पण्डित कृष्ण जू राज़दान ने शिव-शक्ति की प्रणय-कथा को कश्मीर के लोक मानस के साथ जोड़कर आनन्दोल्लास के उत्सव के रूप में प्रवाहित किया है।

भले ही फ़ारसी के अन्ध-भक्त आलोचक उनका मूल्य आँकने में अपनी असंतुलित दृष्टि का परिचय दें लेकिन कश्मीरी भाषा और साहित्य के मर्मज्ञ कृष्ण राज़दान की सर्जनात्मक प्रतिभा की उपेक्षा नहीं कर सकता। आखिर कंचन को कहाँ तक कांच समझ कर ठुकरायां जायेगा?

Campus®
SHOES



Way Of Good Living
Email: campus@campusshoes.com

WITH BEST COMPLIMENTS FROM



ESSEL TOWERS

ESSEL HOUSING PROJECTS PVT. LTD.

48, Tolstoy Lane, New Delhi-110001 (India)
Tel. : 23327771, 23327761, 23327735 & 23327753
Fax : 3736758, E-mail : info@esseltowers.com

Site office : Main Mehrauli Gurgaon Road, Village Sukhrali & Sarhaul, Distt. Gurgaon, Haryana. Tel. : 91-2685990, 2685991, Fax : 91-2686809

Registered Office : B-10, Lawrence Road, India. Area, New Delhi-110035
Visit us at : www.esseltowers.com

# The Great Saint Poet Krishnajoo Razdan

**Utpal Kaul**

Kashmir is a jewel in the Himalayas, not only because of the beauty of its mountains, lakes, hills, rivers, gardens, flora and fauna; but also because it has been the fountainhead of Indian culture and civilization. It has produced great sages, seers, mystics and scholars in the five thousand years of its recorded history. The philosophy of Sarvastivada Buddhism and Trika Shaivism are Kashmir's great contributions to the world of thought. In the recent past its soil has given birth to a number of great mystics and saint poets. Among these Paramananda, Govinda Koul and Krishanjoo Razdan have become household names in the whole Kashmiri community because of their highly devotional poems.

Pt. Krishnajoo Razdan was born in a small village called Vanpoh situated on the Jammu-Srinagar National Highway, five miles away from Anantnag. At a very young age, Mother Goddess blessed Krishnajoo with her divine grace. This was the turning point in his life and he started composing devotional poems in praise of Shiva, Vishnu, Krishna, Rama, Sharika, Rajnya, Jwala and Saraswati just when he was in his teens. He used to sing these poems (*lilas*) in a melodious tune and go into trance. His poems were so appealing that they became popular in every household all over Kashmir. He was a great mystic and saint in the true sense.

In Kashmir, *sannyasa* does not mean renouncing the world, in fact such *sannyasa* is not practiced at all in Kashmir. We have *grahasthi* sadhus (*grahasthi saad*), that means non-renouncing or householder saints who are attached to this world in a detached manner. Pandit Krishnajoo Razdan too was a householder saint–he was married and had children. By profession he was a Nambardar (Revenue Officer) in his village. However, a busy schedule, official engagements, family duties and other worldly engagements couldn't deter him from attaining his set goal of spirituality.

His love for Lord Shiva and Lord Krishna was immense and deep as is reflected in his lyrics. He must have been a good traveller, travelling mostly to places of pilgrimage in Kashmir and different parts of India. His love for nature – mountains, lakes, snow, rain, sunshine, flowers and birds- which he saw as the manifestation of Lord Shiva, finds profound expression in his poems.

There is no one in this world, howsoever great, whom others have not criticized, and this great saintly soul was no exception. He was subjected to criticism from quite a young age by those who were jealous of his greatness. His co-disciples told his Guru (teacher) that his (Krishnajoo Razdan's) compositions were not original but plagiarized. And once when the Guru was having a picnic on the Dal Lake with his disciples, he tested the truth of this complaint by asking Krishnajoo to compose an extempore poem on the lake and its surroundings. And the poem that Krishanjoo composed on the spot without loosing any time has become one of his master-

pieces. The Guru was so impressed by this poem that he blessed his disciple from the core of his heart. This poem full of mystic thought is very popular among the people even today.

सर को'र यि संसार नदुरुय द्राव
डल मॅ होशॅ च्यथॅकिय पम्पोश छाव

[It is well ascertained that this world is without any essence, just as *nadru* (lotus stalk of which Kashmiris are very fond even though it has little nutritive value). So too do not loose your senses. Enjoy the lotus flowers of the mind (concentrate on attaining the divine bliss.)]

In Kashmir, many professional singers have sung Krishnajoo Razdan's compositions. These include both Hindus as well as Muslims. The celebrated Sufi singer, Tibat Bakal has sung his famous *lila* (devotional lyric)'*byal tay madal*' addressed to Lord Shiva:

" I offer bouquets of *bel, madal, vyena*, roses and lotuses to worship Shivanatha – the Abode of Highest Bliss."

The lyric became so popular that Tibat Bakal and '*bel tai madal*' became synonymous. Another Muslim singer Rahmatullah Khan has also sung one of the popular *lilas* of Pt. Krishnajoo Razdan very beautifully. In fact, this song became extremely popular after it was broadcast on the Radio Kashmir:

होश दिम लगॅयो पम्पोशॅ पादन
हा सादन हुॅन्दि सादो हो

[Grant me awakening, so that I sacrifice myself on your lotus feet, O saint of saints!]

In the long tradition of great saints and sages produced by Kashmir, like Utapalacharya, Abhinavagupta, Lal Ded and Rupabhawani, Pt. Krishnajoo Razdan may be included as one who attained great heights of spirituality. To me Krishnajoo Razdan himself was 'the saint of saints'.

I was happy to have met the descendents of this great saint – his grandson, great-grandson and their children. How simple they are and how sincere. Out of curiosity, when I enquired from the head of the family i.e. Pandit Krishnajoo's grandson Pt. Shyam lal Razdan as to what he remembered about his grandfather, his answer was "*shalfa malfa*". In Kashmir, during the bitter cold of winter elders would keep themselves warm by keeping the firepot or Kangri as it is called in Kashmiri under their cloaks and ask kids to share this warmth by keeping their hands and feet inside their warm cloaks. These were the light moments where they would entertain the kids with stories and legends from religious books. In this manner they would initiate them into the traditional culture of the land.

It were such personalities who carried the legacy and heritage of Kashmir forward even as they set out on the path of their spiritual quest. Such personalities were part and parcel of the social and cultural fabric of Kashmir woven by the strands of truth and wisdom. This truth is everlasting (*nityam shashvatam).*

# The Relevance of Krishnajoo Razdan In Modern Times

**Brijnath Betab**

Poets and seers have been the real founders of the Indian civilization. That is why this civilization has withstood the vicissitudes of time. To understand this point clearly one has to comprehend that the term poet in the Vedic civilization did not mean what we know of poets in our times, many of whom are confined to lyrical pursuits only. The Vedic religion was the religion of a people, nurtured by poets. It was a religion that influenced every aspect of life. The Vedas and the Vedic way of life thus reflected the vision and philosophy of the Vedic poets.

During the Vedic age, poets were respectfully given the title of Rishis. Kashmir too has produced from the earliest times poets whose vision of man and world has deeply influenced the psyche of the people and shaped the ethos of the land. Though many of them have faded away from our memory now, they have contributed most significantly to the values and ideals cherished by Kashmiris down to this day. During the second half of the first millennium Kashmir gave birth to large number of eminent Sanskrit poets. These include Mentha or Bhartrimentha, Ratnakara, Mankha and many more. In modern times a student of literature, and also a Kashmiri Brahmin like me, finds himself connected with Rishis of the Vedic period and the luminaries of Sanskrit language whose legacy passed on to great poets of my immediate past. In fact, it is being largely accepted now that the Kashmiri language is very close to the Vedic speech and many of its words are being used in colloquial parlance even today. Krishnajoo Razdan is one such great Kashmiri poet who I feel connects me with this glorious tradition through his soul- elevating poetry. Thus the greatest relevance of Krishnajoo Razdan for me is that he is an important link between my past, my tradition and me.

While Vedic influences on the social, cultural and religious life of Kashmiri Hindus are mostly intact even today, it is the sublimity of thought of the works of poets like Krishna joo Razdan, that reminds us of the poetry of the Rigveda. The Rigveda, as we know, contains hymns in praise of divinities represented by the natural phenomena and there is something in Krishnajoo Razdan's poetry too that makes me think that he bears a close resemblance to the Rigvedic poet and seer, although he worshipped Krishna and Shiva as his chosen deities:

वुफन आव पनुँपोंपुरा ब्यूठ पोशन मंज़
मुशका ह्यवन पूज़ायि ज़न मद होशन मंज़
दर्शुन करने मंज़ पोशुँ बागस नियेे म्ये
शंकर तुँ कृष्ण ॲभीदुँ दर्शुन दिये म्ये

(Krishna Vani)

Great saint-poets like Lal Ded, Parmananda and Krishnajoo Razdan have the distinctive quality of

translating their insights gained from their spiritual experience into poetic expression. Their emphasis is not on living in splendor but on realizing the self. This is so because in India philosophy is intimately related to life and to realize one's self is considered to be the highest goal of life. And adoration of gods is an important constituent of this way of life. One can never attain spiritual bliss without divine will. The world, in fact, is nothing but the manifestation of the Supreme Reality.

For Krishnajoo Razdan, Shiva or Krishna represents cosmic consciousness in both its transcendent and immanent form and not just a symbol of divinity. He believes in their immediate and direct presence and addresses his entreaties to them in his poetry. An example of his deep understanding of the Vedantic philosophy is his frequent use of the word *hamsa* or the swan which is said to symbolize the soul or the self.

Krishnajoo Razdan was a man of high thinking and profound spirituality. For him devotion to Shiva and Krishna was a means to surrender himself to their sovereign will so as to attain self-realization:

"अमर पानो भ्रम संसार छुय
आदि दीव बनॅुनुक चॖ आधिकार छुय
हारव रौस्तुय भवसरॅ तार छुय"

(Krishna Vani)

Saint-poets like Krishnajoo Razdan have by and large followed what can be perhaps called theocentricism, in which devotion to a personal god is of essence. It is this devotion that makes poets pour out their hearts in the form of devotional songs and hymns. These songs often pour out in an ecstasy that points to the poet's spiritual state as a seeker of the ultimate truth, and it is such utterances that inspire the minds of people. Having said so, I can safely describe Krishnajoo Razdan as a torchbearer leading us to the path of self-realization.

The *pratibha* or genius of Krishna joo Razdan finds full expression in his poetic creations, his poetry providing glimpses of his great mastery over language and his aesthetic sensibility. He is a master in rendering mythological stories and legends into inspiring poetry. In this he seems to have been influenced by his elder contemporary Paramnanda, another great Kashmiri saint-poet.

Krishnajoo Razdan is nearer to me than the Sanskrit poets of yore, not because he lived in not so remote an age, but simply because he spoke my language, or rather because I understand his language. Krishnajoo Razdan's creative imagination evokes a kind of sublime aesthetic pleasure, not much different from the serene bliss of spiritual experience:

"ब्यल तै मादल व्यनॅु गुलाब पंपोशु दस्तै
पूज़ायि लागस परमॅु शिवस शिवनाथस तै
दया सागरॅ लोलॅु विज़ियायि कौरनस मस तै
हा पोशॅु मते होशॅु मोडल थव ध्यान ह्यस तै
असार संसार छलॅु रावान सोर रोज़ि कस तै
पूज़ायि लागस परमॅु शिवस शिवनाथस तै
ब्यल तै मादल व्यनॅु गुलाब पंपोशु दस्तै"

(Krishna Darshan)

Krishnajoo Razdan is a very important exponent of the Lila form of poetry in Kashmiri, but more than that it is his adoption of folk-musical metrical patterns that make him more appealing. His deliberate use of folk-metres enabled him to reach to a wider spectrum

of readers. This again is very significant, because this in turn helped in contributing richly to the socio-religious ethos of his times and will continue to influence the Kashmiri mind for a long period to come. More than anything else, this makes him an important symbol of our cultural and civilizational heritage. Episodes like that of *svana sheen* in his popular poetic work Shiva Lagna are fully illustrative of this aspect:

"समिवो लूकव स्वनुॅ शीन वालव
पश आयि बॅर्य— बॅर्य लालव सूॅत्य
आंगनन टेंग खॅत्य पथ ह्यो'त बालव
कुठ्य पोरण खो'त तालवन सूॅत्य
समिवो लूकव स्वनुॅ शीन वालव

(Siva Lagna)

Aesthetically speaking, the deeper level of meaning in literature is suggested by what Anandavardhana calls *Dhvani*. It is a kind of resonance that takes us beyond the denotative meaning of the word and reverberates subtly in our mind after its sound waves strike our ears. It is such suggestiveness that makes Krishnajoo Razdan's poetry strike a deep chord within us. Conviction is one of its significant features, conviction that strengthens faith, faith that dispels doubt. And once doubt (about the Lord and his creation) is dispelled, the mind and the intellect go along the right path — the path of the self-realization.

In poetry the level of the uttered or written word points to the level of thought. With Krishanjoo Razdan, the literal meaning of the word is not the ultimate meaning. His simple but profound expression carries several layers of meaning. To quote Bhartrihari, "Linguistic communication is a multi-layered affair, and without excavating the hidden layers beyond the uttered speech no analysis of language is complete". This holds good for Krishnajoo Razdan's poetry also, as is illustrated by these lines from Shiva Lagna:

अर्ग कर मनस तै पोश कर पं'णस
खृष्णॅ पुज़ायुॅ लाग सनिधानस
ज़ालि पाफ गालिय अज्ञानस
छेम ईशानस पोश पूज़ा।

(Shiv Lagna)

Krishnajoo Razdan's expressiveness and linguistic communication is superb. In his poetry, the words are masterly crafted, but this craftsmanship is so functional that communication of meaning becomes the primary function of his creative activity. An example:

"बैरागुॅ मकुॅसूॅय युस रागुॅ वीर ठलि
नेष्कामुॅ करमुॅ करि तथ पैवंद
हरदुॅ नेरि फल तथ सोंतु पानय स्व फ्वलि
कति फटि मुह क्वलि ही कीशव"

(Krishna Darshan)

Krishnajoo Razdan's poetry, however, is not just a lyrical exercise. It is not limited to an experience of melodious music or rhythm for the ears of the listener. His poetry is an intelligent act of awakening — the awakening of the mind and the intellect. A state in which one is prepared to surrender ones ego before the Master. To use the words of Austin, " Language is a matter of act. Saying something is doing something. In saying something, we do something". Krishnajoo Razdan's poetry is full of such "acts". It induces in the listener 'Bhakti Bhava'— Bhakti that leads one ultimately to spiritual realization. It is this sentiment of Bhakti that makes one to yearn for the

"all attractive Krishna", the Absolute Truth, and is guided to seek Him, to feel His presence. Krishna joo says:

"मोक्षकारणसामग्रयां भक्तिरेव गरीयसी।
स्वस्वरूपानुसन्धानं भक्तिरित्यामिधीयते।।"

Among the means of liberation, Bhakti is supreme. Constant attempts to live up to ones own real nature is called single-minded devotion. The relevance of Krishnajoo Razdan's poetry lies in the fact that it serves as an important link between the Bhakti movement of the post-Shankara period in India and the post-Lal Ded period in Kashmir. Kashmiri saints and mystics like Lal Ded, proclaimed the basic oneness of mankind. T hey adopted the local language as their medium of expression and used verse as a means for achieving their mission. What makes Krishnajoo Razdan more significant and relevant today is, in my opinion, his ability to synthesize local as well as external traditions of Bhakti.

Krishnajoo Razdan's greatness lies in the fact that he has established himself as an ardent and faithful representative of these currents. On one hand he seems to be a staunch believer of *bhaktivada* or the Bhakti movement which produced great scholars like Yamunacharya and Ramanuja in South India and great saints like Mira and Kabir in North India, to name only a few. On the other hand he as a devout Shaiva with deep faith in Kashmir Shaivism gave birth to great works of mystic poetry like 'Shiva Lagna'. Here Krishnajoo Razdan seems to look somewhat like the Tamil Azhvar saints who made great personal contributions to the spiritual renaissance of the country.

In the regional context, Krishnajoo Razdan is the product of a long tradition of monistic Shaivism of Kashmir which in turn has a deep link with the tradition of Shaivagamas, which according to some date back to very ancient times and are regarded as texts revealed by Shiva Himself. Besides following these traditions and beliefs of Kashmiri Bhattas, and their philosophical doctrines, or the local *parampara*, Krishnajoo Razdan also absorbed.outside influences and synthesized one. It is his use of the common man's language that makes him a greatly popular poet not only among Hindus but also among the non- Hindus of the land of Rishi Kashyapa.

Krishanjoo Razdan's choice of words is not only most apt and impressive but also inspiring and appealing irrespective of their socio-religious context. In a letter written in Kashmiri to Shri Shyam Lal Razdan, great-grandson of Krishnajoo Razdan (who has edited and compiled three volumes of Krishanjoo Razdan's works.)

As for the *lila 'bel tai madal'* sung by Ustad Tibet Baqal, I still remember his son having told me recently in Srinagar that the great *sufiyana* singer was "in a state of infinite bliss" when he recorded it for Radio Kashmir, Srinagar. In my opinion this state of Ustad Tibet Baqal's mind while singing the *lila* must have been the result of spiritual illumination that its music and meaning may have caused.

# पंडित कृष्ण जू राज़दान और संत चरणदास जी : एक तुलनात्मक दृष्टि

संगीता गोयल

भारतवर्ष में संतों की एक सुदीर्घ परम्परा है। इस अथाह संत सागर में से कुछ मोती चुनने का सुअवसर मुझे भी प्राप्त हुआ है। मेरे शोध का आलोच्य विषय था "संत चरणदास एवं उनकी परम्परा में निर्गुणवादी महिला संत (सहजोबाई और दया बाई) की साधना का अध्ययन।" इसी अध्ययन-क्रम में कश्मीरी भाषा के सुप्रसिद्ध अद्वितीय भक्त महाकवि पण्डित कृष्ण जू राज़दान ही के विषय में पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ आश्चर्य यह है कि संत चाहे किसी भी प्रदेश, अंचल अथवा क्षेत्र से सम्बन्ध रखते हों परन्तु उनका लक्ष्य एक ही होता है - भगवद् प्राप्ति एवं लोक मानस में आध्यात्मिक चेतना का जागरण। भाषा के कठिनाइयों के कारण संत कवि चरणदास जी एवं पण्डित कृष्ण जू राज़दान जी द्वारा रचित काव्य कृतियों को पढ़कर समग्र चिन्तन तो नहीं कर पाई फिर भी अल्पांश जो मैंने ग्रहण किया उसके आधार पर संत कवि चरणदास जी एवं पंडित कृष्ण जू राज़दान जी की जीवनधारा तथा विचारधारा में साम्य स्थापित करने का जो लघु प्रयास किया उसे यहाँ प्रस्तुत करती हूँ।

राजस्थान में अलवर समीपस्थ डेहरा गाँव में श्री मुरलीधर जी की भार्या कुंजोदेवी की कोख से सम्वत् 1760 में कृष्णांश रूप में अवतरित रणजीत नामक बालक ही 19 वर्ष की अवधि में श्री शुकदेव मुनि से शुकताल, ज़िला मुज़फ्फरनगर में दीक्षा ग्रहणोपरान्त संत चरणदास के नाम से विख्यात हुआ। इनका, जन्म, कर्म सब कुछ दिव्य था। यद्यपि शाला और मकतब की शिक्षा उनकी नाममात्र की थी तथापि वेद, पुराण, कुरान में वे पारंगत थे। हिन्दू और इस्लामी धर्म शास्त्रों में उनकी समान गति थी तथा योग मार्ग की साधना को वे मानव समाज के उद्धार हेतु आवश्यक मानते थे। संत चरणदास ऐसे संत नहीं थे जिन्होंने परिस्थितिवश सन्यास धारण किया हो अपितु उनमें एक सिद्ध योगी और महान संत के लक्षण शैशवावस्था से दृष्टिगोचर होने लगे थे। सांसारिक भोग, मोह से उन्हें पूर्ण विरक्ति थी।

पण्डित कृष्ण जू राज़दान के कवि बनने से संबन्धित एक घटना प्रचलित है कि उनके पिता पण्डित गणेश रैना अपनी भार्या के साथ किसी वर्ष ज्येष्ठ शुक्ल अष्टमी के दिन राज्ञाभवानी का तीर्थ करने मंजगाम गये। कृष्ण जू की अल्पावस्था होने के कारण उन्हें घर पर ही छोड़ दिया गया क्योंकि उनके साथ 15 मील लम्बा रास्ता पैदल तय करना सम्भव नहीं था। उन्होंने साथ जाने की बड़ी ज़िद की, रोये - धोये पर पिता ने न माना। उस रात कृष्ण जू ने अन्न-जल ग्रहण नहीं किया केवल अश्रुपात करते रहे और हठपूर्वक घर से भागने का प्रयास भी किया परन्तु सेवक ने उन्हें कमरे में बन्द कर दिया। रोते-रोते बालक गहन निद्रा के वशीभूत हो गया। नींद में उन्हें आभास हुआ कि दिव्य गुणों से संपन्न एक स्त्री ने उन्हें अम्गीकार करके सहलाया, सिर पर हाथ फेरा, स्तनपान कराया और आर्शीवाद दिया। यह महिला और कोई नहीं स्वयं माता राज्ञाभवानी थी। दूसरे दिन से बालक स्वयं ही गुनगुनाने लगा और उनके हृदय से प्रथम कविता प्रस्फुटित हो गयी जो इस प्रकार है :-

**मंज़गामि छख चुँय रा'गन्या भवानी,**
**परम पदवी छय चा'न्य जानिये।**

यही कविता बाद में शुद्ध रूप में इस प्रकार लिखी गयी-

**सर्वव्यापक छख राज्ञा भॅवानी,**
**परमुँ पदवी छि चा'न्य जानिये।**
**तुलॅमुलि नागस लछुँ लूखुँय,**

**प्रेमुॅ सॅत्य परुॅवुॅन्य श्रुॅखुॅय छिय,**
**अनपढ़ छुस तुॅ परुॅ तिहिंज़ि मान मा'जी,**
**परम पदवी छि चा'न्य जानिये।**

उसी प्रकार से संत चरणदास एक वर्ष की अवस्था में ही बाल सुलभ तोतले वचन बोलने लगे तथा दो वर्ष की अवस्था होते ही डगमगाते कदमों से चलने लगे। तृतीय वर्ष की अवस्था में बालक चरणदास समवयस्क बालकों के साथ खेलने लगे। चतुर्थ वर्ष प्रारम्भ होते ही वे तिलक छाप, गले में कण्ठी धारण करके माला फेर कर राम नाम उच्चारण करने लगे और पाँच वर्ष की आयु में वे सूर्योदय से एक पहर पूर्व शैया त्याग देते थे और ब्रह्म के ध्यान में लीन हो जाते थे। उनकी ध्यानावस्था और भगवत् प्रेम देखकर सब लोग आश्चर्य चकित हो जाते थे और उन्हें अवतारी बालक कहते थे। जब वे अपने समवयस्क बालकों के साथ खेलने जाते तब स्वयं भी राम नाम का उच्चारण करते थे तथा अपने साथियों से भी राम नाम का उच्चारण करवाते :-

**सखा मित्र सब बालकन लेकर बैठे साथ।**
**कहें हरि का सुमिरन करो जो है सबका नाथ।**

एक बार शरद पूर्णिमा के दिन जब वे बालकों के साथ खेल रहे थे तो एक बालयोगी के रूप में व्यास पुत्र शुकदेव जी ने चरणदास जी को दर्शन दिये। उस दिव्य मूर्ति, अवधूत, श्याम स्वरूप, कमलनयन, कौपीनधारी व्यक्ति ने बालक चरणदास को अपने निकट बुलाकर दोनों हाथों से उठाकर कंधे पर चढ़ा लिया और वट वृक्ष के नीचे ले जाकर अपने अंक में बैठा लिया तथा अत्यन्त स्नेहपूर्वक प्रसाद रूप में दो पेड़े दिये और कहा हमने तुम्हें अपना शिष्य स्वीकार कर लिया :-

**कृपा प्यार बहुत की कीये। पुचकारे दो पेड़े दीये।**
**बहुरि कहीं तोहि सिष हम कीन्हा। हूज्यो संत यही बर दीन्हा।**

इस प्रकार श्री शुकदेव जी ने चरणदास जी को बाल्यकाल में ही अपना शिष्य स्वीकार कर लिया था। 19 वर्ष की अवस्था में चरणदास को पुनः दीक्षा दी। दिव्य गुरु शुकदेव मुनि से दीक्षा प्राप्त करने के उपरांत चरणदास जी ने दिल्ली को अपनी साधना भूमि बनाया।

अतः यह सुस्पष्ट है कि संतों का आविर्भाव लोक कल्याण हेतु ही होता है और इसके संकेत उनके पृथ्वी पर पदार्पण के साथ ही परिलक्षित होने लगते हैं। जिस प्रकार कृष्ण जू के विषय में प्रचलित है कि यदि वे तपतपाती धूप के मौसम में वर्षा आगमन की भविष्यवाणी करते थे तो वह भी शत-प्रतिशत सही निकलती थी। उनका खगोलीय ज्ञान बहुत अच्छा था। वे प्रायः मंगल ग्रह की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं को देखकर उसका परिणाम निकालते थे। उसी प्रकार चरणदास जी को भविष्य की घटनाओं का पूर्वाभास हो जाता था। मुग़ल सम्राट मोहम्मद शाह रंगीले का सन् 1737 ई॰ में ईरान के दुर्दान्त शासक नादिरशाह द्वारा पराभव एवं दिल्ली में कत्लेआम की घटना की भविष्यवाणी छः मास पूर्व लिखित रूप में मोहम्मद शाह के पास भेज कर संत चरणदास ने सम्राट को सावधान कर दिया था और यह भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध भी हुई। 'लीलासागर' ग्रन्थ में चरणदास जी द्वारा की गई अनेकानेक भविष्यवाणियों एवं चमत्कारों का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है परन्तु विस्तार-भय से अब पण्डित कृष्ण जू राज़दान तथा संत चरणदास जी की काव्य रचनाओं में समाहित समानताओं का संक्षेप में अवलोकन करते हैं। संत चरणदास जी ने विभिन्न विषयों पर 21 पुस्तकों की रचना की है जिनमें वेदान्त, भागवत, धार्मिक प्रन्थों तथा अन्य शास्त्रों का सम्यकरूपेण समावेश किया गया है :-

**कीनो भगवत धर्म को चरणदास विस्तार।**
**ग्रंथ भक्तिसागर सरस वाणी पाँच हज़ार।।**
**महाराज बरनन करी प्रेम भक्ति भण्डार।**
**जोग ज्ञान वैराग को वरनो विविध प्रकार।।**

कृष्ण जू राम, कृष्ण, शिव और शक्ति को एक ही ईश्वर के रूप में स्वीकार करते थे-

**रामुॅय छुय कृष्ण तुॅ कृष्ण छुय रामय,**
**असि भॅखती निष्कामॅय कर,**
**अद्वैत भावना कड मुह ज़ालय,**
**हाव श्यामॅ लालय श्रीराम रूप।**
**शिवुय छुय कीशव कीशव छुय शिवुय,**

धन्य आ'स अदॅ प्योस ग्यवुय नाव,
आत्म द्वाँदस छय ब्यो'न जाय,
हाव श्यामु लालय श्रीराम रूप।।

संत चरणदास जी भी राम और कृष्ण में भेद नहीं मानते थे एक उदाहरण प्रस्तुत हैं:-

वही राम मेरो जिन रावण विनाश्यो जाय,
वही राम मेरो जिन लंक पर जारी है।
वही राम मूरो जिन केस को पछार्‌यो जाय,
वही राम मेरो जिन नाथ्यो नाग कारी है।
वही राम मेरो सो डार पात रमि रह्यो,
वही राम मेरो जामी जग में उज्यारी है।
चरणदास सब संतन को चेरो कहै,
वही राम मेरो प्रह्लाद पैग पारी है।।

कृष्ण जू अद्वैतवाद पर बल देते हुए कहते हैं:-

अरूपस कुस सरूप बने,
स्वयन ग्रा'विथ अच्युत बने,
यिय आसि तिय भासि तति कांह नुॅ कुने,
तुर्यातीता न्यरलीप नने,
म्वचि् नाद बे'दा मंज़ हनि हने
ब्रह्मानंदा सनि ख्वगुॅने,
प्रथकुनि मंज़ आ'सिथ अन्द कने।
तथ कलि यथ न्यष्कल ओम गने
सुय ज़ानि यस बनि अ'स्य क्या बनव
व्यच्‌ार करव तॅ स्वरव प्रणव।।

चरणदास जी की मान्यता है कि ब्रह्म केवल ब्रह्म है वह न एक है न दो। उन्होंने ब्रह्म के साथ इस प्रकार तादात्म्य तथा एकाकार स्थापित किया कि उन्हें ब्रह्म को दो व एक कहने में भी संकोच का अनुभव होने लगा :-

भूल हुती जब दो हुते जब नहिं एक न दोय।
अटक उठी धोखो मिटो आपन हू गयो खोय।।

एक उदाहरण और दृष्टव्य है:-

अविनाशी नाशै नहीं नाश न कबहूँ होय।
तत्व स्वरूपी एक है कभी होय नहिं दोय।।

संत परम्परा में दो उपासना पद्धतियाँ प्रचलित रही हैं, एक सगुण भक्ति दूसरी निर्गुण भक्ति। परन्तु अधिकांश संतों ने ईश्वर को न विशुद्ध सगुण माना है और न निर्गुण। वे दोनों रूपों की समान निष्ठापूर्ण उपासना करते हैं। निराकार ईश्वर के विषय में कृष्ण जू राज़दान कहते हैं:-

अविनाशुॅ न्यॅथ छुय लसुॅनुय बसुॅनुय
ज़गतुक कल्यान असनुय चोन
जय शिव ओमकारुॅ ही न्यराका'री
लोलुॅ पोश लागय च़ा'र्य-चा'रिये।

संत चरणदास जी ने ''ब्रह्मज्ञान सागर'' में सगुण एवं निर्गुण ब्रह्म के स्वरूप का विशद वर्णन किया है। चरणदास ही ने ब्रह्म को निर्गुण सगुण से परे परम शाश्वत सत्ता के रूप में स्वीकार किया है। इस संदर्भ में चरणदास सम्प्रदाय के प्रमुख संत श्री सरस माधुरी शरण जी का वक्तव्य दर्शनीय है-

सूरदास सगुन कथे निरगुन कथे कबीर।
चरणदस दोनों कथे पूरन पुरुष गम्भीर।।

संत चरणदास जी के अनुसार निर्गुण और सगुण ब्रह्म एक ही हैं। इस तथ्य पर पंडित कृष्ण जे राज़दान और संत चरणदास जी में पूर्णतया मतैक्य है। चरणदास जी कहते हैं कि निर्गुण ब्रह्म ही भक्तों के उद्धार हेतु सगुण रूप में अवतार लेते हैं:

ऐसे ब्रह्म धरी है काया। आपहि पुरुष आप ही माया।।
आप नारायण लक्ष्मी भई। नाभि कमल अरु आपहि दई।।
आपहि धरती आप हि पानी। आपहि रुद्र चतुर विज्ञानी।।
ह्वै नारायण विष्णु कहायो। शेषनाग ह्वै तलै पठायो।।

कृष्ण जू के अनुसार शिव जी को ही ब्रह्मा और विष्णु रूप मानना चाहिए।

सुय ब्रह्मा सुय वेष्णुॅ मानुन
ज़गतुक ईश्वर सुय ज़ानुन

**सुय परमात्मा सुय स्वछन्द**
**शिवनाथ सा'पनुन बांधव तुॅ बन्ध**

**सुय छुय शास्तुॅर वीद सागर**
**सुय छुय आसुॅवुन वेद्याधर**
**सुय छुय सार ओमकारुक ब्यंद**
**शिवनाथ सा'पनुम बांधव तुॅ बन्ध**

चरणदास जी आगे कहते हैं:-

**वहि निरगुन सरगुण वही, वहि दोनों से न्यार।**
**जो था सो जाना नहीं, सोचा बारम्बार।।**

जगत की असारता-क्षणभंगुरता के संदर्भ में संतों ने भारतीय चिन्तन परम्परा का ही अनुकरण किया है। कृष्ण जू संसार की असारता का इस प्रकार वर्णन करते हैं:-

**सरॅ को'र संसार नदरुय द्राव**
**डल मुॅ होशुॅ च्यतुॅकिय पम्पोश छाव।**
**सूहमुॅ हम वाय मूहनि शाठय**
**ज़ॉन्य नाव पकुॅनाव से'जि वति पाठय।**
**सहस्र दॅलु डलुॅ पदमुॅ आसन प्राव**
**डल मुॅ होशुॅ च्यतुॅकिय पम्पोश छाव।।**

चरणदास जी को संसार, देह, जन्म सब स्वप्न के समान लगता है। उनके अनुसर केवल ब्रह्म ही नित्य है ओर सत्य हैं :-

**भाई रे स्वप्न ये संसार**
**देह स्वना जन्म स्वपना स्पन कुल व्योहार।।**

**चरणदास स्वपना ब्रह्म सांचो एक रस नित जान।**
**सत्य स्वपना झूठ स्वपना, कहा कहूँ निर्वान।।**

चरण दास जी संसार की क्षणभंगुरता का वर्णन इस प्रकार करते हैं-

**दुर्योधन रावण गये, अरु यादव परिवार।**
**चरणदास थिर को नहीं, होय मिटै संसार।।**

साधक को ईश्वर-ज्ञान प्राप्त करने के लिये इन्द्रियों को वश में रखना चाहिये काम, क्रोध, लोभ और मोह-माया को त्यागना अत्यन्त आवश्यक है। चरणदास जी साधक को समस्त इच्छाओं अभिलाषाओं को छोड़कर हरि सुमिरन में लीन होने का उपदेश देते हुए कहते हैं-

**जक्त वासना के विषे, घर चिन्ता का जान।**
**जग की आशा छोड़कर, हरि सुमिरन की ठान।।**

और भी-

**जग माँही ऐसे रहो ज्यों अम्बुज स्यू मांहि।**
**रहे नीर के आसरे पै जल छुवत नांहि।।**

इस संबन्ध में पंडित कृष्ण जू राज़दान के विचार द्रष्टव्य हैं:-

**दीह दृष्टि रो'स्त युस रोज़ि दीहसुॅय मंज़।**
**करि आत्मस विवेक पूज़ायि संज़।।**

निम्न पक्तियों में कृष्ण जू साधक को उपदेश देते हुए कहते हैं-

**क्या छु लबुन क्या छु रावुन**
**यिय छु प्रावुन तिय चुॅ प्राव**
**दीह अभिमान गछ़ि त्रावुन गछ़ि प्रावुन ब्रह्मभाव**
**गाटुॅजार गछ़ि मॅशुॅरावुन याद पावुन साधुॅ नाव**
**भूगुॅ अभिलाष गछ़ि सावुन वुज़ुॅनावुन सत स्वभाव**
**वैरागुॅ बाग गछ़ि छावुन फुलयि हावुन हरदुॅ वाव**
**सुबॅ फो'ल व्वथ शामुॅ रूॅपस लवुॅहतिय पोश छाव।**

चरणदास जी ने अपनी रचनाओं में सतसंग की बहुत महिमा गाई है। उनके अनुसार सतसंगति की एक घड़ी तपस्या के हजार वर्षों के बराबर है-

**तप के वरष हज़ारहू, सतसंगत घड़ि एक।**
**तौ भी सरवर न करै, शुकदेव दिया विवेक।।**

कृष्ण जू राज़दान द्वारा रचित निम्न पंक्तियों में भी यही भावसाम्य परिलक्षित होता है–

**सतुक श्रवुण कनन मंज़ गाव**
**शब्द बूज़ चो'ल गर्युक गम**
**अगम अपार द्यगम्बर सॉर**
**संसारॅ व्यवहार भ्रमुॅय ओस**
**सप्तॅरेष्यन हुंद शमुॅय तुॅ दमुॅय**
**सत्संगुॅ समागमुॅय ओस।**

कृष्ण जू ने केवल कश्मीरी भाषा में ही काव्य रचना नहीं की अपितु हिन्दी और फ़ारसी में भी अपनी लेखनी चलाई है। उनका काव्य-माधुर्य, ओज और प्रसाद गुणों से परिपूर्ण है। कृष्ण जू द्वारा भगवान श्रीकृष्ण पर रचित हिन्दी, उर्दू और फ़ारसी मिश्रित एक गीत की झलक इस प्रकार है:–

**छोड़ो परहेज़ संजीवन का दवा कर मुझको**
**हिजर का दर्द है मिलने का शफ़ा कर मुझको।**
**मैं बिलखता हूँ नज़र रखके तेरे आने पर**
**आओ श्रीकृष्ण भी वादे वफ़ा कर मुझको।।**

चरणदास जी एक महान संत, सिद्ध-साधक, अलौकिक और दिव्य शक्ति सम्पन्न होने के साथ-साथ काव्य सृजन के क्षेत्र में भी अद्वितीय प्रतिभाशाली थे। कृष्ण जू राज़दान द्वारा रचित उपर्युक्त गीत तथा चरणदास जी द्वारा रचित निम्नलिखित ग़ज़ल की भाषा और श्रीकृष्ण के प्रति आसक्ति भाव में अद्भुत साम्य देखने योग्य है :–

**मुझे कृष्ण के मिलने की आरज़ू है।**
**शबो रोज़ दिल में यही जुस्तजू है।।**
**नहीं भाती है मुझको बातें किसी की।**
**सुनी जबसे उस यार की गुफ्तगू है।।**
**नहीं मुझको मतलब जहाँ में किसी से।**
**चुभा जब से दिल में सनम रूबरू है।।**
**जो आशिक है उसका नहीं उससे गाफिल।**
**तड़पता अज़ल से खड़ा रूबरू है।।**
**शराबे मुहब्बत पी जिसने यारो।**
**दुआ दो जहाँ में वो ही सुर्ख़रू है।।**
**सभी आशिकों पै किया करम तूने।**
**मुआसी पै तेरा नहीं दिल रजू है।।**
**जहाँ देखो वहीं है वो हाज़िर।**
**हर एक गुल में उसकी मिली मुश्कबू है।।**

निष्कर्ष यह निकलता है कि पण्डित कृष्ण जू राज़दान 22 वर्ष की अवस्था से लेकर 89 वर्ष की अवस्था (देहावसान पर्यन्त) तक लीला गान करते रहे। अपने काव्य के ज्ञानामृत से कश्मीरी जनता को ईश्वर-प्रेम और भक्ति क मार्ग की न केवल प्रेरणा दी अपितु उनको आनन्द विभोर भी किया। इनका काव्य गेय काव्य है। इनकी सरल सृजनात्मक प्रतिभा के कारण प्रवाह पूर्ण ईश्वरीय आभास प्रदायनी हो गयी है।

संत चरणदास जी ने भी अपने 79 वर्ष 3 माह के जीवन काल में अपनी योग सिद्धियों तथा आत्म निहित अलौकिक शक्तियों से समाज को चमत्कृत करने वाले अनेकानेक कार्य किये। उनकी काव्य प्रतिभा नैसर्गिक थी क्योंकि स्कूली शिक्षा में उनका मन नहीं रमा था। चरणदास जी की रचनाओं में वेदों और पुराणों का सार, योग, ज्ञान, कर्म, दर्शनिक ज्ञान, भक्ति संगीत आदि सब कुछ समाहित है। उनका साहित्य विपुल ज्ञान का सागर है। इन रचनाओं में उनकी भूमिका समाजोद्धारक के रूप मुख्य रूप से परिलक्षित होती है।

प्राकृतिक सौन्दर्य, शिक्षा, कला एवं संस्कृति सम्पन्न कश्मीर गत 14 वर्षों से आतंकवाद की आग में तिल-तिल कर झुलस रहा है। आज कश्मीर के हिन्दू अपनी मातृ-भूमि से विस्थापित हो यहाँ-वहाँ तिनकों के समान बिखर गये हैं। ऐसे में उन्हें अपनी जड़ों से जोड़ते हैं त्यौहार, धार्मिक आयोजन और साहित्य। साहित्य समाज का दर्पण होता है। अतः किसी भी विचारधारा को अक्षुण्ण एवं सजीव बनाये रखने के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि उससे संबंधित साहित्य का संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार किया जाए तथा उसे जवीन में यथासंभव अपनाया जाए। कश्मीर के लोगों और कश्मीरी विस्थापितों की यह आशा है कि कश्मीर समस्या हल होगी, आतंकवाद समाप्त होगा, अशान्ति के स्थान पर शान्ति का राज्य स्थापित होगा। आज की संकटमय परिस्थितियों में पण्ड्रित कृष्ण जू राज़दान का साहित्य कश्मीरी विस्थापितों के हृदयों के ताप को हरेगा, ऐसी मेरी आशा है।

# कश्मीरी सन्त कवि कृष्ण राज़दान

**– प्रो० चमनलाल सप्रू**

छः सौ साल तक मुस्लिम शासन काल में संत्रस्त कश्मीरी हिन्दू समाज को सिख एवं डोगरा शासन काल में अपनी आस्था के अनुसार खुलकर जीने का अवसर प्राप्त हुआ। माथे पर केसर, सिन्दूर एवं चन्दन का तिलक लगाकर हिन्दू कहलाने पर उन्हें गर्व होने लगा । मुस्लिम क्रूर शासकों द्वारा नष्ट किये गए मंदिरों के जीर्णोद्धार एवं नए मंदिर निर्माण करने का एक अभियान प्रारम्भ हुआ। इस धार्मिक एवं सांस्कृतिक नव जागरण को अपने भक्ति काव्य से संजीवनी प्रदान करने में अग्रणी संतकवि कृष्ण राज़दान का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

पंडित कृष्ण जू राज़दान (1850-1926) मूलतः एक योगी थे। किन्तु उन्होंने गृह त्याग नहीं किया । *'बस्ती मंज़ वन वासुँय रांज़* (बस्ती में रहते हुए ही वनवास का आनन्द प्राप्त करो) यह था उनका जीवन दर्शन। अर्थात् *'पदम् पत्र मिवाम्बसा'* जल में कमल की भान्ति रहो। निर्लिप्त बेदाग़ वह अपने जन्म स्थान जम्मू-श्रीनगर राजमार्ग पर स्थित वनपुह में ही नहीं रहते थे अपितु पूरी कश्मीर घाटी के प्रमुख तीर्थ स्थानों के अतिरिक्त (राजधानी) श्रीनगर के साथ-साथ प्राकृतिक सौन्दर्य से घिरे हुए अनेक गांवों में भी अपने शिष्यों एवं प्रशंसकों के साथ घूमते-फिरते थे। इसका अभिप्रायः था दूर-दूर तक फैले मुस्लिम-बहुल कश्मीर में उन गांवों में बसे दो-दो चार-चार हिन्दू घरों को नैतिक सम्बल प्रदान करना। उनके सनातन संस्कारों और धार्मिक विश्वासों को संतुष्ट करना। यही कारण है कि वह अपने समय में ही अतीव लोकप्रिय कवि हुए ।

कश्मीर शैव-दर्शन का केन्द्र है। अतः किसी भी भक्त कवि के लिए शिव सम्बन्धी रचनाएं प्रणीत करना स्वाभाविक है। किन्तु सनातन धर्मावलम्बियों के विभिन्न मत-मतान्तरों के देव-देवियों के बारे में भी अत्यंत सुंदर कविताएं रचकर कृष्ण जू राज़दान ने भारतीय संस्कृति के मूल मंत्र समन्वय का भरपूर उपयोग किया। उनकी असंख्य कविताओं में से प्रतिनिधि रचनाओं को तीन वृहत खंडों में प्रकाशित किया गया है। यह हैं- 'शिव लग्न', 'कृष्ण दर्शुन' तथा 'कृष्ण वॉनी।' प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान आलीकदल, श्रीनगर निवासी पंडित मुकुंदराम शास्त्री इनके गुरू थे। मंज़गाम स्थित जगन्माता के मन्दिर में इन्हें देवी माँ का साक्षात्कार हुआ था । भगवान अमरनाथ और महाराज्ञा (क्षीर-भवानी) के जगत् प्रसिद्ध तीर्थस्थलों के प्रति इनकी असीम श्रद्धा इनके भक्तों के लिए प्रेरणादायक थी

डॉ० शशिशेखर तोषखानी के अनुसार "उनकी अपनी शैली, अपना लहजा, अपनी अलग पहचान है जो उन्हें कश्मीरी भक्त कवियों में सबसे बड़े गीतकार के रूप में स्थापित करती है। विद्यापति की भांति शिव और कृष्ण दोनों उनकी आस्था अतः उनकी सृजनात्मकता के केन्द्र रहे हैं।"

वे मातृभाषा के पक्षधर होते हुए भी संस्कृत, फारसी, हिन्दी और उर्दू काव्य के भी रसिया थे। मातृभाषा कश्मीरी के प्रति अपने अगाध प्रेम का वर्णन उन्होंने इस प्रकार किया है:-

**वनय दीवी छय का'शिर ज़्यवुँय टॉठ ।**
**परख बोज़ख तुँ त्ये'लि काठस गछ़िय का'ठ ॥**

अर्थात् - मैं कहता हूँ देवी मां को कश्मीरी भाषा ही प्यारी है। जिसे सुनने-गुनने से काष्ठ सी कठोर बात भी कोमल (सुबोध) हो जाती है।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इस महान कश्मीरी कवि ने राजभाषा उर्दू और घाटी के विद्वत समाज में प्रचलित फ़ारसी के प्रभाव से अलग हिन्दी भाषा में भी स्फुट रचनाएं की है। ऐसी उन्होंने कश्मीर यात्रा पर आने वाले साधु-संतों के सम्पर्क में आकर किया हुआ लगता है।

# Krishanajoo Razdan – A Great Saint Poet

**Ravinder Ravi**

In the 19th century, the land of Kashmir threw up some great poets whose rich and prolific poetry created quite an impact on the people. Although Kashmiri poetry in this century was highly Persianised and imitated the style of Persian classics, the credit goes to Bhakti poets who liberated Kashmiri language from the dominance of Persian diction in a way that it withered away gradually. The 19th century also saw profusion in various genres and forms of Kashmiri poetry. Devotional Kashmiri poetry too got a fillip. No doubt before this century, Sahib Koul's devotional poetry had already carved a niche for itself. I may be allowed to say that it was not till Parmanand appeared on the scene that it got finally established as a trend. Paramanand was not just a pioneer in writing devotional songs in Kashmiri, but surpassed all his predecessors in both profundity of thought and poetic merits. It was during this period that many poetic works on the theme of Shiva-Parvati marriage were written. Prakash Ram Kurigami, Paramanand and Krishnajoo Razdan all composed works titled 'Shivalagna', but Krishnajoo Razdan's 'Shivalagna', published by the Asiatic Society of Bengal, seems to excel all other works on the theme. Krishnajoo Razdan was born in Vanpoh in 1850, some say 1851, and went to his heavenly abode in 1925— in 1926 according to some.

A famous writer of Lila (devotional) poetry, Pandit Krishnajoo Razdan was a Sanskrit scholar also. Being a prolific writer, he soon attained a distinct place among the writers of his age. Writing about Krishnajoo Razdan, Master Zinda Koul says: "He is very good in technique and excels even Paramanand in clearness of language, in description of nature, in local colour and perhaps in musicality of verse also."

Krishnajoo Razdan's language is simple and sweet. Rich in musical quality, his lyrics display great metrical variety. His diction is lucid, and he does not shy away from making use of Sanskrit words wherever required. His works, the Shiva Parinay, Lila lyrics and Harihar Kalyan reflect his true poetic genius and passion. Being well aquainted with Sanskrit, Pandit Krishnajoo Razdan enjoyed a great respect among the writers of metrical romances of his times. Shiva Lagana immortalized him as a saint-poet because of its beautiful lyricism and profundity of thought. His skill as a narrator and his weaving stretches of mystic symbolism into his highly musical verses makes him stand apart from other poets of his age.

The advent of the 20th century saw Krishnajoo Razdan emerge as one of the greatest writers of devotional poetry. But he did not keep himself confined to devotional themes alone; he tried his hand on writing on other subjects and themes also. Some critics have said that Krishnajoo Razdan was the first devotional poet to highlight the spirit of patriotism in the beginning of 20th century. This created a basis for poets like Azad and Mehjoor for strengthening the trend of patriotic poetry in Kashmiri. In his poems, Razdan highlighted the plight of craftsmen and other professional workers like the potter, the jester, the blacksmith, the wrestler, the cook, the gardener etc. He regarded this world as a "Bhand Jashan"or a folk-play. Krishnajoo Razdan was indeed intensely devoted to Shiva—Shiva who is Jnana, the self-luminous light of lights. Shiva is the creator, infinite consciousness, eternal, omnipresent. Shiva is the Ultimate Reality and the Absolute, without a beginning or an end. Shiva is

destroyer also— destroyer of Asuras, the evildoers. He swallows poison to save the universe. The rich devotional songs in praise of Shiva written by Razdan are a great treasure of immense value for Kashmiri literature.

In one of his poems he says :-

My childhood passed asking only for you, O Shiva.
Have mercy on me
Liberate me from the yoke of materialistic life."

He further says :-

You are my only hope, take pity on me
I am your disciple,
get me out of this difficult situation, O Lord Shiva.

He does not give up and continues to struggle to get the desired result. Optimism keeps him going on in his arduous spiritual quest. His profound faith does indeed move mountains. While praying to Lord Shiva, Krishnajoo asks for strength from "the hermit whose body is besmeared with ashes". He surrenders himself at his lotus-feet.

In another hymn in praise of Shiva, Krishnajoo says:

The hermit whose neck is adorned by snakes
And from whose matted locks emerges the Ganga
Is none other than 'Shambhoo', my great Lord.

God creates the world by his mere will. Maya produces illusion. Karma or action pays only if it is *nishkama* or unattached to any desire. Renunciation means to get rid of Maya that keeps us in shackles. Fear of God is a deterrent to evil deeds. God is aware of all our actions, whether good or bad. We cannot hide our misdeeds from him when he already knows about them. In this manner Krishnajoo advocated detachment from those earthly and mundane desires which hamper one's union with Shiva.

Krishnajoo Razdan does not believe in *sannyasa* in the prevalent sense of the word, or in renouncing the world. For him renouncement meant giving up *kama, krodha, lobha, moha* and *ahankara.* Krishnajoo Razdan questions the very basis of renunciation and *sannyasa* in the following lines,

Why should we renounce the world?
We will devote ourselves wholly to
the love of Krishna.
For us that is austerity and yogic practice.

Krishnajoo Razdan remained continuously engaged in penance and spiritual practices throughout his life. He writes :-

"I follow you Shiva, searching you on the Harmukha
My Lord, bestow upon me your grace
by granting me your Darshana."

Like Lalla, Krishnajoo also wants to take his Lord in his lap and sing a lullaby to Him. He wants to love Him in the warmest corners of his heart. Whether it is Ganesha, Shiva, Rama or Krishna, they all represent the ultimate reality, union with which is to be achieved by the spiritual aspirant. Krishnajoo had attained eternal peace by turning his mind away from the worldly pleasures and adoring the divine in his heart. This gave him freedom from want, worries, anxieties and fear. He believed sincerely in the oneness of the universe and in the brotherhood of mankind. "Let us all unite", he exhorts, "and go in for self-introspection Let us stand united and strive for peace". Again like Lalla, he seems to believe that, it is "we who existed in the past and we who shall exist in the future".

While the great saint-poet has become a household name in Kashmir, he is not totally unknown in other parts of the country. Sir George Grierson got his 'Shiva Lagna' published by the Asiatic Society of Bengal. Well-known Kashmiri scholar, Professor S.K.Toshakhani also published some of his songs.

I kneel down in prostration before this great saint-poet of Kashmir.

Let me behold thee everywhere
Let me merge in thee forever
*Om Namah Shivaya!*

# शब्दों की श्रद्धांजली

महाराज कृष्ण सफाया

मॉज शारदायॅ हुन्द छु वरदान् कृष्ण जू राज़दान
सरस्वती हन्ज़िं दयायिँ हुँद छु आसमान, कृष्ण जू राज़दान।।

शिव तुॅ शक्ति नॉविच रटिथ मोखतॅ माल
श्री कृष्ण सुँद रूपॅ् वुछुन बालगौपाल
नंदान्द प्रवांन् बेयॅ छु प्राज़लान, कृष्ण जू राज़दान।।

अमरनाथन अमर बनॉविथ शिवमार्ग होव्नस
शारिका मातायिँ दया दृष्टिँ हुँद दामान छौवनस
तॅवय़ॅ भक्ति भावुक अमृत छु चावान, कृष्ण जू राज़दान।।

दिह अभिमान त्रोवुन ब्रह्म भाव प्रॉवुन
गाट्जार मुशराविथॅ याद साधु नाव पावुॅन
चे़यथ प्राज़नाविथ सिर्युक दर्शन छु हावानॅ, कृष्ण जू राज़दान।।

बेयॅल प्मपोश तयॅ मादलॅ लगियथ
गंगॅज़ल कनियॅ अशॅवोन्य भविथ
शिव शंभू छु सोन्ध्रवान, कृष्ण जू राज़दान।।

शिवसुंदि यिन् यस पोन्य वुज़ि नागरादस
ज़ान मान यस दयस त् पॉन्य पानसँ
लीलाय शब्दॅ सुवय वेचा़र छु वुज़नावान, कृष्ण जू राज़दान।।

सुॅ सिरयुक तीज औस किन् च़न्दुम्च नर्मी
ग्रेज़ित तमिसंदिँ वच़न वनान ज़ि बनू चॅ़ कर्मी
प्रथ विज़य पज़र्य्च वथ छु हावान कृष्ण जू राज़दान।।

दपान युस रुतुय करवुन छु रोज़ान रुतुय छु प्रवान
यथ्यिस छुनः कांह ति वरिय गज़रावान
यहीथ पदवी मंजोहर अॅठभ छु प्रावान कृष्ण जू राज़दान।।

वलियुव ऑसि ति पाननस सन दिमव
तृसंध्युन लीलायन तु भजनन् कन् थवव्
रलिथ्थ मीलिथ्थ यिमव छ्ॅ वन्यि दिवान कृष्ण जू राज़दान।।

तिथिय्य ऑसि बनव् यि छुन् मुमकिन
तमसिंज़ हावमचि़ वति पकव छु यि मुमकिन
भावहत्यन हुन्द पोशगोद् छु सोंबरावान कृष्ण जू राज़दान।।

छु तृष्ति लोकचारय यिमवय वच़नव वुज़नोवमुत
सतगुरन हन्दि कृपायि तंबलोवमुत
ज़ानिथ सारिनय दया छु करनावान कृष्ण जू राज़दान।।

# Gratitude

We at the Jammu-Kashmir Vichar Manch are happy that we are bringing out a Souvenir–albeit a little later than expected–as a token of our reverence for Krishnajoo Razdan, a great devotional poet of Kashmir. for over one year now the Manch had been engaged in organizing programmes in connection with 150th birth anniversry of the saint-poet and this Souvenir comes as the culmination of the celebrations.

We regard Krishnajoo Razdan as one of the noblest representatives of the values and ideals cherished by Kashmiri Hindus over the centuries. Remembering him in these difficult days when the entire community has been uprooted and cut off from its cultural moorings in Kashmir comes as a soothing balm for their hurt psyche. His sweet and melodious devotional songs are proving a source of solace and inspiration for them, filling their minds with the hope of divine deliverance from their sorrow. The Jammu and Kashmir Vichar Manch feels that the legacy of great saints like him must be passed on to the coming generation and the generations to come. We think it most important to inculcate, in the young minds especially, an understanding of our culture and sense of reverence for high spiritual values. Commitment to the protection of our cultural and literary heritage has become imperative for us in the present circumstances. The publication of this Souvenir is also aimed at this objective.

We feel greatly encouraged that eminent personalities of the country like the respected Sarsanghachalak Shri Sudershanji, His Excellency Shri Kedar Nath Sawney, Governor of Goa, and Shri Indresh Kumar ji have been kind enough to send us their inspiring messages of good wishes for the publication of the Souvenir. We also feel abundantly thankful to all those patrons from the corporate world who have provided generous financial support to us in the shape of advertisements. But for their valuable help and co-operation it would not have been possible for us to bring out this publication.

We feel indebted to the eminent artist Shri Veer Munshi for prepaing the cover-painting for the Souvenir and also three other paintings two of showing incidents from Krishanajoo Razdan's life. We thank him profusely and sincerely for the paintings.

We cannot but express our feelings of deep gratitude to all those writers and scholars who have sent their valuable contributions for the Souvenir at our request. We greatly admire their sense of commitment to the cause of the community, whose esteemed members they are. They have thrown important light on various aspects of Krishnajoo Razadan's poetry and personality.

Words are not sufficient to express our gratitude to Dr. S.S. Toshkhani who accepted our request to edit the Souvenir despite several earlier commitments. He took great pains in giving it the shape of a publication of quite a high standard.

We would fail in our duties if we do not acknowledge the contribution of Shri M.K. Safaya, our Patron and Shri Ajay Bharti, General Secretary of the JKVM in making the publication a success.

Not to forget the contribution of Shri Jia Lal Razadan of the village Vanpoh in Kashmir, who was a grandson of Krishnajoo Razdan, for collecting and compiling the poems of the great saint-poet in the Persian script from difficent sources, including oral. But for his efforts the invaluable treasure would have been lost. Another grandson of his, Shri S.L. Razdan, is with us in Delhi. He did no less by transliterating the poems from the Persian script into Devanagari and bringing them out in three volumes titled 'Shiva Lagna', 'Krishna Darshan' and 'Krishna Vani'.

The JKVM, Delhi did recognize his great contribution on the eve of the Shivaratri festival.

Shri Mayank Agrawal of the Graphic World, Darayaganj, New Delhi, deserves our special thanks for undertaking to print the Souvenir at very short notice.

**– Anupam Kaul**
President JKVM, Delhi.




## of the future takes shape.

**To make banking easier and faster for you, we've significantly enhanced efficiency and become a strong technology driven bank.**

- The fastest growing bank in India with more than 436 branches spread across the country.
- 216 branches fully computerised, constituting more than 80% of our total business.
- Launched co-branded J&K Bank- American Express Credit Cards.
- Providing (State-of-Art) Anywhere Banking through our own VSAT Network.
- ATM facility available at 19 branches and will go upto 75 branches during the year.
- **SWIFT connectivity at 14 locations facilitating NRI customers.**
- **Best Interest Rates and International Level facility for NRI / NRO customers.**
- Depository Services available at Delhi, Jammu and Srinagar.
- Introducing Inter-net Banking shortly.

**Our vision is to be at the forefront of the nation's banking industry, with committed people working as a team to create customer satisfaction.**

**THE JAMMU & KASHMIR BANK LTD.**

*Committed to earning your Trust*

S. Nash

WITH BEST COMPLIMENTS
FROM

AV

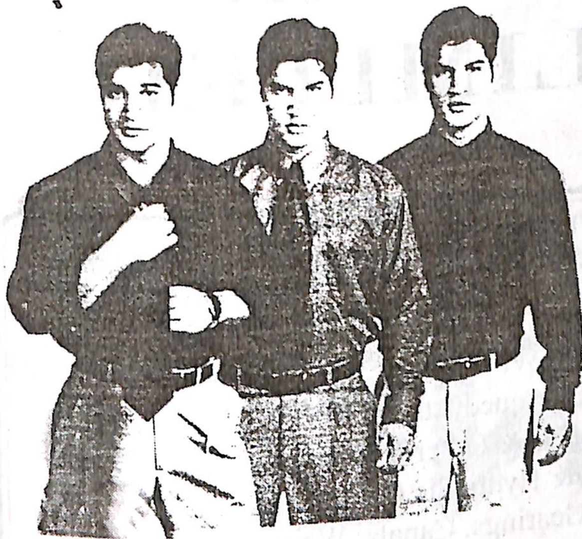
Amar Nath Virender Kumar
Kirana & Commission Agents
6687, Khari Baoli, Delhi-110006
Phone : (O)-23957775, (R)-23276064

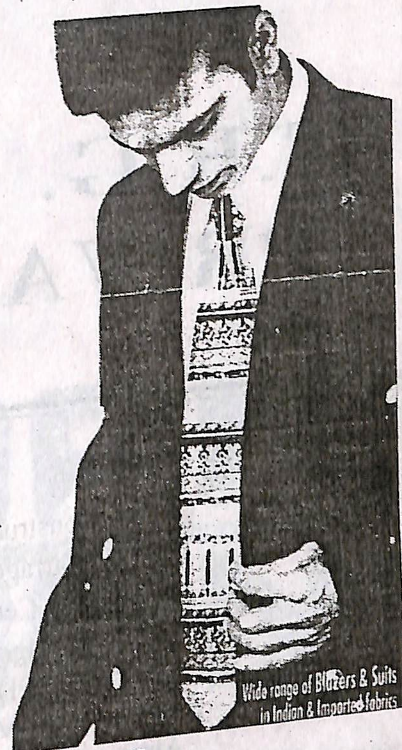
*With Best Compliments from:*

# Harmony of Style & Value

**only at**






## *THE CO-ORDINATES*

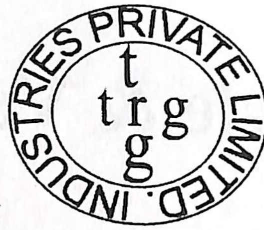
Plain Shirt with matching Plain Satin Ties
Rs. 450/- only

**Shirts Rs. 195/- onwards**
Shirts in vibrant checks, trendy colours, range of textures, for casual, formal & semiformal occasions.

**Trousers Rs. 325/- onwards**
Trousers in Stainfree, Wrinkle-free, Scented, Gaberdines, Flat-fronts, Office wear, party wear, etc.

**K. PRASHANT ENTERPRISES**
15, Bhawani Complex.
Bhawani Shankar Road
Dadar (w) Mumbai - 28.

*With Best Compliments from:*




# T.R.G. INDUSTRIES PRIVATE LIMITED

Specialist in:

The Construction of Earthen/Cement Concrete Dams,
Barrages, Head regulators, Power Houses,
Prestressed Cement Concrete / RCC. Aqueducts, Bridges,
Railway Bridges, Tunnels, Multistoried & Other Buildings
All Types of Hydro-electric power & Hydraulic Projects.
Besides Hydro Mechanical Gates & Gearings, Canals, Weirs,
Airports, Mechanized Construction of National Highways

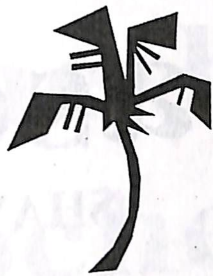
**Head Office :**

**E-461, GREATER KAILASH - II,**
**NEW DELHI- 110048.**
**Tele Fax : 6444167, 6477582**
**E-mail : trgcl@satyam.net.in**

**Registered Office :**

**GAURIMAL COMMERCIAL COMPLEX,**
**29, RAIL HEAD, JAMMU-180004**
**Phones : 471857, 471606**
**Tele Fax : 0191-471605**

*With Best Compliments from:*



NEWMAN

NEWMAN

14/2369, Beadon Pura (Basement)
Karol Bagh, New Delhi-110005
Phone : 5715846 Grams : NEWBREED

*With Best Compliments from:*

# ahujasons

**SHAWL WALE (P) LTD.**



**Regd. Office** : 6/44, W.E.A.
Ajmal Khan Road,
Karol Bagh, New Delhi-5

**Phones** : Marketing Retail - 5720304

**Wholesale** : 5749867

**Export** - 5751850

**Fax** : 5757149

**Admn. Office** : 5817605

**Website** : http://www.ahujasons.com

**E-mail** : ahujason@del3.vsnl.net.in

*With Best Compliments from:*

# J.Maheshkumar Petrochemicals (P) Ltd

*CONSIGNEE STOCKIST OF*

| IPCL | | FOR | GE PLASTICS | |
|---|---|---|---|---|
| Indothene | LDPE | | LEXAN | Polycarbonate Resin |
| Indothene | LLDPE | | NORYL | Modified PPO Resin |
| Indothene | HDPE | | NORYL GTX | Modified PPO alloy |
| Koylene | PPHP | | Valox | Thermoplastic Polyest.... |
| Koylene | PPCP | | | |
| Indovin | PVC | | | |

6/18, Sanjay Building,
Mittal Estate, Sir M.V. Road,
Andheri (E), Mumbai- 400 059.
Phone : 850 1827 (4 LINES) 859 0725/26
Fax : 22-850 8534 / 22-850 3781.
**E-mail : jmk@bom3.vsnl.net.in**

*With Best Compliments from:*

# Ocean To Sky

## Our Service Knows No Limits

***We Forge :***

- *Flanges, Blanks*
- *Discs, Covers,*
- *Tube Sheets*
- *Rings*

***Under the Inspection Of :***

- *EIL, DNV,*
- *BVQI, H & G,*
- *LLOYDS, TUV,*

**THE PUNJAB STEEL WORKS**

B 38, Mayapuri Industrial Area, Phase 1, New Delhi, 110064, India.

Telephone No. : + 91 11 5130960, 5141318, 5141309

Fax No. : + 91 11 5137432, 5144443.

**Website : www.pswforge.com**

**e.mail : pswforge@mantraonline.com**

*With Best Compliments from:*




# Securities One (India) Ltd.

**6th Floor,**
**Dr. Gopal Dass Bhawan**
28, Barakhamba Road,
New Delhi-110001

*With Best Compliments from:*

# ANIKA INTERNATIONAL PVT. LTD.

A-11, First Floor, Kailash Colony, New Delhi- 110048
Tel. : 6411007, 6431067, 6234203, 6417254
Fax : 6444642, 6484575
E-mail : anika@del2.vsnl.net.in

*With Best Compliments from:*

*Vinod Bagga*



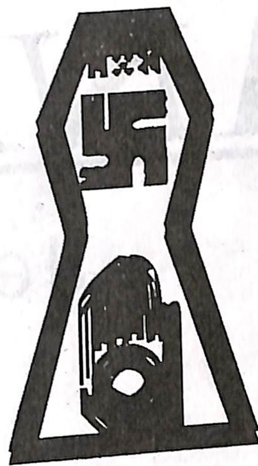

# BAGGA TENT HOUSE

Government Contractors (Approved)
For sparkling Marriages, Dazzling Theme Parties
Creative Events & Designer Fashion Show

5, Udyan Marg, Opp. Central School.
Gole Market, New Delhi-1
Ph. 3747499, 3347739
Tele Fax : 3362134
Mobile : 9811168581

E-mail : bth@mantraonline.com
Website : www.baggatents.com

With Best Compliments from:



M/s. **Arihant Trading Company**

*With Best Compliments from:*

# KANAK

Jewellers.

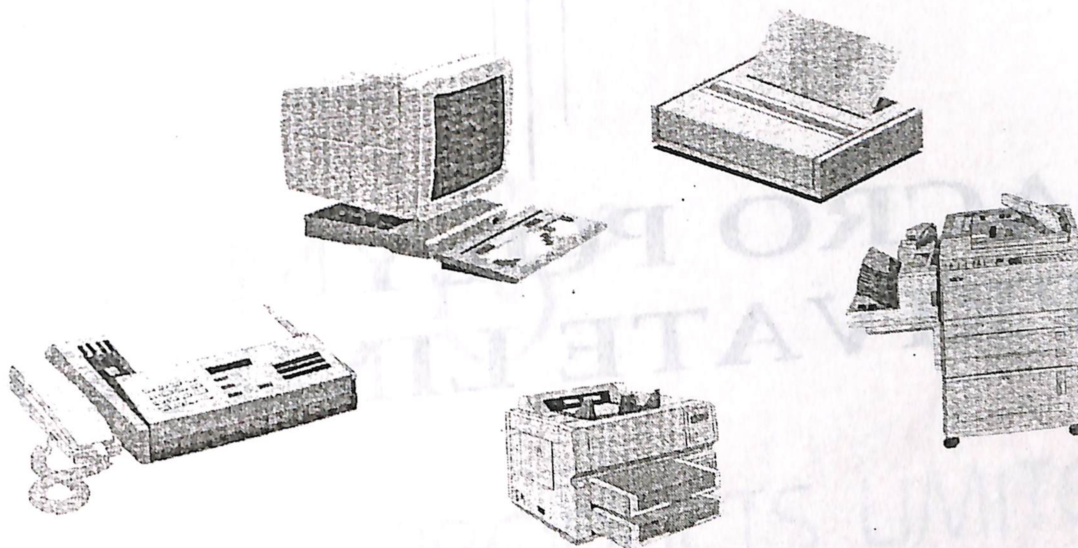
(unit of M.D. Overseas Ltd.)

10-A, Scindia House,
Connaught Circus.
New Delhi-110001
Tel. : 3358509/10
Fax : 3711154
E-mail : mdover@vsnl.com

*With Best Compliments from:*




We Care



Anil Tikoo

**Offcom Equipments (India) Private Ltd.**

**Head Office:**
C-20-B (G.F.), Kalkaji,
New Delhi-110049
Tel. 6213053, 6460362, 6222141
Fax : 91-11-6444744
E-mail : info@offcomindia.com

**Branch Office :**
90, Munir Manzil, Regal Chowk,
**Srinagar**, J&K
Tel. : 0194-472130, 474603

5 A/A, Gandhi Nagar, **Jammu**
**Tel.:** 0191-456854

**IT/OA SOLUTIONS IN PARTNERSHIP WITH**
HP TATA LIEBERT CANON






Canon

*With Best Compliments from:*

# ACRO POLYMERS PRIVATE LIMITED

## KHANDSA ROAD, GURGAON

## TELEPHONES: 6371069, 6371962

**Manufacturer of :**

**"ACROLITE" POLYESTER RESINS AND PIGMENT PASTES**

With Best Compliments from:

CAMPHOR

&

ALLIED PRODUCTS LIMITED

&

MALTI-CHEM RESEARCH CENTRE

3, GIDC Ind. Area
Nandesari 391 340,
Dist. Vadodara

*With Best Compliments from:*

**M/s. Galaxy Sports**
**Shoe**
**Co. Pvt. Ltd.**

*With Best Compliments from:*

# AMTEK GROUP :

## Amtek Auto Limited
## Amtek India Limited
## Benda Amtek Limited
## Amtek Sccadi Limited

***Manufacturers of:***

## Auto Parts

***Head Office:***

Bhanot Apts.
4 LSC, Madangir,
New Delhi-110062

Tel. 26092281-84, 26088219, 26096146

*With Best Compliments from:*

# TITANIC

## MERCANTILE Pvt. Ltd.

204/205, F-1, Jumbo Darshan
Western Express Highway,
Andheri (E) Mumbai-69

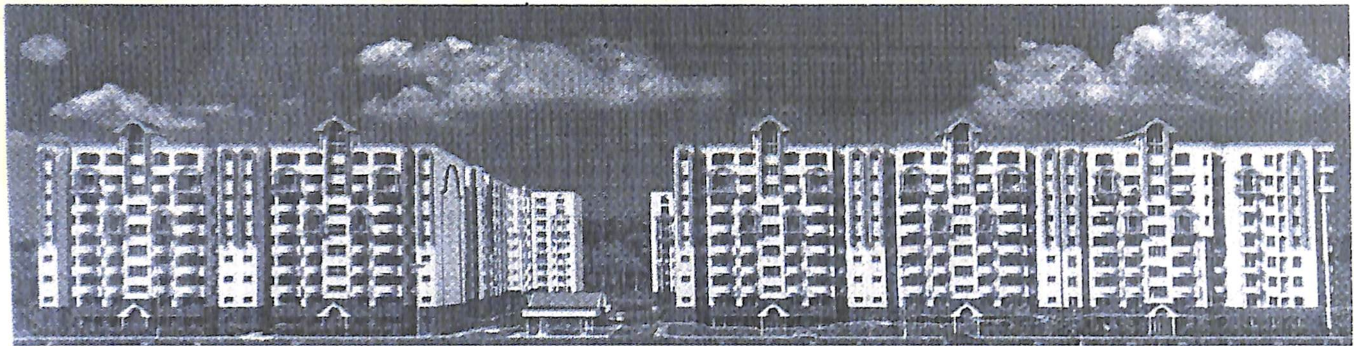
# GREETINGS




MARK AUTO
INDUSTRIS LTD.

# WITH BEST COMPLIMENTS FROM

A m b i e n c e   P r e s e n t s

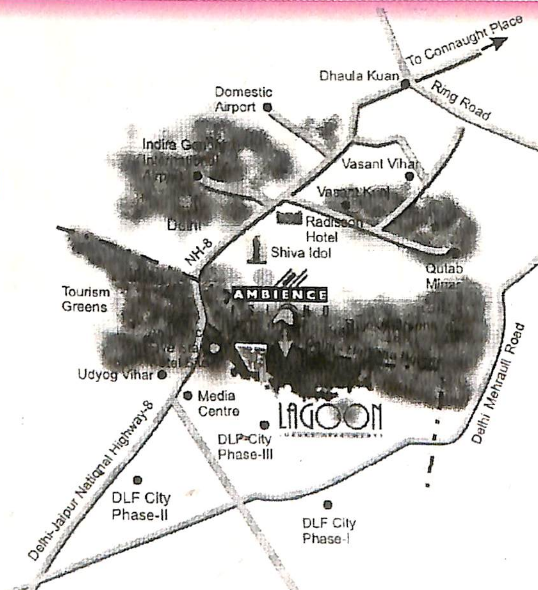


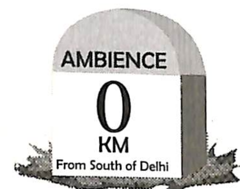
## Lagoon luxury apartments.

- Advantage Location
- Advantage Environment
- Advantage Stage of Construction
- Advantage Option
- Advantage Amenities
- Advantage Foundation
- Advantage Price
- Advantage Specifications

**Approximate distance from important landmarks of Delhi**

- 4 kms from Radisson Hotel
- 6 kms from IGI
- 7 kms from Domestic Airport
- 10 kms from Dhaula Kuan
- 14 kms from AIIMS & Safdarjang Hospital
- 16 kms from Connaught Place




Escorted site visit at your convenience

**HIF Enterprises Private Limited**

L-4, Green Park Extn., New Delhi-110016
Tel. : 26195042, 4021, 1106, 8101 Fax : 26164757
E-mail : ambience@ndf.vsnl.net.in
Wibsite : www.ambience-island.com

AMBIENCE LAGOON LUXURY APARTMENTS
So open, yet so close.

AMBIENCE ISLAND
An Integrated Township